A Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Govt. Oriental Manuscripts Library Chennai-5.

Volume 53
(R.No.: 9258 - 9708)

TNSDA
10216

General Editor
K. DAMODARAN M.A.,
Director,
Department of Archaeology,
Chennai-113.

Editor
Dr. S. RAJALAKSHMI M.A., Ph.d
Sanskrit Pandit,
G.O. M.L.
Chennai-5.

Govt. Oriental Manuscripts Library Publication No.446
Sanskrit Publication No: 119

A Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Govt. Oriental Manuscripts Library Chennai-5.

Volume 53
(R.No.: 9258 - 9708)

General Editor

K. DAMODARAN M.A.,
Director,
Department of Archaeology,
Chennai-113.

Editor

Dr. S. RAJALAKSHMI M.A., Ph.d
Sanskrit Pandit,
G.O. M.L.
Chennai-5.

Price Rs. 77 (© G.O.M.L. Chennai 1999)

राजकीयप्राच्यलिखितग्रन्थालयप्रसिद्धीकरणसङ्ख्या :446

संस्कृतप्रसिद्धीकरणसङ्ख्य - 119

राजकीयप्राच्यलिखितग्रन्थालयस्थ-
संस्कृतपाण्डुलिपिग्रन्थ विवरणसूची

TAMIL NADU STATE DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY
LIBRARY,
Acc No 10216
Date
MADRAS-28

भाग: 53

(R9258-R9708)

सम्पादिका

डॉ.एस्.राजलक्ष्मी, एम्.ए.पी.एच्.डि.

संस्कृतपण्डिट्

जि.ओ.एम्.एल्. चेन्नै --5

सामान्यसम्पादक:

कु. दामोदर:,एम्.ए.,

निर्देशक: पुरावस्तुगवेषणविभाग:

चेन्नै - 113

091
DIAM

मूल्य:रू 77.

G.O.M.L.
Chennai
1999

வடமொழிச்

சுவடி விவர அட்டவணை - தொகுதி 53

சென்னை அரசினர் கீழ்த்திசைச் சுவடிகள் நூலகம், வடமொழி ஆய்வுக்குப் பெரியதோர் மையமாகும்! இதற்கு இணையான வேறொரு நிறுவனத்தைச் சுட்டுவது இயலாததே!

வடமொழிக்கும் தமிழுக்கும் நெருங்கிய தொடர்பு உண்டு; இத்தொடர்பு இன்னும் சரிவர ஆயப்படவில்லை!

வடமொழி வேதங்களுக்கும் தமிழ் மண்ணுக்கும் எத்தனையோ தொடர்புகள் உள்ளன! வேதங்கள் கூறும் பண்பாடும் தமிழ்ப் பண்பாடும் ஒன்றே!

இவ்வகையில், பல ஆய்வுகள் நிகழ்த்த இது போன்ற நூல்கள் உதவும்.

இந்நூல் காட்டும் சுவடிகளில் தருமச் சாத்திரங்கள், சோதிடம், மருத்துவம் முதலிய பொருள்கள் உள்ளன.

- *முனைவர் சு. சௌந்தரபாண்டியன்*
எம்.ஏ. (தமிழ்), எம்.ஏ. (ஆங்.), பி.எட்., டிப்.வ.மொழி, பிஎச்.டி.,
காப்பாட்சியர்

A DIGNITY TO MANUSCRIPTS

G.O.M.L. is a rare institution full of rare manuscripts.

Present edition will itself speak for this.

Herein are available portrayal of Sanskrit manuscripts available at G.O.M.L. both in leaf and paper forms.

At this juncture a word - only a word - may be in uttered highlighting the close resemblance between ancient Tamil culture and concepts imbibed in Sanskrit Vedas.

So, books like this will be of more useful to pursue research in the above tenor.

- **Dr. S. SOUNDARAPANDIAN**
M.A. (Tamil), M.A. (Eng.), B.Ed., Dip. Sanskrit, Ph.D.,
Curator,
G.O.M.L.

Introduction

Govt. Oriental Manuscripts Library possess a good number of Sanskrit manuscripts, which are in palm leaf and paper. They have been acquired from various sources. These manuscripts are in different branches of Sanskrit literature and human knowledge.

The Descriptive Catalogue of Sanskrit manuscripts in this library has been issued in 52 volumes and is still in progress. The present edition, volume 53 contains, brief description of the manuscripts numbering from R 9258 to R 9708.

The following are a few notable works described in this volume.

1. नवरत्नप्रभा R 9507:

This is a work of enchanting hymns in praise of Lord Srinivasa, the Supreme Soul. The hymns are composed in alphabetical order.

2. हायनरत्न: R 9581:

This is an astrological work written by Balabhadra. This is a palm leaf copy of a printed edition of the work.

3. कविकल्पलतिका R 9679:

This is a rhetorical work of extreme rarity written by Mahadevabhaṭṭa.

4. लिङ्ग.दुर्गभेदनाटक: R 9698:

This is an allegorical drama composed in the model of Prabodha candroya and Sankalpasuryodaya. This is a very rare and valuable work, hither to unpublished.

- **Dr. S. RAJALAKSHMI** *M.A., Ph.D.,*
Sanskrit Pandit,
G.O.M.L.
Chennai-5

INDEX-1

अग्न्याधानप्रयोग:	R9632
अघोरमहिमस्तव:	9277
अतिरात्रप्रयोग:	9361
अद्वैतविवेक:	9297
अध्यात्मरामायणम्	9519
"	9579
"	9647
अध्यात्मरामायाणसङ्ग्रह:	9374
अध्यात्मरामायणसारसङ्ग्रह:	9317
अध्यात्मरामायणविवरणम्	9310
अनन्तव्रतकल्प:	9628
अपरप्रयोग:	9576
"	9414
अमरकोश:	9533
"	9504
अमृतबिन्दूवनिषद्व्याख्या	9279
अर्धमात्राप्रणवनामावली विवरणम्	9318
अवधूतगीता	9631
आत्मानात्मविवेक:	9523
आदित्यहृदयम्	9380
आनन्दकन्दम्	9275
आनन्दपञ्चकम्	9302
आपस्तम्वप्रयोगदीपिका	9589
आम्नायविद्या	9342
आम्नायस्तव:	9260
आयुर्वेदभाष्यम्	9292
आश्वलायनपूर्वप्रयोग:	9603
आश्वलायनसप्तहौत्रप्रयोग:	9330
आश्विनशस्त्रम्	9360
आसुरीमन्त्र:	9363
उक्थ्यशस्त्रम्	9331
उत्तमपात्रादिलक्षणम्	9285
उत्तरचम्पू:	9433
ऋक्संहिता	9371
"	9343
ऋग्वेदपरिशिष्ट.:	9567
एवयामरुतशस्त्रम्	9334
ऐतरेयोपनिषत्	9606
" भाष्यम्	9607
कन्यादानपद्धति:	9707
कर्पूरधेनुदानपद्धति:	9687
कर्मविपाक:	9538
कल्पतरुव्याख्या आभोग:	9320
कल्याणकारकम्	9251
कविकल्पलताटीका	9679
काञ्चीमाहात्म्यम्	9562
काठकम्	9546
कात्यायनतन्त्रप्रयोग:	9700
कात्यायनसूत्रस्नानविधि:	9669
कारणागम:	9617
कारिकावलि:	9584
कार्तिकमासदानादिमहिमा	9696
कालनिर्णय:	9386
"	9490
कालनिर्णयदीपिका	9660
कालप्रकाशिका	9443
कालामृतव्याख्या	9616
काशीखण्डटीका	9683
"	9638
काशीमुक्तिविवेक:	9502
कुम्भघोणमाहात्म्यम्	9278
कुलागमरहस्यचिन्तामणि:	9300
कूश्माण्डहोम:	9358

कृष्णकर्णामृतम्	9431
कृष्णधेनुदानपद्धति:	9691
कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्	9612
कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्	9615
कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्	9600
कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्	9595
" आरुणम्	9593
कृष्णाष्टकम्	9383
कृष्णाष्टोत्तरशतम्	9575
केनोपनिष्द्भाष्यविवरणम्	9583
कौनोपनिषत्	9272
क्रियाकैरवचन्द्रिका	9419
"	9420
गणपतिसहस्रनाम	9367
गणहोम:	9359
गायत्रीकवचम्	9324
गायत्रीजपराजम्	9325
गायत्रीहृदयम्	9323
"	9553
गीतगोविन्दम्	9542
गुह्योपनिषत्	9273
गृह्यप्रयोग:	9417
गोदास्तुती:	9427
गोसहस्रदानपद्धति:	9652
गौतमधर्मसूत्रम्	9441
गौरीपञ्चाङ्ग.म्	9528
ग्रहलाघवम्	9627
"	9566
ग्रावस्तुतशस्त्रम्	9366
चण्टीटीका	9667
चन्द्रिका	9668
चम्पूभारतम्	9435
चम्पूरामायणम्	9434
चातुर्मास्यप्रयोग:	9630
चिदम्बरतत्त्वनिर्णय:	9497
चिदम्बरपञ्चाक्षरमन्त्र:	9494
छन्द:	9348
छन्द:कौस्तुभ:	9682
छायादानपद्धति:	9693
जातककलानिधि:	9596
जातकराजीयम्	9599
जातिविवेक:	9677
जीवचक्रपूजाविधानम्	9268
जैमिनिसूत्रम्	9663
ज्यौतिर्निबन्धसङ्ग.ह:	9642
ज्यौतिषग्रन्थ:	9503
ज्यौतिषरत्नमाला	9614
ज्यौतिषविषय:	9604
ज्ञानवासिष्टव्याख्या	9313
ज्ञानप्रदीपिका	9590
तत्त्वज्ञानविवरणम्	9511
तत्त्वचिन्तामणिव्याख्या	9299
तरङ्ग.चन्द्रोदय:	9512
तर्कसुधा.	9513
तर्कसङ्ग.ह:	9620
तर्कसङ्ग.हदीपिका	9622
तारकवचम्	9656
तारावलि:	9305
तुलाकावेरिमाहात्म्यम्	9421
तैत्तिरीयोपनिषत्	9617
"	9527
" भाष्यम्	9618
तैत्तिरीयब्राह्मणम्	9543
"	9534
"	9548
तैत्तिरीयसंहिता	9544

तैत्तिरीयारुणम् 9587
त्रिपुरतापिनीपञ्चकम् 9271
त्रिपुरसुन्दरीस्तवराज: 9259
दक्षिणामूर्तिपूजाविधानम् 9293
दक्षिणामूर्तिहृदयम् 9303
दत्तत्रेयगोरक्षकसंवाद: 9499
दर्शपूर्णमासप्रयोग: 9525
दर्शपूर्णमासहौत्रप्रयोग: 9344
दर्शश्शान्ति 9673
दानपद्धति: 9692
दानसंक्षेपचनिद्रका 9657
दिनकरी 9426
दूतीयजनक्रम: 9267
देवीपूजा 9570
देवीमाहात्म्यम् 9354
देवीरहस्यम् 9651
देवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशत
नामवलि: 9261
देव्युपनिषत् 9270
द्वादशनामस्तोत्रम् 9381
धर्मशास्त्रम् 9442
" 9572
धर्मसिन्धुसार: 9678
नक्षत्रनामानि 9708
नन्दिकेशकारिका 9274
नमकचमकम् 9521
नवरत्नप्रभा 9507
नामलिङ्गानुशासनम् 9407-9410
नारायणकवचम् 9382
नारायणतारनामावलीव्याख्या 9319
नारायणशब्दविचार: 9377
नारायणस्तुति: 9532
नारीशौचकौमुदी 9694
निरुक्तम् 9349
निर्णयतत्त्वम् 9658
निर्णयसङ्ग्रह: 9646
निर्णयसिन्धु: 9514
नृसिंहचम्पू: 9675
नैमिशारण्यमाहत्म्यम् 9662
नैषधम्-व्याख्यायुतम् 9648
नैषधव्याख्या 9439
न्यायबोधिनी 9621
न्यायरत्नावली 9424
न्यायामृतम् 9644
पञ्चकोशव्याख्या 9296
पञ्चसंस्कार: 9429
पञ्चाक्षरी 9547
पञ्चाङ्गम् 9444-9489
" 9550
" 9537
परमाद्वैतानुकूलस्मृत्यादिसङ्ग्रह: 9508
परिशिष्टम् 9327
पवमानपरिशिष्टम् 9345
पवमानसूक्तम् 9423
पशुयाजुषहौत्रप्रयोग: 9365
पाञ्चरात्रागम: 9430
" 9541
पितृमेधविधि: 9422
" 9418
पूजाकल्प: 9594
पूर्वप्रयोग: 9412
" 9633
" 9554
पूर्वापरप्रयोग: 9415
पैतृमाधिकविधि: 9602
पौर्णमासेष्टिविचार: 9329

प्रकृतिसमुत्कीर्तनम्	9301
प्रणवनामावलीदीपिका	9311
प्रणवस्वरूपनिरूपणम्	9282
प्रत्यङ्गि.राकल्प:	9350
प्रभासुलोचनम्	9294
प्रयोगपद्धति:	9520
"	9526
प्रश्नविषय:	9314
प्रायश्चित्तमनोरमा	9654
प्रायश्चित्तोद्योत	9659
प्रैषाध्याय:	9369
फलगौरीव्रतकल्प:	9608
बह्वृचोपनिषत्	9269
बृहदारण्यकोपनिष्द्व्याख्या	9629
बोधायनापरम्	9552
बोधायनपूर्वप्रयोग:	9536
बोधायनश्राद्धम्	9548
ब्रह्मतारषोडशभूमिका	9506
ब्रह्ममेधसंस्कार:	9530
ब्रह्मसूत्रवृत्तिव्याख्या	9295
ब्राह्म णपञ्चिका	9340
भगवद्भक्तियोगाधिष्ठानम्	9280
भागवतम्	9403
"	9580
भागवतसङ्ग.ह:	9321
भागवताध्यात्मसारसङ्ग्रह नामवलि:	9307
भारद्वाजगृह्यम्	9558
भर्गवनाडिका	9625
भाषाकुसममञ्जरी	9432
भाष्यगाम्भीर्यसूचिका	9289
भिदातमोमार्तण्डशतकम्	9505
भूमिदानरहस्यम्	9695
मण्डलपूजाविधि:	9704
मदनरत्नम्	9643
मधुरामाहात्म्यम्	9306
मन्त्रमहोदधि:	9649
मन्युसूक्तविधानम्	9362
महान्यास:	9586,9610
महाभारतम्	9402
महालक्ष्मीमन्त्र:	9495
महालिङ्ग.ार्चनक्रम:	9509
महावाक्यविवरणव्याख्या	9298
महावाक्यरत्नावली	9312
महाविद्याकल्पकौस्तुभ:	9518
महिमहे	9341
माघमाहात्म्यम्	9501
मिश्रितमाहात्म्यम्	9703
मुकुन्दमाला	9428
मुक्तावलि:	9585
मुक्तिशतकविवरणम्	9498
मृत्युसूक्तम्	9559
मैत्रावरुणप्रयोग:	9577
मोहनाकर्षणभैरवमन्त्र:	9356
यजुर्वेदमन्त्रभाष्यम्	9640
योगसार:	9653
योगिनीजातकम्	9598
रघुवंशम्	9437
रत्नमाला	9571
रसकल्प:	9287
रसराजलक्ष्मी:	9650
राधाविनोदकाव्यटीका	9681
रामकवच:	9635
रामचन्द्रस्तोत्रम्	9411(a)
रामदुर्गास्तोत्रमालामन्त्र:	9357
रामयन्त्रमाननिर्णय:	9309

रामलामृतम् 9582
रामायणम् 9626
" 9560,9561
" 9555,9500
" 9387,9388,9389
रामायणविशेषार्थ 9384
रामायणव्याख्या 9321-9395
रामोत्तरतापिनीटीका 9276
रुद्रभाष्यम् 9531,9539
ललितात्रिशती 9564
ललितापूजाविधि: 9565
ललितासहस्रनामस्तोत्रम् 9563,9368
लिङ्ग.दुर्गभेदनाटकम् 9698
वकुलोपाख्यानम् 9672
वटुकभैरवकल्प: 9706
वरीवस्यारहस्यम् 9352
वरुणमण्डलपूजा 9666
वसन्तोत्सव: 9671
वाग्भटमण्डनम् 9375
वाञ्छानाथीयम् 9597
वामनकारिका 9390
वालखिल्यशस्त्रम् 9332
विदशासूक्ष्मदशाफलानि 9578
विद्योपास्तिमहानिधि: 9641
विधवावपनम् 9405
विधिनिर्णय: 9425
विवेकसार: 9286
विश्वेश्वरस्मृति: 9315,9322
विषयतावाद: 9516
विष्णुसहस्रनामावलि: 9549
" 9556
विष्णुस्तोत्रम् 9686
वृषभगिरिमाहात्म्यम् 9385
वृषाकपिशस्त्रम् 9333
वेङ्क.टेशप्रहसनम् 9378
वेणीसंहार: 9440
वेदनिघण्टु: 9338
वेदभाष्यम् 9639
वेदशिक्षा 9347
वेदसारशिवसहस्रनामस्तोत्रम् 9351
वेदान्तकल्पलतिका 9290
वेदान्तपरिभाषा 9619
वेदान्ताचार्यविजयचम्पू 9436
वैश्यवंशसुधाकर: 9326
वैष्णवप्रशंसा 9404
व्रतकल्प: 9557,9551,9535
शक्तिसङ्ग.मतन्त्र: 9262
शक्तिसूत्रम् 9264
शतचण्डीविधानम् 9705
शत्रुसंहारदुर्गापरमेश्वरीमन्त्र: 9496
शनैश्वरकवचम् 9355
शनैश्वरस्तोत्रम् 9636
शान्तिद्योतिनी 9655
शान्तिध्यानम् 9702
शास्तामन्त्र: 9492
शास्त्रदीपिकाव्याख्या 9288
शितिकण्ठीयम् 9515
शिवपूजाविधानम् 9623
शिवरहस्यम् 9372
शिवस्तोत्रम् 9281
शिवानन्दलहरी 9541
शिशुपालवधम् 9438
शुकाष्टकम् 9685
शुद्धिचन्द्रिका 9529
शुल्बप्रदीपिका 9336
शूलिनीदुर्गाकवचम् 9353

श्राद्धप्रयोगः 9416,9568
श्रीरामसार्वात्म्यम् 9316
श्रीरङ्ग.माहात्म्यम् 9413
श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका 9265
श्रौतप्रयोगः 9637,9634,9613,
9591,9609,9605,9601,9283,
9569,9573,9574
श्रौतसूत्रषट्कद्वयम् 9339
षोडशतरङ्ग.मूलम् 9379
षोडशिनित्यातन्त्रः 9684
षोडशिशास्त्रम् 9335
सदाचारदर्पणम् 9670
सद्वैद्यजीवनम् 9674
सन्ध्याभाष्यम् 9406,9676
सप्तसंस्था 9337
समासचक्रम् 9346
सम्मेलनकवचम् 9491
सर्वप्रस्थहौत्रम् 9364
सर्वप्रायश्चित्तः 9582
सर्वसिद्धान्तसारसङ्ग्रहः 9624
सामवेदः 9396-9401
सारतरनिबनधः 9665
सारसमुच्चयः 9680
सारस्वतव्याकरणम् 9697
सारस्वतसिद्धान्तचन्द्रिका 9661
सिद्धान्तचन्द्रिका 9645
सुन्दरबाहुस्तवः 9411
सुब्रह्मण्यमन्त्रः 9493
सुभगोदयदर्पणम् 9284
सुमुखीपूजाविधानम् 9701
सुवर्णधेनुदानपद्धतिः 9688,9689,
9690
सूर्यद्धिान्तः 9517
सृष्टिप्रणवनामावलिः 9308
सृष्ट्यादिप्रणवनामावलिव्याख्या 9376
सोमहौत्रम् 9588
सौन्दर्यलहरी 9370
सौभाग्यकल्पद्रुमः 9263
सौभाग्यचिन्तामणिः 9258
सौरसूक्तम् 9328
संविन्माहात्म्यम् 9266
स्मार्तप्रयोगः 9522
स्वरमञ्जरीपरिभाषा 9510
स्वरूपनिरूपणम् 9664
हरिभक्तिसुधोदयः 9373
हायनरत्नम् 9581

INDEX - 2

अनन्तव्रतकल्प 9557(f)
अन्नपूर्णेश्वर्यष्टकम् 9553(z)
अमासोमवारव्रतोद्यापनम् 9557(h)
अश्वत्थव्रतकल्पः 9557(l)
आदित्यहृदयम् 9553(d)
आसुरीमन्त्रः 9518(b)
इतिहासोपनिषत् 9554(a)
इन्द्राक्षीकवचम् 9595(b)
इन्द्राक्षीस्तोत्रम् 9595(a)
9553(m)
उत्तरगीता 9553(a-9)
9595(d)
उपदेशसूत्रम् 9571(b)
ऋषिपञ्चमीव्रतकल्पः 9557(g)
कामाक्षीव्रतकल्पः 9551(f)
कालभैरवाष्टकम् 9553(y)
कृष्णजयन्तीव्रतकल्पः 9551(g)
कृष्णयजुर्वेदारुणम् 9521(a)
कृष्णयजुर्वेदारण्यम् 9546(b)
कृष्णयजुर्वेदकाठकम् 9546(a)
कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलि 9556(c)
क्षयश्राद्धम् 9652(a)
गयाषोडशमन्त्रः 9553(a-6)
गरुडकवचः 9553(u)
गरुडपञ्चाक्षरीमन्त्रः 9553(s)
गरुडमालामन्त्रः 9553(v)
गरुडविद्यमनत्रः 9595(c)
गायत्रीकवचः 9553(a)
गायत्रीमालामन्त्र.2 9553(c)
गायत्रीरामायणम् 9553(a-7)
गीतगोविन्दम् 9553(a)
जातकजीवनम् 9571(a)
ज्ञानवासिष्ठम् 9568(a)
तर्कसङ्ग्रहवाक्यनिरुक्तिः 9622(a)
त्रिपुरसुन्दरीनामावलिः 9515(c)
त्रिपुरसुन्दरीपूजाविधिः 9535(b)
त्रिवेणीदशकम् 9553(a-2)
द्वादशमञ्जरिकास्तोत्रम् 9553(w)
धात्रीकल्पः 9551(b)
नदीस्तोत्रम् 9553(e)
नमकचमकम् 9553(h)
नमश्शिवायपञ्चकम् 9610(b)
नवग्रहाराधनविधिः 9594(b)
नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः 9554(c)
9556(b)
9549(c)
पञ्चकोशमाहात्म्यम् 9553(a-3)
पञ्चमुखहनूमन्मालामन्त्र. 9553(p)
पातञ्जलयोगसूत्रम् 9568(c)
पुरुषसूक्तम् 9553(i)
पुष्यार्कविधिः 9567(a)
प्रदोषव्रतोद्यापनविधिः 9535(a)
प्रयोगः 9554(b)
प्रायश्चित्तकारिका 9634(a)
" चन्द्रिका 9634(b)
बालरामायणम् 9553(g)
ब्रह्मयज्ञप्रयोगः 9553(a-5)
भगवद्गीता 9553(a-8)
भूसूक्तम् 9554(f)
मणिकर्णिकाष्टकम् 9553(a-1)
महाविद्यावनदुर्गामन्त्रः 9518(a)
रामकवचः 9553(f)
रामनवमीव्रतकल्पः 9551(a)
राममन्त्राः 9635(d)

रामसहस्रनामावलि:	9575(f)
रामस्तव:	9635(e)
रामहृदयम्	9308(a)
रामाष्टोत्तरशतनामावलि:	9635(b)
	9575(a)
" स्तोत्रम्	9635(c)
रुद्रत्रिशतीनामावलि:	9594(a)
रुद्रप्रश्नभाष्यम्	9539(a)
लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि:	9549(a)
	9549(b)
	9554(d)
	9556(a)
ललितात्रिशतीनामावलि:	9594(c)
लिङ्ग.धारणविषय:	9568(b)
लोष्टचयनम्	9530(a)
वरलक्ष्मीव्रतकल्प:	9557(d)
विनायकव्रतकल्प:	9557(a)
	9551(d)
विनायकाष्टोत्तरशतनामावलि:	9556(d)
विश्वेश्वराष्टकम्	9553(x)
विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्	9553(f)
" नामावलि:	9575(d)
शत्रुसंहारदेवीकवच:	9553(l)
शारीरकोपनिषत्	9523(a)
शिवकवच:	9610(a)
	9553(n)
शिवरात्रिव्रतकल्प:	9551(e)
	9557(c)
शिवषडक्षरीमन्त्र:	9635(f)
शिवाष्टोत्तरशतनामावलि:	9575(b)
	9553(a-4)
शिवसहस्रनामावलि:	9575(e)
	9575(g)
श्रीसूक्तम्	9554(e)
सरस्वतीकल्प:	9557(b)
सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलि:	9556(e)
सुब्रह्मण्यकवच:	9553(o)
सूर्यनमस्कारमन्त्र:	9547(a)
सूर्यनमस्कारविधि:	9628(a)
स्वर्णगौरीव्रतकल्प:	9551(c)
हनूमत्कवच:	9553(q)
हनूमन्मन्त्र:	9635(a)
हनूमन्मालामन्त्र:	9553(e)
हनूमत्स्तोत्रम्	9553(k)

R.No.9258

Paper; 25 x16cms; foll 281' lines 22; Devanagari; good; 10000 letters

सौभाग्यचिन्तामणि:

SOUBHAGYA CINTAMANIH

A Tantric work.

Complete. Contains first Khanda

Beginning

अयोया नाम नगरी पुण्या लोकेषु विश्रुता
आदिभूता समस्तानां पुराणामस्ति पावनी ।।
यत्र नित्या भगवती देवी त्रिपुरसुन्दरी
सान्निध्यं कुरुते नित्यं सरयूतीरमण्डपे ।।

Colophon

इत्युमामहेश्वरसंवादे सौभाग्यचिन्तामणौ त्रिपुरातन्त्रे पूर्वखण्डे प्रथम: पटल: समाप्त: ।।

End.

तेजस्विनो यजस्वन्तर्लक्ष्मीवन्तश्च धार्मिका: ।
सुखिनो नित्यसम्पन्ना: मुदिताश्शिववर्चस: ।।
इह भुक्त्वाखिलान्भोगानन्ते मोक्षमवाप्नुयु: ।।
इति दुर्वाससंहितायामुमामहेश्वरसंवादे सर्वतन्त्रोत्तम-
सौभग्यचिन्तामणौ पूर्वखण्डे महाभिषेचनविधिर्नाम
द्विपञ्चाश: पटल:।।

R.9259 - R 9261 one bundle

R.No.9259

Paper; 17x11cms; foll 19; lines 13; Grantha; good; 2470 letters.

त्रिपुरास्तवराज:

TRIPURASTAVARAJAH

Complete

Ptd.

R.No. 9260

foll 8; (20a - 28a) ; 1040 letters

आम्नायस्तवः

AMNAYASTAVAH

Complete

Begins on 20a of Ms No.9259.

Ptd.

R.9261

Foll 28; 28a-56b; 3200 letters

देवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशतदिव्यनामस्तोत्रम्

DEVI VAIBHAVASCARYASTOTTARASTADIVYA NAMASTOTRAM

Complete

Begins 28a of Ms. No.R9259

Ptd.,

R.No.9262

Paper; 17x11cms; foll 25; lines 17; Grantha, good; 4750 letters.

शक्तिसङ्ग.मतन्त्रम्

SAKTISANGAMATANTRAM

Atreatise on Saktism

Beginning:

पूर्व संसूचितं ते यत् त्रिभेदं कथ्यते शृणु ।
गोपनीयं महेशानि स्वयोनिरपरा यथा ।।
श्रीकाल्युपासका ये च तत्कुलं परिकीर्तितम्।
तेषां समूहो देवेशि कूलं सङ्कीर्तितं मया ।।
कालिविद्योपासकैस्तु कुलपूजाविधौ शिवे ।
गन्तव्यं यत्नतो देवि नान्यत्र प्रव्रजेत्क्वचित् ।।

Colophon

इति शक्तिसङ्गमतन्त्रे उत्तरकेरले तृतीयपटलान्तर्गत-किञ्चिच्छ्लोकसङ्ग्रहः।

End:

केरलश्चैव काश्मीरौ गौडचैतन्यगो शिवे ।
प्रत्येकं तु निगदितं सम्प्रदायचतुष्ककम् ।।
आज्ञा नाम योगपट्टः क्रमेण दापयेद्गुरुः।
सम्प्रदायविहीनानां कुलशास्त्रप्रयोजनान् ।।
सर्वगर्हित इत्युक्तः सैव बाह्यः प्रकीर्तितः ।
वेदबाह्यो यथा प्रोक्तस्तथैवायं प्रकीर्तितः ।।
इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः

R No. 9263 - 9273 one bundle

R No. 9263

Paper; 20x17 cms; foll 105; lines 14; Devanagari; good; 250 letters.

सौभाग्यकल्पद्रुमः

SAUBHAGYA KALPADRUMAH
by Madhavananda
Complete.

R.No. 9264

Foll 70; 1750 letters.

शक्तिसूत्रम् - सभाष्यम्

SAKTISUTRAM - with COMMENTARY
Complete
Begins on 106a of R.9263.

RNo.9265

Foll 52; 13080 letters

श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका

SRIVIDYARATNA SUTRADIPIKA
Complete
Begins on177a of Ms.R.9263.

R.No.9266

Foll 17; 3580 letters

संविन्माहात्म्यम्

SAMVINMAHATMYAM
Complete
Begins 230a of R.9263

R.no.9267

Foll 22; 5500 letters

दूतीयजनक्रमः

DUTIYAJANAKRAMAH
Complete
Begins 248 a of R. 9263

R.No. 9268

Foll 2; 500 letters;

जीवजक्रपूजाविधानम्

JIVACAKRAPUJA VIDHANAM
Complete
Begins 270a of R.9263.

R.No. 9269

Foll 13; 3250 letters

बह्वृचोपनिषत्

BAHVRCOPANISAT
Complete
Begins on 273a of R.9263.

R.9270

Foll 12; 3000 letters

देव्युपनिषत्

DEVYUPANISAT
Complete
Begins 287a R.9263.

R.No.9271

Foll 86; 17000 letters
त्रिपुरातापिनीपञ्चकम्
TRIPURATAPINI PANCAKAM
Complete
Begins on 300a of R.9263

R.No. 9272

KAULOPANISAT
कौलोपनिषत्
Complete
Begins on 369 a of R 9263

R.No. 9273

Foll 50' 12500 letters.
गुह्योपनिषत्
GUHYOPANISAT
Complete
Begins on 387a of R.9263.

R.No. 9274

Tanscribed from a Ms. of Serfoji's Saraswathi Mahal Library, Tanjore.
Paper; 22.5 x 17 cms. Foll 11; lines 15; Devanagari; extent 2445 letters
नन्दिकेशकाशिका
NANDIKESA KASIKA
Complete
Ptd.

R.N.9275 - R.No.9277 one bundle

R.No. 9275

Transcribed from the Ms.of Must Iruvinti Venkatasubbiah of Kurukonda

Paper; 34x21 cms; foll 4; lines 26; Devanagari ,;extent 624 letters

आनन्दकन्दम्

ANANDAKANDA

R.No. 9276

Transcribed in the year 1950-51 from Ms. of Kanci Kamakoti Mutt, Kumbhakonam by Sri.P.Bhasyam, Egmore, Madras

Foll 19; 11800 letters

श्रीरामोत्तरतापनीयटीका

SRI RAMOTTARATAPANIYA TIKA

Complete

Ptd.

Begins on 5a of R.9276.

RNo.9277

Transcribed in 1950-51 from (KM 51)a Ms. of Kanci Kamakoti Mut, Kumbhakonam by Sri R.Ramaswamy Sastri, Mylapore, Madras.

Foll 13; 4800 letters

अघोरमहिम्नस्तोत्रम्

AGHORAMAHIMNASTOTATRAM

Complete

Begins on 27a of R9275

Ptd.,

R. 9278

Transcribed in 1950-51 from a Ms. of Kanci Kamakoti Mutt, Kumbakonam by Sri V.Ramaswami Sastry, Mylapore,Madras.

Paper; 32.5x21 cms; Foll 68; lines 26; Devanagari; extent 2800 letters

कुम्भघोणमाहात्म्यम्

KUMBHAGHOṆAMĀHĀTMYAM

Complete
Ptd.

RNo.9279

Transcribed in 1950-51 from a Ms. of Kanci Komakoti Mut,Kumbakonam, by Sri V.Ramaswami Sastri, Mylapore, Madras.
Paper; 31x21cms; Foll 27; lines 26; Devanagari; extent 10,000 letters

अमृतबिन्दूपनिषद्व्याख्यानम्

AMṚTABINDŪPANIṢADVYĀKHYĀNAM

Complete
Ptd.,

RNo.9280

Transcribed in 1950-51 from a Ms. o f Kanci Kamakoti Mutt, Kumbhakonam, by Sri T.A.K. Venkatachary, Triplicane, Madras.

Paper; 31x21 cms; Foll 273; lines 26; Devanagari extent 186470 letters.

भगवद्भक्तियोगाधिष्टानम्

BHAGAVADBHAKTI YOGADHIṢṬHĀNAM

A treatise of Vaisnavism in humdred chapters.
Complete in hundred Abhyudayas. 102 to 106 chapters are not found.

Beginning

नमः परमकल्याणमूर्तये गुरवे तमः ।

नमः पराशरादिभ्यो मुनिभ्योऽस्तु सदा नमः ।।

मङ्गलं विघ्नराजाय गणाधिपतिये नमः।

शङ्करं यस्य पितरं शङ्करी मातरं जगुः।।

....

भक्तिलक्षणमादौ तु दशाभ्युदयतोच्यते ।

दशाभ्युदयतः पञ्चात् कर्मलक्षणमुच्यते ।।

End.

विश्वेषु विण्णुर्विपुलेषु विष्णु-
र्देशेषु विष्णुः स्वतलेषु विष्णुः ।
पश्चा..... भिरम्यरूपो
नारायणो वेङ्क.टगो विभाति ।।

Colophon

इति भगवद्भक्तियोगाधिष्टानपुराणे चतु:षष्टितमाभ्युदय:।

(RNo.9281 - RNo.9284 one Bundle)

R.No.9281

Transcribed in1950-51 froma ms. of Kanci Kamakoti Mutt, Kumbakonam, by Sri R.Sampath.

Paper; 31x21cms; Foll 30; Lines 26; Devanagari; 15600 letters.

शिवस्तोत्रम्

SIVASTOTRAM

Incomplete

RNo.9282

Transcribed in 1950-51 from a ms. of Perumana by SRi C.N.Subrhamanya Sastry, Triplicane, Madras

प्रणवस्वरूपनिरूपणम्

PRANAVASVARUPA NIRUPANAM

Describes the indentity of Pranava in two pages followed by Mantraswarupa vyakhya in Malayalam language

Begins on 16a of R.9282; 16a-21a; 2600 letters

Ptd.

RNo.9283

Transcribed in 1950-51 from a Ms. of Perumana by Sri C.N.Subramanya Sastry, Triplicane, Madras.

Foll 52; 20280 letters

श्रौतप्रयोग:

SRAUTAPRAYOGAH

Contains the I chapter

Begins on 21a of RNo. 9281.

R.No.9284

Restored in the year 1950-51 from the ms. D.No.5754 by Sri P.Bhasyam, Egmore, Madras.

Foll 33; 21450 letters

सुभगोदयदर्पणम्

SUBHAGODAYADARPANAM'

A work on Saktism by Srinivasayogisvara

Complete

Same work as described under D.5754.

R.No.9285

Restored from D5160 (Palms leaf) by K.Srinivasacarya in 1950-51.

Paper; 34x21 cms; Foll 36; lines 26; Devanagari and Kannada; 2000 letters

उत्तमपात्रादिलक्षणम् (कर्णाटटीकासहितम्)

UTTAMAPATRADILAKSNAM with Kanarese meaning.

For details see D5160

Incomplete.

R.No.9286

Restored in 1950-51 from the Ms.D4725 by Sri C.N.Subramanya Sastri, Triplicane, Madras.

Paper; 34x21 cms; Foll 54; lines 26; Devanagari; 28080 letters

विवेकसारः

VIVEKASARAH

For details see D4725

R.No.9287

Transfered in 1950-51 from a Ms. of Iruvinti Venkatasubbiah, Kurnkonda, Atmakur Post, Nandikotikur Taluk, Kurnool Dist. by Sri P.Bhasyam, Cindadripet, Madras.

Paper; 34x21cms; 29 pages, 25lines; Devanagari ; 11600 letters.

रसकल्प:

RASAKALPAH

A work on medical science in which the properties of mercury and other precious stones and their medicinal values are described.

Beginning

नमामि धन्वन्तरिमादिदेवं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम् ।
लोके जरारुग्भयमृत्युनाशं दातारमीशं विविधौषधीशम् ।।
अस्ति नीहारनिलये महानुत्तरदिङ्मखे ।
सिद्धचारणगन्धर्वयक्षकिन्नरसेवितै: ।।
रम्योद्यानवनाकीर्णपुष्पवाटिसुशोभितम् ।
निर्झरोर्झरकासारकादम्बकलहंसकै:।।

End

कफरीशुद्धि : -
कफरीफलमात्रं च चूर्णं कृत्वा विमर्दयेत्।
वरमूत्रे सद्मयामं डोलाययन्त्रे पचेत्तत: ।।
गोमूत्रेण द्वयामं च पाचयेच्छुद्धिमाप्नुयात् ।
अथवा घृतसंमिश्रं पाचये-त्त्वरितश्शुचि:।
ताडयेद्विमलाभिन्नं सूक्ष्मवक्त्रेण बन्धनम् ।
अजामूत्रे कांचिकेन रंभातो मृथकृपृथक् ।
डोलायन्त्रे चतुर्या....

R.No.9288 (Vol. I)

Transcribed in 1950-51 from a Ms. of Adyar library by Sri.S.Rajagopalachari,; Mylapore, Madras.

Paper; 34x21 cms; 190 pages; lines 26; Devanagari ; 98800 letters. (Bound in 2 Volumes)

शास्त्रदीपिकाव्याख्या – प्रभामण्डलम्

SASTRADIPIKAVYAKHYA - PRABHAMANDALAM

Incomplete

Ptd.

Continued in the next number

R.No. 9288 (Vol.II)

Paper 34x21cms; 173 pages; lines 24; Devanagari;

शास्त्रदीपिकाव्याख्या – प्रभामण्डलम् (Vol.II)

ŚĀSTRADIPIKĀVYĀKHYĀ - PRABHĀMAṆDALAM

Complete

Continuation of the previous number.

R.No.9289

Presented by Sree Sree Seee Brahmanandendra Saraswathi Swamikal, Maṭhādhipati, Sri Upaniṣadbrahmendra Mutt and Agastyasramam. Putheri Street, Big Conjeevaram.

Paper 20x16cms; 103 pages; lines 15; Devanagari; 30000 letters

भाष्यगाम्भीर्यसूचिका

BHĀṢYAGĀMBHĪRYASŪCIKĀ

A commentary on Sankara bhasya by Sundarasastri

Complete

Ptd.

R.No.9290

Presented by Sree Sree Sree Brahmanandendra Saraswato Swamikal, Maṭhādhipati, Sri Upanishadbrahmendra Mutt and Agastyasramam, Putheri Street, Big Conjeevaram.

Paper 20x16 cms; 131 pages; lines 15; Devanagari; 20500 letters.

वेदान्तकल्पलतिका

VEDĀNTAKALPALATIKĀ

Contains 1 stabaka only

Same work as described under D15363, by Madhusudunasaraswathi.

R.No.9291 (Vol.I)

Transcribed in 1950-51 from a ms of Sri A.G.Menon, 43, Bazar Road, Mylapore, Madras by the owner.

Paper 34 x21 cms; 89 pages; lines25; Devanagari; 26700 letters; bound in two volumes.

कल्याणकारकम्

KALYĀṆAKĀRAKAM

A work on Ayurveda by Ugradityacarya.

R.No.9291 (Vol.II)

Transcribed in te year 1950-51 by Sri S.Rajagopalachary from Ms. of A.Gopalamenon.

Paper 32 x 25cms.; 165 pages; lines 25; Devanagari; 37500 letters.

कल्याणकारकम्

KALYĀṆAKĀRAKAM

Complete,
Continuation of previous number

R.No.9292 (Vol.I)

Transcribed in 1950-51 from a Ms. of Sri A.G.Menon, 43, Bazar Road, Mylapore, Madras by the owner.

Paper 34x21 cms; Pages 122; lines 26; Devanagari; good, extent 63500 letters.

आयुर्वेदभाष्यम् - योगानन्दनाथविरचितम्

ĀYURVEDA BHĀṢYAM - YOGĀNANDANĀTHA

A treatise on Ayurveda; to be continued in the next volume.

R.No.9292 (Vol.II)

Paper 25x32 cms; pages 132; lines 25; Devanagari

आयुर्वेदभाष्यम्

ĀYURVEDABHĀṢYAM

Complete

(R.No. 9293, RNo.9294 one bundle)

Transcribed from a Ms of Kumbhakonam Mutt in the year 1950-51 by Sri Rama Swami.

Paper 34x51 cms. pages 12 line; 25in a page; Devanagari; good; 3300 letters

दक्षिणामूर्तिपूजाविधानम्

DAKṢIṆĀMŪRTI PŪJĀVIDHĀNAM

Complete

R.No. 9294

Transcribed froma Ms of Kumbhakonam Mutt in the year 1950-51 by Sri G.Subramanyam

Pages 209; 85600 letters;

प्रभासुलोचनम्

PRABHĀSULOCANAM

A work on Advaitavedanta

Incomplete

Begins on 13a of R 9294.

R.No.9295

Paper 35 x21.5 cms; pages 314; lines 26; Devanagari' 1,42000 letters.

ब्रह्मसूत्रवृत्तिव्याख्या - वेदान्तरत्नम्

BRAHMASŪTRAVṚTTIVYĀKHYĀ - VEDANTARATNAM

Transcribed in the year 1950-51 from a ms.(K.M 250) of Kanci Kamakoti Mutt, Kumbhakonam, by Sri Narayanaswami Sastri, Mylapore.

A work on Advaita Vedanta by Vaidyanatha

Incomplete

RNo.9296 (9296-9298 one bundle)

Transcribed in 1950-51 froma Ms. of Kumbhakonam Mutt, by G.Haradattan.

Paper 32x25.5 cms; pages 19; lines 24; Devanagari; 7220 letters.

पञ्चकोशव्याख्या

PAÑCAKOŚAVYĀKHYĀ

A commentary on Taittiriyopaniṣad.

R.No.9297

Pages 21, 9450 letters

अद्वैतविवेकः

ADVAITAVIVEKAḤ

A treatise on Advaita philosophy by Ramakrsna

Begins on 11 a of R 9296. 11a -21b

R.No.9298

Pages 4

महावाक्यविवेकव्याख्या

MAHĀVĀKYAVIVEKAVYĀKHYĀ

Complete

Begins on 22a

R.No.9299 (bound in 2 volumes)

Vol. I

Transcribed from a ms.of Kanci Kamakoti Mutt, year 1950-51, by Sri R.Sampathkumar.

Paper 33x20.5 cms.; 36 pages lines 25 in a page; 25920 letters

तत्वचिन्तामणिव्याख्या

TATTVACINTAMANIVYAKHYA.

R.No. 9299 (Vol.II)

Transcribed in 1950-51 by R. SampathKumaran from Kāñci Kamakoti Mutt Manuscript.

Paper; 26x33cms; pages 95; lines 25; 59,375 letters.

तत्वचिन्तामणिव्याख्या

TATTVACINTĀMAṆIVYĀKHYĀ

Incomplete

Page 96-108. Mimāsāviṣyaḥ

R.No. 9300

Transcribed in 1950-51 froma ms of Kāñci Kamakoti Mutt.

Paper; 33x25cms; pages 207; lines 25; Devanagari; 10,500 letters.

कुलागमरहस्यचिन्तामणि

KULĀGAMARAHASYACINTĀMAṆIḤ

Incomplete. Many folios are missing. This bundle also contains several other works inbetween the main work. See the scribe's note in page no.207.

R.No. 9301

Restored from D5170 in the year 1950-51 by K. Srinavasacharya.

Paper; 34x21cms; pages 67; lines 26; Devanāgari and Kannada; 34,840 letters.

प्रकृतिसमुत्कीर्तनम्
PRAKṚTISAMUTKĪRTANAM
See D5170 for details

(R.No. 9302 - R.No. 9305) one bundle.

R.No. 9302

Transcribed in the year 1950-51 from a ms. of Kanci Kamakoti Mutt, Kumbhakonam, Tanjore, by Sri. G. Haradatta Srauti, Mylapore.

Paper; 25x31cms; 9 pages; lines 26; Devanagari; 4680 letters.

आनन्दपञ्चकम्
ĀNANDAPAÑCAKAM

A commentary on Pañcadāsī a Mīmāmsa work.

Incomplete.

R.No. 9303

3 pages; 520 letters

दक्षिणामूर्तिहृदयम्
DAKṢIṆĀMURTIHṚDAYAM

10a - 12a.

Complete

R.No. 9304

2 pages.

सदाचारप्रकरणम्
SADĀCĀRAPRAKARAṆAM

12b - 14b.

Complete.

R.No. 9305

3 pages.

तारावली
TĀRĀVALĪ

15a - 18b.

Complete.

R.No. 9306

Transcribed in 1950-81 from a ms of Rameswaram Devastanam Patasala, Madura by Sri. P.V. Ramaswami Sastrigal of Periyakulam Madura Dt.

Paper; 26x32cms; 26 pages; lines 24; Devanāgari; 10,000 letters.

मधुरामाहात्म्यम्

MADHURĀMĀHĀTMYAM

A portion taken from Brahmāṇḍapurāṇa, wherein the temple of Madura of Pandyadesa is described.

(R.No. 9307 and R.No. 9308 one bundle)

R.No. 9307

Transcribed in the year 1950-51 from the Mss. of Upaniṣad brahmandra Mutt, Big Canjeevaram by Sri. S. Venkatasubramanya sarma of Mullandram.

Paper; 26x32cms; 2 pages; lines 24; Devanagari; 768 letters.

भागवताध्यात्मसारसङ्ग्रहनामावली

BHĀGAVATĀDHYĀTMASĀRASAṄGRAHANĀMĀVALĪ

65 Namavali's in the form of philosophical terms

Complete.

Beginning.

केवलचिन्मात्राखण्डैकरसनिर्विकल्पकरूपाय,

शुभाशुभादिसर्वारम्भहीनचेतस्यहं विभूतये,

End

अनल्पभावाय, त्रिपाद्विभूतिमहानारायणनिष्कलरामचन्द्रभावाय

श्रीमद्भागवताध्यात्मसारसङ्ग्रहनामावली समाप्ता ।

R.No. 9308

40 pages;

सृष्टिप्रणवनामावली

SṚṢṬIPRAṆAVANĀMĀVALĪ

Begins on 2b. (2b - 41a)

Complete in 16 Khaṇḍas

Page 41b contains श्रीरामहृदयम् which is numbered as 9308 (a).

R.No. 9308 (a)

3 pages

रामहृदयम्

RĀMAHṚDAYAM

Begins on 41b.

Complete

R.No. 9309

Transcribed from a ms. of Upaniṣadbrahmandra Mutt, Canjeevaram by M.V. Venkatasubramanya Sarma of Mullandrum.

Paper; 33x25cms; 24 pages; lines 24; Devanāgari, 2400 letters.

रामयन्त्रमाननिर्णयः

RĀMAYANTRAMĀNANIRṆAYAḤ

Otherwise known as रामयन्त्रपूजाविधिः

Complete.

R.No. 9310

Transcribed from a Ms. of Upaniṣadbrahmendra Mutt; Canjeevaram, in 1950-51 by T.A.K. Vankatachary.

Paper; 25x32cms; 246 pages; lines 24; Devanāgari; 1,00,368 letters.

अध्यात्मरामायणम्-विवरणसाहितम्

ADHYĀTMARĀMĀYAṆAM - WITH VIVARAṆA

Complete.

R.No. 9311

Transcribed in the year 1950-51 from a ms. of Upaniṣadbramendra Mutt, Big Canjeevaram, by K. Viswanathan, Mylapore.

Paper; 31 x 25cms; 41 pages; 24 lines; Devanagari; 29,520 letters.

प्रणवनामावलीदीपिका

PRAṆAVANĀMĀVALĪDĪPIKĀ

Commentary on Praṇavānāmāvalī in poetical form by Ramachandrayogin, disciple of Vasudevendra.

Complete.

Beginning.

ओम् । श्रीमाद्विश्वाधिष्ठानपरमहंससद्गुरुरामचन्द्राय नमः ।
स्वाविद्यापदतामिश्रग्रासमार्ताण्डमूर्तये ।
आर्षप्रणवसंवेद्यत्रिपाद्माय ते नमः।।
देशिकत्रैपदं नत्वा कैवल्यानन्द ....
......यार्षताराथः सङ्गहेण विविच्यते
सप्तमात्रात्मकं तारमार्षप्रणव उच्चते ।
मात्रा अकाशदयः स्युस्सप्त तासामधीश्वराः ।।

End

आर्षताराथमश्विलं ज्ञात्वा कैवल्यमश्नुते
श्रीवासुदेवेन्द्रशिष्यरामचन्द्रेन्द्रयोगिना
आर्षप्रणववाक्यार्थो यथामति निरूपितः
ग्रन्थो द्विषष्टिसहितशतानां सप्तकं स्मृतः ।।

R.No. 9312

Transcribed in the year 1950-51 from ms. of Upaniṣadbramendra Mutt, Big Canjeevaram by the K.Viswanathan.

Paper; 32x25cms; 86 pages; lines 24 in a page; Devanagari; 25800 letters.

महावाक्यरत्नावलिप्रभा

MAHĀVĀKYARATNĀVALIPRABHĀ

A treatise on Advaita philosophy by Ramachandrayogin.

Complete.

Ptd.

R.No. 9313

Transcribed from the Ms. of Kanci Kamakoti Mutt, Kumbakonam, in the year 1950-51, by V. Narayanaswami Sastry.

Paper; 32x25cms; 105 pages; lines 24; Devanagari; 52500 letters.

ज्ञानवासिष्ठव्याख्या

JÑĀNAVĀSIṢṬAVYĀKHYĀ

Contains 5th, 6th, & 7th Bhumika.

Ptd.

R.No. 9314

Restored in 1950-51 from D13970 by Sri. M.S. Ganesa Sarma.

Paper; 32x21cms; 13 pages; lines 26; Devanagari; 5070 letters.

प्रश्नविषय:

PRAŚNAVIṢAYAḤ

Incomplete.

See D13970 for details.

R.No. 9315

Transcribed in the year 1950-51 from the Ms. of Upaniṣadbramendra Mutt, Big Canjeevaram by A.R. Krishnamachari, Kodambakkam.

Paper 30x25cms; 29 pages; lines 24; Devanagari 11200 letters.

विश्वेश्वरस्मृति:

VIŚVEŚVARASMṚTIḤ

Incomplete.

A work on Hindu law and rules by Viśvevara.

Beginning

प्रणम्य परमात्मानं सच्चिदानन्द्रविग्रहम् ।
गुरुं सर्वज्ञविश्वेशं मायया धृतविग्रहम् ।।
यतेः परमहंसस्य धर्माणामेष सङ्ग्रहः।
विश्वेश्वरेण यतिना स्मृति नामैष लिख्यते ।।

कात्यायनः

यावद्वर्णाश्रमाचारो यावद्वेदः प्रवर्तते ।
तावन्न्यासोऽग्निहोत्रं च कर्तव्यं तु कलौ युगे ।।

मनुः -

ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्।
तदनाहृत्य मोक्ष्यन्तु सेवमानो व्रजेदधः ।
वनवासात्परिश्रान्तः प्रव्रजेद्विधिपूर्वकम् ।
व्याध्याविष्टोऽथ मेधावी ब्रह्मवित् संन्यसेद्विजः ।

End

ब्राह्मणस्योर्ध्वपुण्ड्रं स्यात् क्षत्रियस्यार्धपुण्ड्रकम्।
वैश्यस्य वर्तुलाकारं शूद्रस्यैव त्रिपुण्ड्रकम् ।।

(R.No. 9316, 9317, 9318 one bundle)

R.No. 9316

Transcribed in 1950-51 from Upaniṣad bramendra Mutt, big Canjeevaram by Sri. M.V. Venkaṭasubrahmanya Sarma of Mullandram.

Paper 30 x 25cms; pages 7; lines 24; Devanagari; 3360 letters.

श्रीरामसार्वात्म्यम्

ŚRĪRĀMASĀRVĀTMYAM

A treatise on the Supremacy of God Rama.

Complete.

Beginning.

नत्वा श्रीगुरुपादाब्जं रामसार्वात्म्यमिच्छताम् ।
निर्विशेषब्रह्मतत्वरामसार्वात्म्यमुच्यते ।।
एतत् स्वेतरजातं तदसह सभा सामान्यदेशिकरामब्रह्ममात्र-
मरवण्डमद्वयमोम् ।

Colophon

श्रीवासुदेवेन्द्रशिष्योपनिषद्ब्रह्मयोगिना ।
श्रीरामचन्द्रसार्वात्म्यध्यानं सम्यगुदीरितम् ।

एकैकवाक्यं कृत्स्नं वा ये ध्यायन्ति दिवानिशम्।
विकलेबरकैवल्यसाराज्यं यान्ति ने द्विजाः।।

End

विकल्पानुज्ञैकरसान्तविकल्पापह्नवासिद्धनिष्प्रति-
योगिकाविकल्पस्वरूपावस्थानलक्षण
विदेहकैवल्यश्रीमन्नारायणरामोऽस्मि ।

R.No. 9317

Transcribed in 1950-51 from a Mss of Upaniṣad bramendra Mutt, Big Canjeevaram by Sri. M.V. Venkaṭasubraḥamanyasarma, Mullendram.

Pages 7

अध्यात्मरामायणसारसङ्ग्रहः

ADHYĀTMARĀMĀYANASĀRASAṄGRAHAḤ

Complete.

Begins on 8a.

R.No. 9318

Transcribed in 1950-51 from the Mrs of Upaniṣad bramendra Mutt, Big Canjeevaram, by Sri. M.V. Venkatasubrahmanya Sarma, Mullandram.

23 pages; 9040 letters.

अर्धमात्राप्रणवनामावलीविवरणम्

ARDHAMĀTRĀPRAṆAVANĀMĀVALĪVIVARAṆAM

Complete.

Begins on 15a.

Beginning:

नानाविकल्पपटलं यत्रापह्नवतां गतम् ।
तदविकल्पाविकल्पं त्रिपादब्रह्मावशिष्यते ।।
नत्वा गुरुमविकल्पाविकल्पानन्दमिच्छताम् ।
तदाप्युपायार्धमात्रा प्रणवार्थोनन्तकोटिब्रह्माण्डसदनप्राणिहृदय
कमलालङ्कारचरणनलिनो भगवान् श्रीरामचन्द्रः

End

श्रीवासुदेवेन्द्रशिष्योपनिषदब्रह्मयोगिना अर्धमात्रातारनाम्नां व्याख्या
सङ्क्षेपतः कृता ।

Scribe Adds

महादेवेन्द्रयतिना लिखितं पुस्तकं शुभम् ।
त्रिपान्नारायणब्रह्मज्ञानसिध्यर्थमादरात् ।।
सर्वजित्सिंहबहुलपञ्चम्यां सौम्यवासरे ।
लिखित्वा पूर्णमभवत् ग्रन्थोऽयं गुरुतुष्टये ।।

R.No. 9319

Transcribed in 1950-51 from a Ms. of Upaniṣad bramendra Mutt, Big Canjeevaram by Sri. K. Viswanathan of Mylapore and A.R. Krishnamachariar.

Paper 32x26cms; 50 pages; lines 24; Devanagari; 26420 letters.

नारायणतारनामावलीव्याख्यानम्

NĀRĀYAṆATĀRANĀMĀVALĪVYĀKHYĀNAM

The significance of Narayananāma which is described as the Tārakanama, by Ramachandra.

Complete.

Beginning

यद्विज्ञानोदयसमं कैवल्यं यान्ति सूरयः ।
तन्निपाद्रामचरणं हृदये भातु मे सदा ।
नत्वा गुरुपदं मुक्तिमिच्छतां तत्प्रसिद्धये ।
नारायणीयप्रणवनाम्नामर्थो निगद्यते ।।
इह खलु मातृवद्धितैषिणी भगवतो तारसारोपनिषत्
स्वाज्ञानादाविर्भूताविधकपदस्य ....

Colophon

इति द्वितीयमन्त्रात्मकस्सुग्रीवखण्डस्संम्यग्व्याख्या ।

End

नारायणप्रणवनाम्नां स्वप्रणीतत्वमाह- सर्वेति ।

... ...

पूजां कर्तुमशक्तस्तु पठेद्भक्तिपुरस्सरम् ।
स्वानन्यभक्तिमेत्याथ ज्ञानात्कैवल्यमश्नुते ।।

R.No. 9320

(Bound in 4 Volumes)

Transcribed in 1950-51 from a ms of Upaniṣad bramendra Mutt, Big Canjeevaram by Sri. Narayanaswami Sastry of Ady Library.

Paper 32x26cms; pages 1225; lines 24; Devanāgari; 5,98,000 letters.

वेदान्तकल्पतरुव्याख्या - आभोगः

VEDĀNTAKALPATARUVYĀKHYĀ - ĀBHOGAḤ

Published in Govt. Oriental M/s. Library M.G.O.S. No: CXXVIII Edited with introduction and notes by Sastraratnkara Polagam Sastri and Panditaraja S. Subrahmany Sastri M.A.

R.No. 9321

Transcribed in 1950-51 from a Ms of Upaniṣad braḥmendra Mutt, by Sri G. Subrahmanya Sastri.

Paper 32x26cms; pages 65; lines 24; Devanagari; 17550 letters.

भागवतसङ्ग्रहः

BHĀGAVATASAṄGRAHAḤ

Complete

Ptd.

R.No. 9322

Transcribed in 1950-51 from Upaniṣad braḥmendra Mutt, Ms. by Sri. A.R. Krishnamachary, Kodambakkam.

Paper 32x26cms; 160 pages; lines 24; Devanāgari; 96000 letters.

विश्वेश्वरस्मृतिः

VIŚVEŚVARASMṚTIḤ

contains Sannyasidhi, Praṇāyāmavidhi etc.

(R.No. 9323, 9324, 9325, 9326 one bundle)

R.No. 9323

Purchased from H. Narasinga Rao, C/o. N. Suryanarayana, Telugu bhasasamiti, University buildings, Madras.

Paper 20.5x17.5cms; pages 5; lines 14; Telugu; 1500 letters.

गायत्रीहृदयम्

GĀYATRĪHṚDAYAM
Complete.

R.No. 9324

Pages 2

गायत्रीकवचम्

GĀYATRĪKAVACAM
Complete.

R.No. 9325

Pages 17.

गायत्रीजपराजम्

GĀYATRĪJAPARĀJAM

Complete.

R.No. 9326

Paper 20.5x17.5cms; pages 23; lines 19; Kannada; 7820 letters.

वैश्यवंशसुधाकरम्

VAIŚYAVAMŚASUDHĀKARAM

Complete. Contains 10 chapters.

(R.No. 9327, 9328 one bundle)

R.No. 9327

Purchased from Sri. V. Muthuswamy, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 20.5x10cms; pages 4; lines 7 ina page; Devanagari; 600 letters.

परिशिष्टम्

PARIŚIṢṬAM

Complete.

R.No. 9328

Pages 6.

सौरसूक्तम्

SAURASŪKTAM

Complete.

R.No. 9329

Purchased from Sri. V. Muthuswamy, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 17x10.5cms; 6 pages; lines 10; Devanagari; 1080 letters.

पौर्णमासेष्टिविचारः

PAURṆAMĀSEṢṬIVICĀRAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9330

Purchased from V. Muthuswamy, 117, North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 26x12.5cms; pages 104; lines 9; Devanagari; 31,200 letters.

आश्वलायनसप्तहौत्रप्रयोगः

ĀŚVALĀYANASAPTAHAUTRAPRAYOGAḤ

Complete.

(R.No. 9331 - R.No. 9335 one bundle)

R.No. 9331

Purchased from V. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 26x12cms; pages 17; lines 9; Devanagari; 4590 letters.

उक्थ्यशास्त्रम्

UKTHYŚASTRAM

The rendering of a particular stotra, seventeen times, at the time of a sacrifice. This is found in Rgveda.

Complete.

R.No. 9332

Purchased from V. Muthuswami, 117 North St., Tiruvadi, Tanjore.

Pages 18; 48600 letters.

वालखिल्यशास्त्रम्

VĀLAKHILYAŚASTRAM

The rendering of particular stotra by name Vālakhilya during sacrificial ceremonies.

Begins on 11a.

R.No. 9333

Pages 9.

वृषाकपिशस्त्रम्

VṚṢĀKAPIŚASTRAM

A type of rendering hymns.

Complete.

Begins on 29a.

R.No. 9334

Pages 9.

एवयामरुतशस्त्रम्

EVAYĀMARUTHAŚASTRAM

The rendering of a particular stotra by name Evayāmarut.

Complete.

Begins on 39a.

R.No. 9335

षोडशीशस्त्रम्

ṢOḌAŚTSASTRAM

The rendering of a particular stotra by name Ṣoḍaśi or Avihṛtaṣoḍaśi.

Complete.

Begins on 44a.

R.No. 9336

Paper 25x12.5cms; pages 72; lines 11 in a page; Devanagari; 385 letters.

बोधायनसुल्बसूत्रव्याख्या

BODHĀYANASULBASŪTRAVYĀKHYĀ

Complete.

(R.No. 9337 & 9338 one bundle)

R.No. 9337

Paper 25x12.5cms; pages 7; lines 9: Devanagari; 27720 letters.

सप्तसंस्था

SAPTASAMSTHĀ

Complete.

R.No. 9338

Pages 13.

वेदनिघण्टुः

VEDANIGHAṆTU

Complete in 5 chapters.

Begins on 16a of R 9337

R.No. 9339

Purchased from Sri. V. Muthuswami, 117, North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 21.5x10cms; pages 53; lines 9; Devanagari; 2000 letters.

आश्वलायनश्रौतसूत्रषट्कद्वयम्

ĀŚVALĀYANAŚRAUTASŪTRAṢAṬKADVAYAM

Complete. Contains Pūrva and Uttaraṣaṭka

R. No. 9340

Purchased from Sri V. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 21.5x10cms; pages 300; lines 7; Devanāgari; 67500 letters.

ऋग्वेदब्राह्मणपञ्चिका:

ṚGVEDABRĀHMAṆAPAÑCIKĀ

Complete in 8 Pañcikās.

TAMIL NADU STATE DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY
LIBRARY
Acc. No. 10216
Date
MADRAS-28.

R.No. 9341

Purchased from Sri. V. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 25x10cms; pages 12; lines 9 in a page; Devanāgari; 3150 letters.

महिमहे (ऋग्वेद:)

MAHIMAHE (ṚGVEDA)

A work on Vedic literature, contains only 2 chapters of 4th Adhyaya.

R.No. 9342

Purchased from Sri. V. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 30x11cms; pages 20; lines 10; Devanāgari; 8400 letters.

आम्नायविद्या

ĀMNĀYAVIDYĀ

A treatise on Śaktā religion. Contains the first Paricchada complete.

R.No. 9343-1

(Bound in 4 volumes)

Purchased from Sri. V. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 21.5x10cms; pages 109; lines 9; Devanāgari; 29430 letters.

ऋग्संहिता

ṚGSAMHITĀ

Contains upto the 8th Adhyaya of II Aṣṭaka

R.No. 9343-2

Pages 106. Contains upto 4th Aṣṭaka; complete.

R.No. 9343-3

Pages 105. Contains 6th Aṣṭaka; complete.

R.No. 9343-4

Pages 107. Contains 7th & 8th Aṣṭaka; complete.

(R.No. 9344, R.No. 9345 one bundle)

R.No. 9344

Purchased from Sri V. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 20x10cms; pages 13; lines 10; Devanāgari; 330 letters.

दर्शपूर्णमासहौत्रप्रयोग:

DARŚAPŪRṆAMĀSAHAUTRAPRAYOGAḤ

Complete.

Ptd.

Scribe adds - शके 26,20 कालयुक्तनामसंवत्सरेदं पुस्तकं अंबेकरेण लिखितम् ।

R.No. 9345

Pages 3; lines 7; 336 letters.

पवमानपरिशिष्टम्

PAVAMĀNAPARIŚIṢṬAM

Complete.

Begins on 14a.

Scribe adds:-

शके (22) 33 आषाढशुक्ल रवि, प्रजापति,

(R.No. 9346, R 9347 one bundle)

R.No. 9346

Purchased from P. Muthuswami, 117 North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 21x10cms; 5 pages; lines 7; Devanāgarī; 800 letters.

समासचक्र:

SAMĀSACAKRAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9347

Pages 7, lines 9; 1890 letters.

वेदशिक्षा

VEDAŚIKṢĀ

Complete. Last page contains some astronomical notes.

R.No. 9348

Paper 21x9cms; pages 6; lines 9; Devanagari; 1350 letters.

छन्दः

CHANDAḤ

A brief account of metres

Scribe date:

शके(1712) वैशाखशुक्लचतुर्थ्यां रविवासरे तद्दिने समाप्तम्।

R.No. 9349 (bound in 2 volumes)

R.No. 9349 Vol. II

Paper 21x10.5cms; pages 83; lines 9; Devanāgarī; 22410 letters.

निरुक्तम्

NIRUKTAM

Upto Uttaraṣaṭka

Complete.

R.No. 9349 Vol. I

Paper 22x7.8cms; pages 82; lines 7; Devanāgari; 18368 letters.

निरुक्तम्

NIRUKTAM

Complete; Upto Pūrvaṣatka

R.No. 9350

Paper; 21.5x10.2cms; pages 6; lines 8 in a page; Devanāgari; 1536 letters.

प्रत्यङ्गिराकल्पः

PRATYANGIRĀKALPAḤ

Complete.

R.No. 9351

Paper 16x12cms; pages 12; lines 12; Devanagari; 2300 letters.

वेदसारशिवसहस्रनामम्

VEDASĀRAŚIVASAHASRANAMAM

Complete.

Ptd.

(RNo 9352 and RNo 9353 one bundle)

R.No. 9352

Presented by P. Muthuswami, 117, North Street, Tiruvadi, Tanjore.

Paper 33.5x13.5cms; pages 8; Devanagari; 1600 letters.

वरीवस्यरहस्यम्

VARĪVASYARAHASYAM

Complete. Begins on 2a.

Ptd.

R.No. 9353

Pages 2; grantha; 1200 letters.

शूलिनीदुर्गाकवचम्

ŚŪLINĪDURGAKAVACAM

Complete.

R.No. 9354

Paper 19.5x11cms; pages 49; lines 17; grantha; 36652 letters.

देवीमाहात्म्यम्

DEVĪMĀHĀTMYAM

Complete in 16 chapters.

Ptd.

(RNo 9355, 9356 one bundle)

R.No. 9355

Paper 19.5x11cms; pages 4; lines 7; Devanagari; 840 letters.

शनैश्चरकवचः

SANAIŚCARAKAVACAḤ

Complete.

R.No. 9356

Pages 7; lines 10; 2240 letters.

मोहनाकर्षणभैरवमनत्रः

MOHANĀKARṢAṆABHAIRAVAMANTRAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9357

Paper 15.5x10.5cms; pages 10; lines 10; Devanāgari; 2000 letters.

रामदुर्गाष्टोत्तरमालामन्त्रः

RĀMADURGĀṢṬOTTARAMĀLĀMANTRAḤ

Incomplete

(RNo 9358 - RNo 9360 one bundle)

R.No. 9358

Paper 25x12cms; pages 2; lines 13; Devanāgari; 1820 letters.

कूश्माण्डहोम:
KŪŚMĀṆḌOHOMAḤ
Incomplete
Ptd.

R.No. 9359

Pages 13; lines 9; 7020 letters.
गणहोम:
GAṆAHOMAḤ
Begins on 3b.
Complete.

R.No. 9360

Pages 79; lines 9; 42660 letters.
अश्विनशास्त्र:
AŚVINAŚASTRAḤ
Complete.
Begins on 16b.

(RNo 9361, 9362 one bundle)

R.No. 9361

Paper 25x12cms; pages 31; lines 9; Devanāgari; 16740 letters.
अतिरात्रप्रयोग:
ATIRATRAPRAYOGAḤ
Complete.

R.No. 9362

Pages 9; grantha & Devanāgari; 3000 letters.
मन्युसूक्तविधानम्
MANYUSUKTAVIDHANAM
Complete.

R.No. 9363

Paper 19.5x12.5; pages 10; lines 10; Devanagari; 340 letters.

आसुरिमन्त्रः

ĀSURIMANTRAḤ

Complete.

(RNo 9364 to 9366 one bundle)

R.No. 9364

Paper 25x12cms; pages 32; lines 9; Devanāgari; 18500 letters.

सर्वपृष्टहौत्रः

SARVAPRṢṬHAHAUTRAḤ

Incomplete.

R.No. 9365

Pages 2; lines 12; 1440 letters.

पशुयाजुषहौत्रप्रयोगः

PAŚUYĀJUṢAHAUTRAPRAYOGAḤ

Incomplete.

R.No. 9366

Pages 6; 5000 letters.

ग्रावस्तुतशास्त्रः

GRĀVASTUTAŚASTRAḤ

Complete.

R.No. 9367

Paper 18x10cms; pages 39; lines 6; Devanāgari; 4800 letters.

गणपतिसहस्रानामानि

GAṆAPATI SAHASRANĀMĀNI

Complete.

R.No. 9368

Paper 16x9cms; pages 30; lines 10; Devanāgari; 12000 letters.

ललितासहस्रनामानि

LALITĀ SAHASRANĀMĀNI

Complete.

R.No. 9369

Paper; 21x10cms; pages 26; lines 9; Devanāgari; 14040 letters.

श्रौतसूत्रम् प्रैषाध्याय:

SRAUTASŪTRAM - PRAIṢĀDHYAYAḤ

Contains upto Kuntāpadhyāyā; complete.

R.No. 9370

Paper 27x9cms; pages 16; lines 7; Devanāgari; 7840 letters.

सौन्दर्यलहरी

SOUNDARYALAHARĪ

Complete.

R.No. 9371 (bound in 2 volumes)

R.No. 9371-1

Paper 21x10cms; pages 93; lines 10; Devanāgari; 56000 letters.

ऋक्संहिता

ṚKSAMHITĀ

Contains upto the 8th Adhyaya of 6th Aṣṭaka

MR.No. 9371-2

Paper 21x8cms; 133 pages; lines 6; Devanāgari; 15000 letters.

ऋक्संहिता

ṚKSAMHITĀ

Contains 8th chapter of 8th Aṣṭaka

R.No. 9372

Paper 30x11cms; 76 pages; lines 16; Devanāgari; good; 61000 letters.

शिवरहस्यम्

SIVARAHASYAM

Contains a few portions from Sivarahasyam, a work of Śāktism.

R.No. 9373

Transcribed from the Mss. of Upaniṣad brahmendra Mutt, Big Canjeevaram by G. Subrahmanyam.

Paper 30.5x25cms; pages 208; lines 24; Devanagari; good.

हरिभक्तिसुधोदयः–सव्याख्यानम्

HARIBHAKTISUDHODAYAḤ - with COMMENTARY

Contains first 10 chapters; 11th incomplete.

Same as the work described under R1429.

R.No. 9374

Transcribed from the Mss. of Upaniṣad brahmendra Mutt; Big Canjeevaram, by G.Subramaniam.

Paper 30.5x25cms; pages 25; lines 24; Devanāgari; 24000 letters.

रामायणसारसङ्ग्रहः

RĀMĀYAṆASĀRASAṄGRAHAḤ

Complete in 160 verses

R.No. 9375

Transcribed from the manuscript from Sri. A.G. Menon by Sri. A.G. Menon and S. Rajagopalan in 1950-51.

Paper 30.5x25cms; pages 79; lines 24; Devanāgari; 40,000 letters.

वाग्भटमण्डनम्

VĀGBHAṬAMAṆḌANAM

A treatise on Medical Science by Paṇḍita Bhattanarahari.

Complete in 25 Prakaraṇas.

Beginning:

आनन्दैकरसं विश्ववल्लीकन्दमुपास्महे ।
शिवं देशिककारुण्यसुधाविष्कृविग्रहम् ।।
प्रत्याशं प्रतिवादिनिर्जयमहायज्ञैकयूपानिव
ग्रन्थान् यः सुमनःप्रियान् ग्रथितवान्भूमण्डलीमण्डनान्
प्रापुश्चावनिपावनीयकतुलां ते यत्तुलापूरुषै
र्भूयोरामकवीश्वरायगुरवे तस्मै नमः कुर्महे ।

Colophon:

इति वाग्भटमण्डने षष्टं प्रकरणम् ।

End:-

इति श्रीतार्किकतान्त्रिकचक्रचूडामणिरामकवीश्वर
शिष्य भट्टसुदेवतनयपण्डितभट्टनरहरिविरचित वाग्भटमण्डने
पञ्चविंशप्रकरणं समाप्तम् ।

Scribe Adds:-

विश्वावसुसंवत्सर आषाढशुद्धपञ्चम्यां संपूर्णोऽयं ग्रन्थः । तिरुवक्कूर
वीरराघवाचार्येण लिखितोऽयं प्रबन्धः ।

R.No. 9376

Transcribed by Sri. M.V. Veṅkaṭasubrahmanya Sarma in 1950-51, from a ms. of Upaniṣad brahmendra Mutt, Kancipuram.

Paper 31x25cms; pages 100; lines 24; Devanāgari; 80,000 letters.

सृष्ट्यादिप्रणवनामावलीव्याख्या

SṚṢṬYĀDIPRAṆAVANĀMĀVALĪVYĀKHYĀ

Same work as described under R9308, with commentary by name Navaratnaprabhā by Upaniṣad brahmoyogin.

Complete.

Beginning:

स्वाविद्यापदतत्कार्यकलनोन्मुक्तवैभवम् ।
सृष्टिप्रणवलक्ष्यार्थरामचन्द्रपदं भजे ।।
नत्वा गुरुं ब्रह्ममात्रावस्थानानन्दमिच्छताम् ।
तत्प्राप्त्युपायनिपुणसृष्टितारार्थ उच्यते ।।
इह खलु स्वाविद्यापदतत्कार्यानन्तकोटि बहमाण्डसदन
प्राणिपटलहृदयकमलालङ्क.ारचरणनलिनो ....

Colophon

श्रीवासुदेवेन्द्रशिष्योपनिषदब्रह्मयोगिना
सृष्टिप्रणवविवृतिः कृता संक्षेपता स्फुटम् ।
सृष्टितारविवरणं पञ्चपञ्चाशदधिकशतम् ।

End

नारायणं योऽर्चयति सोऽयं मुनिः स्वावशे-
षतया त्रय्यन्तवेद्यत्रिपाद्वैकुण्ठनारायणपदं
विदेहकैवल्यं निष्प्रतियोगिकस्वमात्रमिति भजेत्
भजति । इति शब्दः प्रकरणसमाप्त्यर्थ : ।

... ...

प्रणवनामावलिविवरणं सम्पूर्णम् ।

R.No. 9377

Transcribed by M.S. Ganesa Sarma, in 1950-51 from a Ms. of Upaniṣad brahmendra Mutt Kancipuram.

Paper 30.5x25cms; pages 35; lines 24; Devanāgari; 3300 letters.

नारायणशब्दविचारः

NĀRĀYAṆAŚABDAVICĀRAḤ

Complete.

R.No. 9378

Restored from D.12689 by T.A.K. Venkatachary in 1950-51.
Paper 21x17cms; pages 22; lines 20; Devanāgari; 12600 letters.

वेङ्कटेशप्रहसनम्

VEṄKAṬEŚAPRAHASANAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9379

Transcribed by Sri. R. Krishnamurthy, Mylapore, in 1950-51 from a Ms. of Upaniṣad bramendrayogi Mutt, Big Kancipuram.

Paper 30.5x25cms; pages 33; lines 24; Devanāgari; 31000 letters.

षोडशतरङ्गमूलम्

ṢOḌAŚATARAṄGAMŪLAM

16 songs (Taraṅgas) in praise of the Lord Narayaṇa.

Complete.

Beginning:

हरि: ओं । अयं तरङ्गो बिलहरिरागेण गेय: ।
श्रीमद्विश्वाधिष्ठानपरमहंससद्गुरुरामचन्द्राय नम: । नत्वा श्रीगुरुचरणविन्देहं कैवल्यविद्धये राम षोडशकलाभिधानास्तरङ्गमाला गले समर्प्यन्ते।
स्वाविद्यातो भव भव भयापार दुस्तारवर्द्धौ मग्नं मोहाव्रतिलघु-बृहत्कायदारादि जन्यात् । नानादु:खात्परिपरिभवादाकुलं मां दयालो, क्षिप्रं... रामोद्धर करुणया....

End:

कल्क्यवतारान्तं सनकयोगिपावनवंशाय मङ्गलम् ।
सनकस्वाभिमतशिष्यवर्णज्ञानविज्ञानाय मङ्गलम् ।
।। श्रीरामचन्द्र।।

(R.No. 9380 - 9383 one bundle)

R.No. 9380

Presented by Sri. K.T. Natesan, Pudupet, Nagari Post, Chittoor Dt.

Palm leaf; 40x5cms; fol 1; lines 5; Grantha; worm laten; 500 letters.

आदित्यहृदयम्

ĀDITYAHṚDAYAM

Complete. Begins on 1a.

R.No. 9381

Fol. 1; 500 letters.

कृष्णद्वादशनामस्तोत्रम्

KṚṢṆADVĀDAŚANĀMASTOTRAM

Complete.

Begins on 7a of R 9380.

R.No. 9382

Fol. 1; 400 letters.

नारायणकवचः

NĀRĀYAṆAKAVACAḤ

Incomplete

Begins on 3a of R9380.

R.No. 9383

Fol. 2; 450 letters

कृष्णाष्टकम्

KṚṢṆĀṢṬAKAM

Begins on 8a R.No. 9380.

R.No. 9384

(R.No. 9384 - R.No. 9489)

Purchased from Sri. Alwar Ayyangar, South Street, Watrap,

Ramnad Dt.

Paim ieaf, 40x3.5cms; foll. 75; lines 7; Grantha; broken leaves; 68000 letters.

रामायणविशेषार्थाः

RĀMĀYAṆAVIŚEṢĀRTHĀḤ

Meanings of some important words occuring in Rāmāyaṇa.

Contains upto Kiṣkindhākāṇḍa.

Similar to the work described under R 2234.

R.No. 9385

Palm leaf 43x2.8cms; Foll. 50; lines 6; Grantha; old, warm eaten; 25000 letters.

वृषभगिरिमाहात्म्यम्

VṚṢABHAGIRIMĀHĀTMYAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9386

Palm leaf; 40x3cms; Foll. 168; lines 7; Grantha; very old and broken leaves; 26000 letters.

कालविधानपद्धतिः-सव्याख्या

KĀLAVIDHĀNAPADDHATI - WITH COMMENTARY

Complete.

Ptd.

R.No. 9387

Palm leaf 47x3.5cms; Foll. 210; lines 7; Grantha; much injured; 80,000 letters.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Upto Āraṇyakāṇḍa.

Complete.

R.No. 9388

Palm leaf 48x4cms; Foll. 252; lines 10; Grantha; old and worm eaten; 2,00,000 letters.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Upto Āraṇyakāṇda

Complete.

R.No. 9389

Palm leaf 50x3cms; Foll. 262; lines 4; Grantha; much injured; 82,000 letters.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Complete.

(R9390, R9391 one bundle)

R.No. 9390

Palm leaf 41x3cms; Foll. 26; lines 5; Grantha; fair; 13000 letters.

वामनकारिका

VĀMANAKĀRIKĀ

Complete.

R.No. 9391

Foll. 42; 25,000 letters.

रामायणव्याख्या

RĀMĀYAṆAVYĀKHYĀ

Incomplete, contains only Ayodhyākāṇḍa.

R.No. 9392

Palm leaf 39.4cms; Foll. 143; lines 11; Grantha; old; 2,45,000 letters.

रामायणव्याख्यानम् -रामानुजीयम्

RĀMĀYAṆAVĀKHYĀ - RĀMĀNUJĪYAM

Incomplete.

R.No. 9393

Palm leaf; 41x3cms; Foll. 234; lines 7; Grantha; 1,97,000 letters.

रामायणव्याख्या

RĀMĀYAṆAVYĀKHĀ

Complete.

Foll 235-265 contains Rāmāyaṇa text which is incomplete.

R.No. 9394

Palm leaf 44x3cms; Foll. 250; lines 9; Grantha; worm eaten & broken; 1,60,000 letters.

रामायणव्याख्या-मणिमञ्जीरा

RĀMĀYAṆAVYĀKHYĀ - MAṆIMAÑJĪRĀ

Complete.

Same as the ms. described under R 4735.

(R.No. 9395, 9396 one bundle)

R.No. 9395

Palm leaf 40x3cms; Foll. 92; lines 9; Grantha; old; 1,24,200 letters.

रामायणव्याख्या

RĀMĀYAṆAVYĀKHYĀ

Incomplete

R.No. 9395 (R.No. 9395, 9396 one bundle)

Foll. 40; 27000 letters.

सामवेदसंहिता

SĀMAVEDASAMHITĀ
Incomplete.

R.No. 9396

Foll. 78; 58000 letters.

रामायणव्याख्या
RĀMĀYAṆAVYĀKHYĀ
Incomplete, upto Āraṇyakāṇḍa.
Begins on 42a of R 9395.

R.No. 9397

Palm leaf 40x4cms; Foll. 78; lines 5; Grantha; very much injured; 35,000 letters.

सामवेदः-ऊहः
SĀMAVEDAḤ - ŪHAḤ
Incomplete.

R.No. 9398

Palm leaf 40x4cms; Foll. 40; lines 8; Grantha; old; 25,600 letters.

सामवेदः
SĀMAVEDAḤ
Three Parvas complete.

R.No. 9399

Palm leaf 40x4cms; Foll. 60; lines 6; Grantha; old; 30,000 letters.

सामवेदसंहिता
SĀMAVEDASAMHITĀ
Incomplete.

R.No. 9400

Palm leaf 44x 3cms; Foll. 200; lines 6; Grantha; old; 84000 letters.

सामवेदसंहिता

SĀMAVEDASAMHITĀ

Complete.

R.No. 9401

Palm leaf 44x3cms; Foll. 240; lines 8; Grantha; very much injured; 1,10,000 letters.

सामवेदसंहिता

SĀMAVEDASAMHITĀ

Complete.
Same as described under D14201

R.No. 9402

Palm leaf 44x2.5cms; Foll. 140; lines 7; Grantha; old; 1,27,400 letters

महाभारतम्

MAHĀBHĀRATAM

Contains Virātaparva.

Complete.

R.No. 9403

Palm leaf 44x3.5cms; Foll. 190; lines 6; grantha; old; 7,98,000 letters.

भागवतम्

BHĀGAVATAM

Contains 10th skanda only

Complete

First three folios contain some mantra.

(R.No. 9404 - R.No. 9407 one bundle)

R.No. 9404

Palm leaf 44x3.5cms; Foll. 4; lines 8; Grantha; worm eaten leaves; 2880 letters.

वैष्णवप्रशंसा

VAIṢṆAVAPRAŚAMSĀ

Incomplete.

R.No. 9405

Foll.2.

विधवावपनम्

VIDHAVAVAPANAM

Complete.

Begins on 5a of R 9404

R.No. 9406

Foll. 18.

सन्ध्याभाष्यम्

SANDHYĀBHĀṢYAM

Complete.

Begins on 7a of R 9404

R.No. 9407

Foll. 57; 41,040 letters.

अमरपञ्चिका

AMARAPAÑCIKA

A Tamil commentary for Amarakośa by name Amarapañcika by Venkateśara.

Incomplete.

R.No. 9408

Palm leaf 42x2.5cms; Foll. 117; lines 5; grantha; old; 36,850 letters.

नामलिङ्गानुशासनम्-द्राविडार्थसहितम्

NĀMALIṄGĀNUŚĀSANAM - WITH TAMIL MEANING

Incomplete.
Ptd.

R.No. 9409

Palm leaf 43x3.5cms; Foll. 32; lines 6; Grantha; old; 17,280 letters.

नामलिङ्गानुशास्नम्

NĀMALIṄGANUŚĀSANAM

Incomplete.

Same as the above number.

(R.No. 9410, 9411 one bundle)

R.No. 9410

Palm leaf 43x3cms; Foll.20; lines 6; Grantha; much injured.

नामलिङ्गनुशासनम्-द्राविडार्थसहितम्

NĀMALIṄGĀNUŚĀSANAM - WITH TAMIL MEANING

Incomplete.

Same as above.

R.No. 9411

Foll. 10.

सुन्दरबाहुस्तव:

SUNDARABĀHUSTHAVAḤ

Complete.

Begins on 21a of R 9410.

R.No. 9411a

Foll. 5.

रामाचन्द्रस्तोत्रम्

RĀMACANDRASTOTRAM

Complete.

Begins on 30 a of R 9410.

Ptd.

(R.No. 9412, 9413 one bundle)

R.No. 9412

Palm leaf 40x4cms; Foll. 26; lines 6; Grantha; old and worm eaten;

पूर्वप्रयोगः

PŪRVAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9413

Foll. 6.

श्रीरङ्गमाहात्म्यम्

ŚRĪRAṄGAMĀHĀTMYAM

Incomplete

Begins on 28a of R 9412.

R.No. 9414

Palm leaf 40x3cms, Foll. 64; lines 7 on a folio; Grantha; old and worm eaten; 40320 letters.

अपरप्रयोगः

APARAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9415

Palm leaf 40x3cms; Foll. 83; lines 7 on a folio; Grantha; old; 52,290 letters.

पूर्वापरप्रयोगः

PŪRVĀPARAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9416

Palm leaf 40x3cms; Foll. 22; lines 6; Grantha; worm eaten; 5840 letters.

श्राद्धप्रयोग:

ŚRĀDDHAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9417

Palm leaf 38x2.5cms; Foll. 105; lines 7; Grantha; old and worm eaten; 73,500 letters.

गृह्यसूत्र: प्रयोगश्च

GṚHYASŪTRA AND PRAYOGAḤ

Complete.

R.No. 9418

Palm leaf 38x3cms; Foll. 90; lines 6; Grantha; worm eaten.

आपस्तम्बश्रौतसूत्रम्

ĀPASTAMBAŚRAUTASŪTRAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9419

Palm leaf 38x3cms; Foll. 115; lines 7; Grantha; worm eaten; 88,550 letters.

क्रियाकैरवचन्द्रिका

KRIYĀKAIRAVACANDRIKĀ

A treatise on Vaiṣṇavism by Varāha.

Incomplete.

Same work as that described under R 3204(a).

R.No. 9420

Palm leaf 35x3cms; Foll. 103; Grantha; old; 57,680 letters.

क्रियाकैरवचन्द्रिका

KRIYĀKAIRAVACANDRIKĀ

Incomplete.

Same as the above number.

R.No. 9421

Palm leaf 35x3cms; Foll. 87; lines 7; old; worm eaten; 73,080 letters.

तुलाकावेरीमाहात्म्यम्

TULAKĀVERĪ MĀHĀTMYAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9422

Palm leaf 35x2.5cms; Foll. 162; lines 5; very old; 81,000 letters.

पितृमेधसूत्रम्

PITṚMEDHASŪTRAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9423

Palm leaf 46x3cms; Foll. 89; lines 5 on a folio; Grantha; old; 48,950 letters.

सामवेदसंहिता

SĀMAVEDASAMHITĀ

Complete.

Ptd.

R.No. 9423(a)

Foll. 40.

प्रयोगदर्पणम्

PRAYOGADARPAṆAM

Incomplete, Ptd.

R.No. 9424

Palm leaf 40x3cms; Foll. 75; lines 7 on a page; Grantha; old; 49,140 letters.

न्यायनत्नावलि:

NYĀYARATNĀVALIḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9425

Palm leaf 43x4cms; Foll. 60; lines 8 on a page; Grantha; old; 96,800 letters.

विधिनिर्णय:

VIDHINIRṆAYAH

A treatise on Mimāmsa.

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9426

Palm leaf 42x4.2cms; Foll. 65; lines 8 on a page; Grantha; 62,400 letters.

दिनकरी

DINAKARI

A commentary on Muktavali.

Complete.

(R.No. 9427 & 9428 one bundle)

R.No. 9427

Palm leaf 40x3cms; Foll. 6; lines 5; Grantha; 2700 letters.

गोदास्तुतिः

GODĀSTUTIH

Complete.

Ptd.

R.No. 9428

Foll. 6.

मुकुन्दमाला

MUKUNDAMĀLĀ

Complete; Ptd.

R.No. 9428(a)

Foli. 8.

स्तोत्ररत्नम्

STOTRARATNAM

Complete

Printed.

Foll 20 to 32 contains Devarājāṣtakam, Prārthanāpañcakam, Dinacaryā, Yatirajavimsatih

R.No. 9429

Palm leaf; 45x2.5cms; Foll. 23; lines 5; Grantha; old & injured; 9200 letters.

पञ्चसंस्कारः

PAÑCASAMSKĀRAḤ

Incomplete.

Contains only 48th chapter.

R.No. 9430

Foll. 23.

पाञ्चरात्रागमः

PĀÑCARĀTRĀGAMAḤ

Incomplete. Begins on 24a of R 9429.
Ptd.

R.No. 9431

Palm leaf 41x3.5cms; Foll. 20; lines 9; Grantha; worm eaten leaves; 20,700 letters.

कृष्णकर्णामृतम्

KṚṢṆAKARṆĀMṚTAM

Complete. Foll. 21, 22 contain Rāmacandra stotram.

Ptd.

(R.No. 9432, 9433 one bundle)

R.No. 9432

Palm leaf 41x3.5cms; Foll. 13; lines 9; Grantha; old; 12870 letters.

भाषकुसममञ्जरी

BHĀṢĀKUSUMAMAÑJARĪ

Incomplete

Many leaves are missing.

R.9433 -

उत्तरचम्पू

UTHARACAMPŪ

R.No. 9434

Palm leaf 41x3.5cms; Foll. 63; lines 6; Grantha; worm eaten; 37,800 letters.

चम्पूरामायणम्

CAMPŪRĀMĀYAṆAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9435

Palm leaf 41x4cms; Foll. 86; lines 9; Grantha; old; 69,660 letters.

भारतचम्पूः

BHĀRATACAMPŪḤ

Incomplete

Ptd.

R.No. 9436

Palm leaf 41x3.5cms; Foll. 68; lines 6; Grantha; 57,120 granthas.

वेदान्ताचार्यविजयचम्पू

VEDĀNTĀCARYAVIJAYACAMPŪ

Incomplete. Same as D12370.

R.No. 9437 & R.No. 9438 one bundle

R.No. 9437

Palm leaf 42x3cms; 55 Foll.; lines 7; Grantha; 42,350 letters.

रघुवंशम्

RAGHUVAMŚAM

Contains only I Sarga & II Sarga incomplete.

R.No. 9438

Foli. 9.

शिशुपालवधः

ŚIŚUPĀLAVADHAḤ

Incomplete.

Only a fragment is found; leaves are half broken.

Begins on 56a of 9437.

R.No. 9439

Palm leaf 42x3cms; Foll. 60; lines 8; Grantha; 57,600 letters.

नैषधव्याख्या

NAIṢADHAVYĀKHYĀ

Incomplete.

R.No. 9440

Palm leaf 42x3cms; Foll. 44; lines 7; Grantha; 30,800 letters.

वेणीसंहारम्

VEṆTASAMHĀRAM

Incomplete.

R.No. 9441

Palm leaf 39x2.5cms; Foll. 47; lines 6; Grantha; injured; 22,560 letters.

गौतमसूत्रम्

GAUTAMASŪTRAM

Incomplete.

Same work as that described under D1200.

Foll. 48 to 57 contains Prāśnaśāstra and Samaprayoga.

R.No. 9442

Palm leaf 40x3cms; Foll. 37; lines 8; Grantha; 29,600 letters.

धर्मशास्त्रम्

DHARMAŚĀSTRAM

Incomplete.

R.No. 9443

Palm leaf 40x3cms; Foll. 20; lines 5; Grantha; 10,000 letters.

कालप्रकाशिका

KĀLAPRAKĀŚIKĀ

Incomplete.

The other works herein are Aghapancaṣaṣṭka and Aghavivecanam.

R.No. 9445

Palm leaf 28x3cms; Foll. 47; lines 6; grantha; 16920 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Vibhava.

R.No. 9446

Palm leaf 27x3cms; Foll. 44; lines 5; grantha; 13,200 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Śukla.

R.No. 9447

Palm leaf 27x3cms; Foll. 25; lines 8; Grantha; 12000 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Pramoduta.

R.No. 9448

Palm leaf 27x3cms; Foll. 45; lines 7; Grantha; 18,900 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Prajotpatti.

R.No. 9449

Palm leaf 27x3cms; foll. 34; lines 8; Grantha; 21,760 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Āngirasa.

R.No. 9450

Palm leaf 30x3cms; foll. 10; lines 6; Grantha; 4800 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Śrīmukha.

Incomplete.

R.No. 9451

Palm leaf 30x3cms; foll. 46; lines 8; Grantha; 22,080 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Bhava.

R.No. 9452

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the Yuva year.

R.No. 9453

Palm leaf 30x3cms; foll. 15; lines 7; Grantha; 84000 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Dhātu.

Incomplete.

R.No. 9454

Palm leaf 30x3cms; foll. 54; lines 6; Grantha; 15540 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Easwara.

Complete.

Fol. 54a - 94b contains calender for the year Śrīmukha which is numbered as 9454a.

R.No. 9455

Palm leaf 30x3cms; foll. 75; lines 5; Grantha; 20,100 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Bahundhānya.

R.No. 9456

Palm leaf 30x3cms; foll. 26; lines 5; Grantha; 13000 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Pramāthī.

R.No. 9457

Palm leaf 30x3cms; foll. 33; lines 7; Grantha; 16,500 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Tāraṇa.

R.No. 9458

Palm leaf 30x3cms; foll. 37; lines 8; Grantha; 17760 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Pārthiva.

R.No. 9459

Palm leaf 30x3cms; foll. 32; lines 7; Grantha; 19,920 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑÇĀNGAM

Hindu calender for the year Vyaya.

R.No. 9460

Palm leaf 30x3cms; foll.30; lines 9; Grantha; 24,300 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Sarvajit.

R.No. 9461

Palm leaf 30x3cms; foll. 37; lines 7; Grantha; 18,130 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Sarvadhāri.

R.No. 9462

Palm leaf 30x3cms; foll. 41; lines 7; Grantha; 22,960 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the Virodhi.

R.No. 9463

Palm leaf 30x3cms; foll. 38; lines 7; Grantha; 20,600 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Vikṛti.

R.No. 9464

Palm leaf 30x3cms; foll. 39; lines 7; Grantha; 20,650 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Khara.

R.No. 9465

Palm leaf 30x3cms; foll. 28; lines 7; Grantha; 15,500 letters.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Nandana.

R.No. 9466

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM -Hindu calender for Vijaya year.

R.No. 9467

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM -Hindu calender for Jarga year.

R.No. 9468

(R9468-9489 one bundle)

Presented by Sri Alwar Ayyangar, South Street, Watrap, Ramnad Dist.

Palm leaf 30x3cms; Foll. 33; lines 8 on a folio; Grantha script; extent 800 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calander for the year Manmatha.

Complete. The Kalyabla is given as 4517 .

R.No. 9469

Palm leaf 30x3cms; foll. 33; lines 8 on a folio Grantha script; extent 700 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Durmukha.

Kalivartha is 4518 .
Complete.

R.No. 9470

Palm leaf 30x3cms; foll.3; lines 8 on a folio; Grantha script; extent 750 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Hevilambī.

R.No. 9471

Palm leaf 30x3cms; lines 7 on a folio; Grantha script; good; extent 250 granthas.

पञ्चाङ्गम्(विलम्बि)

PAÑCĀṄGAM (VILAMBI)

Calender for the year Vilambi.

In the beginning the name of the scholar who composed the calender is given as Venkatārya.

नत्वा कौशिकवंशवारिधिमणिं श्रीवासवर्यं गुरुम् ।
पञ्चाङ्गं. गणयिष्ये एतदखिलं ज्योतिर्विदां प्रीतये
गोदापुत्रिकटोज्वले करमहीदेवैर्युते पावने
कोल्लाख्येनगरे भुविविजयते श्रीवासवर्यात्मज: ।।
कृत्वा वाक्यपयोधिमज्जनमिदं पञ्चाङ्ग.सारामृतम्।
ग्रहे नीतिविदां सतां प्रियमुदे श्रीवेङ्क.टार्यस्सुधी:।।

The year is :-अस्य श्री विलम्बि नामसंवत्सरस्य सृष्टिगताब्दा.

other names such as Pandava, Kollam, Saka etc are given.

R.No. 9472

Palm leaf; 30x3cms; foll. 16; lines 6 on a folio; Grantha script; good; extent 200 granthas.

पञ्चाङ्गम्(विकारि)

PAÑCĀṄGAM

Calender for the year Vikāri; fol.14,15 are left blank.

R.No. 9473

Palm leaf 30x3cms; foll. 10; lines 6 on a folio; Grantha; extent 150 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Śārvarī.

The last folio contains a horsocope.

R.No. 9474

Palm leaf 30x3cms; foll. 11; lines 6 on a folio; Grantha; extent 150 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for the year Plava.

R.No. 9475

Palm leaf 30x3cms; foll. 22; lines 6 on a folio; Grantha; extent 300 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for the year Śubhakṛt.

R.No. 9476

Palm leaf 30x3cms; foll. 14; lines 7 on a folio; Grantha; good; extent 200 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for Śubhakṛt year.

R.No. 9477

Palm leaf 30x3cms; foll. 13; lines 7 on a folio; Grantha; much injured (worm eaten); 175 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for Vīśwāvasu year.

Complete.

R.No. 9478

Palm leaf 30x3cms; foll. 18; lines 6 on a folio; Grantha; much injured; worm eaten; extent 200 granthas

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender. The year is not clear. (seems to be Vīśwāvasu) The first folio is missing.

Incomplete. Wants the beginning:

R.No. 9479

R.No. 9479, 9479(a) one bundle

Palm leaf 33x3cms; 15 folios; lines 6; much damaged; not to be handled.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for Plavanga year.

R.No. 9479(a)

Calender for Sādhāraṇa year.

Begins on 16a.

R.No. 9480

Hindu calender for the year Kīlaka.

R.No. 9481

Palm leaf; 33x3cms; foll. 40; lines 6 on a folio; much injured; grantha; extent 400 Granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for the year Virodhikṛt.

R.No. 9482

Palm leaf 28x2.5cms; foll. 24; lines 6 on a folio; Grantha; injured; extent 300 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for Kālayukti year.

R.No. 9483

Palm leaf 30x3cms; foll. 40; lines 6 on afolio; grantha; injured; extent 400 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for Siddhārthī year.

R.No. 9484

Palm leaf 30x2.5cms; foll. 40; lines 6 on a folio; Grantha; worm eaten; extent 400 granthas;

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Hindu calender for Raudri year.

R.No. 9485

Palm leaf 30x2.5cms; foll.45; lines 6 on a folio; Grantha; good; extent 420 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for Durmati year.

R.No. 9486

Palm leaf 30x2.5cms; foll. 36; lines 6 on a folio ; Grantha; good; extent 350 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for the year Dundubhi.

R.No. 9487

Palm leaf 30x2.5cms; foll. 30; lines 6 on a folio; Grantha; old; injured; extent 300 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for Raktāksī year.

R.No. 9487(a)

23 folios for Rudhirodgāri year.

R.No. 9488

Palm leaf 30x2.5cms; foll. 40; lines 6 on a folio; Grantha; good; extent 400 grantha.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for Krodhana year.

R.No. 9489

Palm leaf 30x2.8cms; foll. 37; lines 6 on a folio; grantha; good; extent; 350 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCĀṄGAM

Calender for the year Akṣaya.

R.No. 9490

Transcribed from the Ms. of the library (R 9386) in 1950 by R. Krishnamurthi.

Paper 31x24.5 cms; foll. 181; lines 20 on a folio; Devanāgari; good; extent; 4000 granthas.

कालनिर्णयः

KĀLANIRṆAYAḤ

A treatise on a astrology; For Details see R 9386.

Incomplete.

R.No. 9491

(RNo 9491 - 9496 one bundle)

Transcribed from the Ms. of Meenakṣidīkṣitar son of Late M.M. Daṇḍapaṇidīkṣitar, East Car Street, Cidambaram, in 1950-51. by R.Krishnamurthy, Mylapore.

Paper 30.1x25cms; foll. 3; lines 20 ona folio; Devanagari; good; extent 75 granthas.

सम्मेलनकवचम्

SAMMELANA KAVACAM

Mantras in praise of Lord Śiva (Bhairava) to dispel enemies, to dispel the evil effects of poison, to catch thieves and wild animals etc.

Complete.

R.No. 9492

Foll. 3; lines 20 on Devanagari.

शास्तामन्त्रः

ŚĀSTĀMANTRAḤ

A mantra praising Lord Śāsta.

Begins on 5a.

Beginning:

ओं अस्यश्री महाशास्तामहामन्त्रस्य । अर्धनारीश्वर ऋषि:,अनुष्टुप् छन्द:। महाशास्ता देवता ।

End:

अनेकरत्नमुक्ताभरणप्रियाय नम:। उग्ररूपाय नम: ।

R.No. 9493

Foll. 1.

सुब्रह्मण्यमन्त्र:

SUBRAHMANYA MANTRAḤ

Incomplete. Begins on 7a.

Beginning:

अस्य श्री सुब्रह्मण्यमहामन्त्रस्य काश्यपभगवान् ऋषि: अनुष्टुप् छन्द: । श्री सुब्रह्मण्यो देवता । सां बीजम् सीं शक्ति: सूं कीलकम् ।

End:

शरवणभव इति विलिख्य शूलं मा वृत्तं
दलम् 312 भूपुरं 4 . . .9 शूल -8- यन्त्रम् ।

R.No. 9494

Folio 1.

चिदम्बरपञ्चाक्षरमन्त्र:

CIDAMBARA PAÑCĀKṢARAMANTRAḤ

Complete.

Begins on 8a.

R.No. 9495

Folio 1.

महालक्ष्मीमन्त्रः

MAHĀLAKṢMĪ MANTRAḤ

Complete.

Begins on 10a.

R.No. 9496

Foll. 2.

शत्रुसंहारदुर्गापरमेश्वरीमन्त्रः

ŚASTRUSAMHĀRA DURGĀPARAMEŚWARĪ MANTRA

A mantra with illustrations of Yantra diagrams.

Begins on 10b.

R.No. 9497

Copied from a ms. of Meenakṣi Sundara Dīkṣitar S/o. Dandapani Dīkṣitar of Chidambaram in the year 1950-51. Transcribed by A.R. Krishnamācāriar (Madras-24).

Paper 31x25cms; foll. 86; lines 20 on a folio; Devanāgari; good; extent 2500 granthas.

चिदम्बरतत्वनिर्णयः

CIDAMBARA TATTVANIRṆAYAḤ

A treatise on Saivagama by Mīnākṣinātha son of Caṭṭanātha.

Contains second, third and fourth Vada. Complete. Author quotes Bhattojidīkṣita often.

Beginning:

कल्पसूत्रशिवागमैरुपहितो...श्रुतिशिवागम शब्दस्य पुराणप्रामाण्यव्यवस्थापनप्रकरणप्रमाणमूर्ध्नादि श्रौतपाशुपततन्त्राणीति निपुणतरमवोचन् ।

Colophon:

इति श्री पुण्डरीकपुरसंसदिनियताविर्भाव: दहरविद्योपास्यपञ्चकृत्यलीला धुरन्धरश्रीसभेश्वर पदाम्वुजनिरतस्य नागनाथपुण्डरीकश्रीकयज्वन: पौत्रस्य अद्वैतशास्त्रपारङ्ग.तस्य श्रीचट्टनाथस्य पुत्रेण मीनाक्षीनाथेन विरचिते श्रीचिदम्बरतत्वनिर्णले तन्त्रप्रामाण्यनिरुपणं नाम द्वितीयो वाद:।

End:

विशेषभावमात्रेण प्रसिद्धे सर्वसम्मता
विरोषणात् व्यवस्था स्थात् तच्च नेहोपपद्यते।
अतेऽपि सर्वधर्मत्वे सिद्धे केषांचिदत्र हि
अप्रवृत्या न दोपोऽस्ति आलस्यादिमतां तम: ।। इति
श्रीचट्टनाथविदूषा पुत्रेण हि विपश्चिता
निरूपितोऽयनमागमानां.....

इति श्रीपुण्डरीक ..... वैदिकानां परार्थपूजाधिकारित्वनिरूपणं नाम चतुर्थो वाद:

Scribe adds:-

चित्रभान्वाह्वये वर्षे कुम्भलग्नस्थिते रवौ
एकोनविंशतिदिवसे रेवत्यां बुधवासरे
अयं ग्रन्थस्सुलिखित: मातृकायां यथा तथा ।

In the year Citrabhānu, on Wednesday, Revati Star, when the sun was in Kumbalagna (19th day month Kumbha)

R.No. 9498

Transcribed from a Ms. of Upaniṣad bramendra Mutt., Big Canjeevaram in 1950-51, by Sri. S. Vaidyanathasastri.

Paper: 30x25cms; foll. 30; lines 25; Devanagari; good; extent 700 granthas.

मुक्तिशतकविवरणम्

MUKTIŚATAKA VIVARAṆAM

A work on Advaita philosophy by Upaniṣad bramendra Yogi. Otherwise known as Tripatra tattva Vivekavivaranaprakarana.

See Muktikopaniṣat; Ptd.

R.No. 9499

Transcribed from a Ms. of Upaniṣad bramendra Mutt, Big Canjeevaram, in 1950-51, by Sri. P. Bhāsyam.

Paper 30x25cms; foll. 62; lines 20 on a folio; Devanagari; good; extent 1500 granthas.

दत्तात्रेयगोरक्षकसंवाद:

DATTĀTREYA GORKṢAKA SAMVĀDAḤ

A portion from Dattatreya Samhita in which the principle of Brahman is discussed. It is in the form of conversation between Gorekṣaka and Dattātreya.

Incomplete.

I Prakaraṇa complete in 6 chapters.

(R.No. 9500- R.No. 9504 one bundle)

Presented by Sri V. Swaminātha Sarma, No. 2, Sir. Mohamed Usman Road, Tyagarajanagar, Madras-17.

R.No. 9500

Palm leaf 46x2.8cms; foll. 90; lines 12 ona folio; Grantha; very old; extent 6000 granthas.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Incomplete.

Contains only Balakānda, Kiskindha and Sundara Kānda.

R.No. 9501

Palm leaf; 42x3cms; foll. 134; lines 8 on a folio; Grantha; injured; old; extent 3500 granthas.

माघमाहात्यम्

MĀGHAMĀHĀTMYAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9502

Palm leaf 30x3.5cms; foll. 12; lines 2 on a folio; Grantha; injured; broken and old leaves; extent 280 grantha.

काशीमुक्तिविवेक:

KĀŚĪMUKTI VIVEKAḤ

R.No. 9503

Palm leaf 31.5x 2.5cms; foll. 44; lines 6 on a folio; Grantha; injured; extent 1000 granthas

ज्यौतिषग्रन्थ: - द्राविडटीकासहित:

JYAUTIṢAGRANTHAḤ - With Tamil Commentary.

Incomplete.

R.No. 9504

Palm leaf 45x3cms; foll. 90; lines 6 on a side; Grantha script; injured; 1500 granthas.

नामालिङ्ग.ानुशासनम् - द्राविडटीकासहितम्

NĀMALINGĀNUŚĀSANAM - WITH TAMIL MEANING

Sanskrit lexican otherwise known as Amarakośa.

Wants the beginning and end.

(R.No. 9505, R 9506 one bundle)

(Transcribed from a ms. of Upaniṣad bramendra Mutt, Mutheri Street, Big Canjeevaram, by Sri. P. Bhasyam in 1950-51)

Paper 31x25cms; foll. 10; lines 24 on a folio; Devanagari; extent 300 granthas.

भिदातमोमार्ताण्डशतकम् - रामचन्द्रः

BHIDATAMO MĀRTĀṆḌAŚATAKAM - RAMACANDRA

A work on Advaita philosophy.

Beginning:

स्वोद्भूतमायोत्थभिदाजगेन्द्र प्रभेदपञ्चास्यमपारबोधम्

त्रिपाद्विभूतीश्वररामचन्द्रं नमामि मायोत्थभिदा प्रशान्त्यै।।

स्वकल्पितानैकभिदाप्रपञ्चाधिष्टानमाद्यं निगमान्तवेद्यम् ।

कालत्रयाबाध्यमपारसौख्यं श्रीवासुदेवेन्द्रगुरुं भजेऽहम्।।

End:

जगद्भिदाध्वान्तदिवाकराख्य

प्रचण्डतात्पर्यविशारदो यः ।

स भेदविश्वभ्रमवर्जितस्सन्

त्रिपात्परब्रह्मतयावतिष्ठेत् ।।

श्रीवासुदेवेन्द्रपदारविन्दमरन्दसंतृप्तमहाशयेन ।

श्रीरामचन्द्रेण भिदान्धकारमार्ताण्डसंज्ञं शतकं कृतं स्यात्।।

R.No. 9506

Foll. 26; lines 25; extent 650 granthas.

ब्रह्मतारषोडशभूमिका

BRAHMATĀRAṢOḌAŚABHŪMIKĀ

A work on the significance of Brahman and Praṇava.

Incomplete.

Beginning:

तुर्यतुर्यपदारूढं ब्रह्मप्रणवलक्षणम् ।

तुर्यतुर्यं नमस्कुर्वे रामचन्द्राभिधं महः ।।

यदज्ञानदयं मोहो भवेद्यत् ज्ञानमात्रतः

निर्मोहब्रह्मभूत: स्यात्तं त्रिपाद्देशिकं भजे ।।

. . . .

ब्रह्मण: प्रणवस्यापि विशेषणविशेष्यत:
लक्ष्यलक्षणयोगाच्च ब्रह्मप्रणव उच्यते ।

End:

अन्यावलम्बो भवतीत्येवमीर्ष्या परा इव ।
आरुह्य प्रथमं सम्यक् सोपानं तदनन्तरम् ।।

परं परं समालम्ब्य ह्युन्मूलाध: प्रतिष्ठितान् ।
ऐन्द्रजालिकवत्सर्वसोपानात्सौधसंयुतान् ।।

R.No. 9507

Transcribed from a Ms. of Upaniṣad bramendra Mutt, Cañjeevaram, in the year 1950-51.

Paper; 30.1x24.5cms; foll. 182; lines 24 on a page; Devanāgari; good; extent 2500 granthas.

नवरत्नप्रभा

NAVARATNA PRABHĀ

Hymns on Śrirāma in alphabhetical order. (Ādikṣānta) and also describes Rāma as Supreme Soul (Brahman).

Beginning:

ओं श्रीमद्विश्वाधिष्ठान परमहंससद्गुरुश्रीरामचन्द्राय नम:
ध्यात्वा यं हृदये रामचन्द्रं योगिणोऽन्वहम् ।
विदेहमुक्तिपदवीं याति तस्मै नमो नम: ।।

सर्ववेदान्तवेद्याय वासुदेवेन्द्रयोगिने ।
सर्वभूतनिवासाय देशिकाय नमो नम: ।।

Colophen

नवरत्नमयीमाला गता सम्पूर्णतामिह

श्रीमत्परमहंसेय पूर्णचारित्रशलिन:
सर्वभूतगुहावास वासुदेवेन्द्रयोगिन:
पादपङ्क:जसम्भूत मकरन्दैकजीविना
शिष्येण रामाचन्द्रयोगिना वीतरागिणा ।।

R.No. 9508

Transcribed from a Ms. of Upaniṣad brahmendra Mutt, Canjeevaram in the year 1950-51 by Sri. G. Subrmania Sastry.

Paper 33.5x21cms; foll. 83; lines 24 on a folio; Devanāgari; good; extent 1500 granthas.

परमाद्वैतानुकूलस्मृत्यादिसङ्ग्रह:

PARAMĀDVAITĀNUKŪLA SMṚTYĀDI SAṆGRAHA

Complete.

Deals with Smṛti which support the Advaita philosophy.

Beginning:

स्वविद्यापदतत्कार्यकलनोन्मुक्तवैभवम्
त्रैपदश्रीरामतत्वं हृदये जयतु स्वयम्
नत्वा गुरुं ब्रह्ममात्र प्रबोधफलमिच्छताम्
नानास्मृतियामलादिसारं सङ्गृह्यतेऽधुना ।।

End:

निराधेयमनाधारं परमाद्वैतलक्षणम् ।
विकलेबरकैवल्यं स्वमात्रमवशिष्यते ।।
इति षोडशांश: परमाद्वैतानुकूलस्मृत्यादिसङ्ग्रहं सम्पूर्णम् ।

(R9509, 9510 one bundle)

R.No. 9509

Transcribed in 1950-51 by Sri C.N. Subramanya Sastri from a Ms. of R.D. Sanskrit College, Madura)

ʼaper 30.3x21cms; foll. 5; lines 24 on a folio; Devanāgari; extent 150 granthas.

महालिङ्.ार्चनक्रम:

MAHĀLINGĀRCANA KRAMAḤ

Complete.

The method of Worship of Mahālinga which is portion of Śivapurāṇa.

R.No. 9510

(Transcribed by Sri R. Krishnamūrti from a Ms. of R.D. Pataśāla, Madura)

स्वरमञ्चरी परिभाषा

SVARAMANJARĪ PARIBHĀṢĀ

Begins on 6a.

A commentary on Vedic accental in alphabhetical order from अ to फ.

(R.No. 9511, R 9512 one bundle)

(Copied in 1950-51 from a ms. of Upaniṣad bramendra Mutt, Mutheri Street, Kancipuram, by A.R. Krishnamachariar, Madras-24)

Paper 30.3x21cms; foll. 43; lines 24; Devanāgari; good; extent 700 granthas

तत्त्वज्ञानविवरणम्

TATTVAJÑĀNAVIVARAṆAM

A treatise on Advaita by Upaniṣad brahmayogi.

Beginning:

स्वविद्यापदतत्कार्यध्वान्तमार्ताण्डमूर्तये

नमःस्वज्ञानसंवेद्य त्रिपान्नारायणाय ते ।।

यत्पारमार्थिकज्ञानात् कैवल्यं यान्ति सूरयः ।

नमान्त्य तु तज्ज्ञानं सत्तासामान्यगोचरम् ।।

End:

त्रिपात्तत्वविवेकोऽयं द्व्यशीतिग्रन्थसंमितः ।
इति श्रीवासूदेवेन्द्रशिष्योपनिषद्ब्रह्मयोगिना लिखितोऽयं त्रिपात्तत्वविवेकविवृतिर्बुधाः ।

R.No. 9512

(Transcribed by P. Bhāṣyam from Ms. Upaniṣadmatham, Kanchi)
Foll. 14; lines 24; extent 200 granthas.

तरङ्ग.चन्द्रोदयः

TARANGA CANDRODAYAḤ

Hymns on Lord Rāmacandra in musical form in different Rāgas, each piece is known as Taranga.

Begins on 45a.

Beginning:

आह्वानतरङ्ग.म् - नाटरागम्

स्वांराजब्रह्मविष्णवंश भावितानन्दमूर्तये
परिपूर्णत्रिपाद्भूति रामचन्द्राय ते नमः ।।
आगच्छागच्छ मे कैवल्यं दातुं त्रिपाद्विभूति श्रीरामचन्द्र
पवमानपुत्र भावितगात्र पूतचरित्र सीताकलत्र।

End:

द्व्यषट परिपूर्णश्रीरामचन्द्रकलातरङ्ग.ये गायन्ति
श्रीरामचन्द्रकृपया विमुक्ता विदेहकैवल्यं ते यान्तिसूनृतभाषण।।

R.No. 9513

(Presented by Sri. G. Govindachar, clerk Taluq Office, Harapanahalli, Bellary Dist.)

Palm leaf 32x3.5cms; foll. 32; lines 7 on a folio; Telugu script; very old; extent 1000 granthas.

तर्कसुधा

TARKA SUDHĀ

A treatise on Nyāya.

Incomplete.

Similar to the work described under D4190.

R.No. 9514

Palm leaf 42x3.2cms; foll. 150; lines 7 on a folio; Nandinagari; old; extent 4000 granthas.

निर्णयसिन्धुः - कमलाकरभट्टः

NIRṆAYA SINDHUḤ - KAMĀLAKARA BHAṬṬA

Complete.

Same as described under R.No. 1080.

(R.No. 9515, R.No. 9516 one bundle)

R.No. 9515

Presented by Sri. G. Govindāchar, clerk, Taluq Office, Harapanahalli, Bellari Dist.

Palm leaf 42x3cms; foll. 54; lines 6 on a folio; Telugu; old; extent 2000 granthas.

न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका - तर्कप्रकाशिका

NYĀYA SIDDHĀNTHA MAÑJARĪ DĪPIKĀ - TARKAPRAKĀŚIKĀ

A work on Nyāya by Sitikaṇṭha

Incomplete.

Contains only Anumānakhaṇḍa

R.No. 9516

Foll. 9; extent 300 granthas.

विषयतावादः

VIṢAYATĀVĀDAḤ

Deals with Viṣaya, which is one among 7 Padarthas.

Complete.

Begins on 54a.

R.No. 9517

Palm leaf 30x3.2cms; foll. 120; lines 6 on a folio; Telugu; much injured; extent 3000 granthas.

सूर्यसिद्धान्तः

SŪRYASIDDHĀNTAḤ

The celebrated work on Astronomy.

Printed.

Incomplete.

R.No. 9518

(Presented by Sri. N.G. Sastry, Head Master, Board High Schools (Boys) Polanuru, (via) Perumantra, West Godavari Dist.)

A treatise on Mantra taken from Rudrayamala.

Palm leaf 43.5x4cms; foll. 33; lines 10 on a folio; Telugu; old; extent 2000 granthas.

कल्पकौस्तुभः

KALPAKAUSTUBHAḤ

Beginning:

शिवां जगद्धात्री जगदम्बां परात्परां
नमाम्यहं महादेवीं महात्रिपुरसुन्दरीम् ।।
सर्वकामप्रदातारं भक्तानामभयप्रदम्
आदिमध्यान्तरहितं . . . प्रणमाम्यहम् ।।
सिद्धलक्ष्मीसमायुक्तं ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम्
महागणपतिं वन्दे सर्वविघ्नविनाशनम् ।।
चिदानन्दात्मकं वन्दे त्रिपुराग्रजमीश्वरम् ।
नमामि श्रीमहाविष्णुं शङ्खचक्रगदाधरम् ।।

Colophon:

इति श्रीरुद्रयामले महाविद्योद्धारकव्रतकौस्तुभे प्रथमः पटलः

End:

इति रुद्रयामले पार्वतीपरमेश्वरसंवादे सिद्धागमतन्त्रे महाविद्यानिरूपणं नाम एकोननवतितम: पटल: ।
अस्मिन् वर्तमानव्यवहारिक चान्द्रमान दुन्दुभिनामसंवत्सर...
आदित्यवारं ... महाविद्यापुस्तकं .....

R.No. 9518a

Foll. 10; extent 100 granthas.

महाविद्यावनदुर्गास्तोत्रमन्त्र:

MAHĀVIDYĀVANADURGĀ STOTRAMANTRA

Complete.

Ptd.

R.No. 9518b

Foll. 4; extent 50 granthas.

आसुरीमन्त्र:

ASURĪMANTRAḤ

Complete.

The last folio of the bundle contains tables of astrology.

R.No. 9519

Palm leaf; foll. 90; lines 7 in a folio; Telugu; very old; extent 2000 granthas.

अध्यात्मरामायणम्

ADHYĀTMA RĀMĀYAṆAM

In complete - only Kiskindha to Yudhakāṇḍa.

R.No. 9520

Palm leaf; 45x3.1cms; foll. 35; lines 6 on a folio; Telugu; old; extent 800 granthas.

प्रयोगपद्धतिः

PRAYOGAPADDHATI

Incomplete.

R.No. 9521

R No.9521 and R9521a

Palm leaf 44.5x 4cms; foll. 6; lines 8 on a folio; Telugu; old; extent 250 granthas.

नमकचमकम्

NAMAKACAMAKAM

Ptd.

R.No. 9521a

Foll.12; extent 500 granthas

कृष्णयजुर्वेदारुणम्

KRṢṆAYAJURVEDĀRUṆAM

Incomplete.

Begins folio 6a.

6 leaves left blank in the end.

R.No. 9522

Palm leaf; 44x4cms; foll. 44; lines 8 on a folio; Telugu; old; extent 2000 granthas.

स्मार्तप्रयोगः

SMĀRTAPRAYOGAḤ

Contains Pūrvaprayoga's of Smārta.

Ptd.

(R.No. 9523 - 9524 one bundle)

R.No. 9523 (a)

Palm leaf 42x3.5cms; foll. 4; lines 7 on a folio; Telugu; old; extent 50 granthas.

शरीरकोपनिषत्

ŚARĪRAKOPANIṢAT

Complete.

R.No. 9523

Foll. 8; lines 6 on a folio; extent 120 granthas.

आत्मानात्मविवेक:

ĀTMĀNĀTAMA VIVEKAḤ

An advaitic treatise by Sri Śankaracarya.

Complete.

R.No. 9524

Foll. 24; extent 250 granthas.

आत्मबोध:-दीपिकाव्याख्यासहित:

ĀTMĀBODHAḤ - WITH DĪPIKĀVYĀKHYĀ

Complete.

R.No. 9525

Palm leaf 45x4.5cms; foll. 30; lines 8 on a folio; Telegu; good; extent 1500 granthas.

दर्शपूर्णमासप्रयोग:

DARŚAPŪRṆAMĀSAPRAYOGAḤ

Deals with Prayoga; the method of performing Yāgas.

R.No. 9526

Palm leaf 42.5x3cms; foll. 32; lines 7 on a folio; Telugu; ;good; extent 1200 granthas.

प्रयोगपद्धति:

PRAYOGAPADDHATI

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9527

Palm leaf 37x3.4cms; foll. 52; lines 6 on a folio; Telugu; good; extent 1000 granthas.

TAMIL NADU STATE DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY
LIBRARY.
Acc No.----
Date----
MADRAS-28.

तैत्तिरीयोपनिषत्

TAITTIRĪYOPANIṢAT

Complete.

Printed.

R.No. 9528

Palm leaf 47.5x3.3cms; foll. 65; lines 5 on a folio; Telugu; old; worm eaten; extent 1500 granthas.

गौरीपञ्चाङ्गम्

GAURĪPAÑCĀNGAM

A section of Hindu calender

Same as D13554.

Complete. Contains many other aspects related to Pancanga.

R.No. 9529

Foll 49; 40x2.5 cms.,Lines 7 on apage .Telugu, Old, Worm- eaten

शुद्धिचन्द्रिका

SUDDHICANDRIKĀ

Palm leaf.

R.No. 9530, R.No. 9530(a) one bundle

R.No. 9530

Palm leaf (Śrītāla) 46x4.5cms; foll. 16; lines 9 on a folio; Telugu; good; extent 1000 granthas.

ब्रह्ममेधसंस्कारः

BRAHMAMEDHASAMSKĀRAḤ

Deals with the method of cremation of a man who is a Vedic Scholar.

Ptd.

R.No. 9530(a)

Foll. 4; lines 9; 200 granthas.

लोष्टचयनम्

LOSṬACAYANAM

A chapter from Aparaprayoga.

Ptd.

R.No. 9531-R.No. 9559

R.No. 9531

Presented by Sri. N.A. Subramania Iyer; General Merchant; Nangavalli, Salem dist.

Palm leaf 39x3cms; foll. 28; lines 9 on a folio; grantha; old; extent 1000 granthas.

रुद्रभाष्यम्

RUDRABHĀṢYAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9532

Palm leaf 27x2.5cms; foll. 12; lines 6 on a folio; Grantha; old.

गीतानि

GĪTĀNI

Musical pieces of Nārayaṇatīrthā's Taraṅgiṇi and also some miscellaneous works.

Incomplete.

R.No. 9533

Palm leaf 35.5x3cms; foll. 12; lines 6 on a folio; Grantha; extent, 2800 granthas.

नामलिङ्गानुशासनम्

NĀMALINGĀNUŚĀSANAM

Incomplete

Ptd.

R.No. 9534

Palm leaf 43.5x2.5cms; foll. 200; lines 7,6 on a folio; Grantha; very old & worm eaten; extent 7500 granthas.

तैत्तिरीयब्रह्मणम्

TAITTIRIYABRĀHMAṆAM

Complete.

Ptd.

(R.No. 9535, 9535a, 9535b one bundle)

R.No. 9535

Palm leaf 19.5x3.5cms; foll. 9; lines 6 on a folio; Grantha; old; extent; 80 granthas.

लक्षवर्त्तिव्रतकल्पः

LAKṢAVARTI VRATAKALPAḤ

A Vṛata done by lighting lakhs of oil lamps retoid from Vayupurana for the welfare of the family.

Beginning:

विघ्नेश्वरपूजा पुण्याहवाचनं पञ्चगव्यनान्दीञ्च कृत्वा सङ्कल्प्य शुभे शोभने पञ्चम्यां शुभतिथौ परमेश्वरप्रीत्यर्थ इह जन्मनि जन्मान्तरेषु मनसा वाचा रहसि प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थ इह जन्मनि परद्रव्यापहरणदि.... वायुपुराणोक्तलक्षवर्ति व्रत ....

End:

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः। वायुपुराणोक्तलक्षवर्तिव्रतकल्पं सम्पूर्णम् ।

R.No. 9535a

Foll.10; lines 7 on a folio; extent 100 granthas.

प्रदोषव्रतोद्यापनविधि:

PRADOṢAVRATODYĀ PANAVIDHIDḤ

Complete.

Begins on 9a.

Ptd.

R.No. 9535(b)

Foll. 5; lines 7; extent 50 granthas.

त्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि:

TRIPURASUNDARI PŪJĀVIDHIḤ

Complete.

Begins on 19a.

Ptd.

R.No. 9536

Palm leaf 37x3cms; foll. 46; lines 7 on a folio; Grantha; old; extent 1500 granthas.

बोधायनपूर्वप्रयोग:

BODHĀYANAPŪRVAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9537

Palm leaf 24x3cms; foll. 36; lines 6 on a folio; Grantha; very old; worm eaten; extent 500 granthas.

पञ्चाङ्गम्

PAÑCANGAM

Hindu calender for the year Pramodūta

Complete.

R.No. 9538

Palm leaf 40x3cms; foll. 160; lines 7 on a folio; Grantha; much injured old; worm eaten; extent 4500 granthas.

प्रायश्चित्तम्

PRĀYAŚCITTAM

Complete.

Many folios left blank in the end.

(R.No. 9539, R.No. 9539(a) one bundle)

R.No. 9539

Palm leaf 32x3cms; foll. 8; lines 7 on a folio; Grantha; old and worm eaten; broken leaves; extent 150 granthas.

नक्षत्रनिघण्टुः

NAKṢATRA NIGHANṬU

Astronomical work which deals with 27 stars or asterics.

Incomplete.

R.No. 9539(a)

Foll. 16; extent 300 granthas.

रुद्रप्रश्नभाष्यम्

RUDRAPRAŚNABHĀṢYAM

Incomplete. Begins on 8a.

Ptd.

Many leaves are left blank after 9th folio.

R.No. 9540

Palm leaf 53x3cms; foll. 255; lines 7 on a folio; Grantha; old and injured; extent 10,000 granthas.

पाञ्चरात्रागमः

PĀNCARĀTRĀGAMAḤ

Incomplete.

Ptd.

(R.No. 9541, 9542 one bundle)

R.No. 9541

Palm leaf 24x2.8cms; foll. 1; lines 5 on a folio; Grantha; old; extent 90 granthas.

शिवानन्दलहरी

ŚIVĀNANDALAHARĪ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9542

Foll. 28; lines 6 on a folio; extent 310 granthas.

अष्टपदी

AṢṬAPADĪ

Incomplete contains only 6. Aṣṭapadis.

Begins on 2a.

In the end leaves contain Telugu musical renderings.

R.No. 9543

Palm leaf 45.5x3cms; foll. 230; lines 9 on a folio; old; worm eaten; Grantha; extent 7700 granthas.

तैत्तिरीयब्राह्मणम्

TAITTIRĪYA BRĀHMAṆAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9544

Palm leaf 50x2.5cms; foll 329; lines 8 on a folio; grantha script; much injured; extent 9475 granthas.

तैत्तिरीयसंहिता

TAITTIRĪYA SAMHITĀ

Complete.

Ptd.

R.No. 9545

Palm leaf 38x2.5cms; foll. 221; lines 8 on a folio; Grantha; worm eaten; injured; extent 7,700 granthas.

तैत्तिरीयब्राह्मणम्

TAITTIRĪYA BRĀHMAṆAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9546 - R.No. 9547(b) one bundle.

R.No. 9546, 9546(a), 9546(b), 9547, 9547(a), 9547(b)

R.No. 9546

Palm leaf 43x3cms; foll.85; lines 8 on a folio; Grantha script; much injured; extent 2550 granthas.

तैत्तिरीयारण्यकम्

TAITTIRĪYĀRAṆYAKAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9546(a)

Foll. 26; lines 8; extent 720 granthas.

कृष्णयजुर्वेदकाठकम्

KṚṢṆAYAJURVEDA KĀṬHAKAM

Complete.

Begins on 85a.

Ptd.

R.No. 9546(b)

Foll. 30; extent 825 granthas

कृष्णयजुर्वेदारण्यकम्

KṚṢṆAYAJURVEDĀRAṆAYAKAM

Complete.

Begins on 111a.

R.No. 9547

23.5x2.5cms; foll. 2; lines 6 on a folio; Grantha; extent 30 granthas.

शक्तिपञ्चाक्षरीमन्त्रः

ŚAKTIPAÑCĀKṢARĪMANTRAḤ

Complete.

Begins on 131(a). Ptd.

R.No. 9547 (a)

Foll. 2.

सूर्यनमस्कारमन्त्रः

SŪRYANAMSKĀRAMANTRAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9548

Palm leaf 39x3.5cms; foll. 4; lines 7 on a folio; Grantha script; old injured; extent 70 granthas.

बोधाययनश्राद्धप्रयोगः

BODHĀYANA ŚRĀDDHA PRAYOGRḤ

Complete.

4 folios in the beginning and 3 in the end are left blank.

R.No. 9549

(This bundle contains 4 works)

(R9549a, b, c)

Palm leaf 28x3.8cms; foll. 2; lines 5 on a folio; Grantha; good; extent 30 granthas.

नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः

NRSIMHAṢTOTTARAŚATANĀMĀVALI
Complete.

R.No. 9549(a)

Foll. 3; extent 30 granthas.

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः
LAKSHMYAṢTOTTARAŚATANĀMĀVALI
Complete. Begins on 4a.
Ptd.

R.No. 9549(b)

Foll. 4; lines 4 on a folio; extent 28 granthas.

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः
LAKSHMYAṢTOTTARAŚATANĀMĀVALI
Complete.
Begins on 7a.
Same as above. Ptd.

R.No. 9549(c)

Foll. 3; lines 6 on a folio; extent 25 granthas.

नृसिंहष्टोत्तरशतनामावलिः
NṚSIMHĀṢTOTTARAŚATANĀMĀLVAI
Complete.
Begins on 11a.
Ptd. Same as 9549

R.No. 9550

Palm leaf 24.5x3.2cms; foll.46; lines 6 on a folio; Grantha; old, worm eaten; extent 550 granthas.

पञ्चाङ्ग.म्
PAÑCĀṆGAM

Hindu calender for the year Kilaka.

Complete.

(R9551, a,b,c,d,e,f,g one bundle)

R.No. 9551

Palm leaf 42x3.5cms; foll. 3; lines 7 on a folio; Grantha; worm eaten; extent 80 granthas.

सरस्वतीव्रतकल्पः

SARASWATĪ VRATAKALPAḤ

Complete. First two folios are left blank.

Ptd.

R.No. 9551(a)

Foll. 6; lines 7 on a folio; extent 160 granthas.

रामनवमीव्रतकल्पः

RĀMANAVAMĪ VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 3a.

Ptd.

R.No. 9551(b)

Foll. 2; lines 7 on a folio; extent 50 granthas.

धात्रीकल्पः

DHĀTRĪKALPAḤ

Complete. Begins on 9a.

Ptd.

R.No. 9551(c)

Foll. 2; lines 8 on a folio; extent 70 granthas.

स्वर्णगौरीव्रतकल्पः

SWARṆAGAURĪ VRATAKALPAḤ

Complete.

Ptd.

Begins on 11a.

R.No. 9551(d)

Foll. 5; lines 9 on a folio; extent 120 granthas.

विनायकव्रतकल्पः

VINĀYAKA VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 13a.

Ptd.

R.No. 9551(e)

Foll. 1; lines 9 on a folio; extent 40 granthas.

शिवरात्रिव्रतकल्पः

ŚIVARĀTRI VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 18a.

Ptd.

R.No. 9551(f)

Foll.2; lines 9; extent 25 granthas.

कामाक्षीव्रतकल्पः

KĀMĀKṢĪ VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 19b.

R.No. 9551(g)

Foll.2; lines 9 on folio; extent 3 granthas.

कृष्णजयन्तीव्रतकल्पः

KṚṢṆAJAYANTĪ VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 21b.

Ptd.

R.No. 9552

Palm leaf 40x2.9cms; foll. 17; lines 6 on a folio; grantha; old; worm eaten; extent 185 granthas.

बोधायनापरम्

BODHĀYANĀPARAM

Incomplete. 4 folios are left blank.

Ptd.

R.No. 9553

(This bundle contains 36 works)

R.No. 9553

Palm leaf; 20x4cms; foll. 6; lines 12 on a folio; grantha; very much injured; worm eaten; extent 120 granthas.

गायत्रीहृदयम्

GĀYAṬRĪ HṚDAYAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9553(a)

Fol. 1; 20 granthas.

गायत्रीकवच:

GĀYATRĪ KAVACAḤ

Complete.

Begins on 6a.

Ptd.

R.No. 9553(b)

Fol. 1; 20 granthas.

गायत्रीमालामन्त्रः

GAYATRĪ MĀLĀMANTRAḤ

Complete.

Begins on 7a.

Ptd.

R.No. 9553(c)

Foll. 2; extent 50 granthas.

गायत्रीरामायणम्

GĀYATRĪ RĀMĀYAṆAM

24 stanzas with each 24 succession letters of Gayatrimantra.

Same work as that described under R4800.

Complete.

Begins on 8a.

R.No. 9553(d)

Foll. 2; extent 50 granthas.

आदित्यहृदयम्

ĀDITYAHṚDAYAM

Complete.

Begins on 10a

Ptd.

R.No. 9553(e)

Foll. 2; extent 50 granthas.

नदीस्तोत्रम्

NĀDĪSTOTRAM

Complete.

Begins on 12a.

R.No. 9553(f)

Foll. 10; extent 250 granthas.

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

VIṢṆUSAHASRANĀMASTOTRAM

Complete.

Begins on 14a.

Ptd.

R.No. 9553(g)

Foll. 8; extent 200 granthas.

बालरामायणम्

BALARĀMĀYAṆAM

Contains Bālakanda of Samsksepérāmāyana - brief rendering of Ramayana.

Complete.

Begins on 23(a)

Ptd.

R.No. 9553(h)

Foll. 9; extent 270 granthas.

नमकचमकम्

NAMAKACAMAKAM

Complete..

Begins on 30a.

Ptd

R.No. 9553(i)

Foll.3; extent 70 granthas.

पुरुषसूक्तम्

PURUṢASŪKTAM

Complete.

Begins on 38a.

Fol. 40b; contains a medicinal work in Tamil language.

R.No. 9553(j)

Foll.5; extent 250 granthas.

रामकवचः

RĀMAKAVACAḤ

Complete. Begins on 41(a)

Ptd.

R.No. 9553(k)

Fol.1.

हनुमत्स्तोत्रम्

HANUMAT STOTRAM

Complete.

Begins on 45a.

Ptd.

R.No. 9553(l)

Foll. 6; extent 275 granthas.

शत्रुसंहारदेवीकवचः

ŚASTRUSAMAHĀRADEVĪ KAVACAḤ

Complete. Mantras to destroy enemies and evils.

Begins on 46a.

Ptd.

R.No. 9553(m)

Foll. 1.

इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

INDRĀKṢĪTOTRAM

Complete.
Begins 52a.
Ptd.

R.No. 9553(n)

Foll.5; extent 200 granthas.

शिवकवचः

ŚIVAKAVACAḤ

Complete.

Begins on 53(a).

Ptd.

R.No. 9553(o)

Foll. 2.

सुब्रह्मण्यकवचः

SUBRAḤMAṆYAKAVACAḤ

Complete.

Begins on 57a, 58th folio is half broken.

Same as D 17010.

Ptd.

R.No. 9553(p)

Foll. 1.

पञ्चमुखहनूमन्मालामन्त्रः

PAÑCAMUKHA HANŪMAN MĀLĀ MANTRAḤ

Complete. Begins on 59(a).

Ptd.

R.No.9553(q)

Foll. 1.

हनुमत्कवचः

HANŪMAT KAVACAḤ
Complete.
Begins on 60(a).
Ptd.

R.No. 9553(r)

Foll. 2.

हनूमन्मालामन्त्रः
HANŪMAN MĀLĀMANTRAḤ
Complete.
Begins on 61(a).
Ptd.

R.No. 9553(s)

Foll. 2.

गरुडपञ्चाक्षरीमन्त्रः
GARUḌĀPAÑCAKṢARĪMANTRAḤ
Complete.
Begins on 63(a)

R.No. 9553(t)

Foll. 1.

गरुडमालामन्त्रः
GARUḌĀMĀLĀ MANTRAḤ
Complete.
Begins on 65(a)
Ptd.

R.No. 9553(u)

Foll. 1.

गरुडकवचः
GARUḌĀKAVACAḤ

Complete.
Begins on 66(a). Ptd.

R.No. 9553(v)

Foll. 2.

गरुडमालामन्त्रः
GARUḌĀMĀLĀ MANTRAḤ
Complete.
Begins on 67(a).
Ptd.

R.No. 9553(w)

Foll. 2.

द्वादशमञ्जरिकास्तोत्रम्
DVĀDAŚAMANJARIKĀSTOTRAM
Otherwise known as Bhajagovindam by Sri. Śankarācarya.
Complete.
Begins on 69a.
Ptd.

R.No. 9553(x)

Foll. 1.

विश्वेश्वराष्टकम्
VISVEŚWARĀṢṬAKAM
Complete.
Begins on 71(a).
Ptd.

R.No. 9553(y)

Foll. 1.

कालभैरवाष्टकम्
KĀLABHAIRAVĀṢṬAKAM

Complete.
Begins on 72(a)
Ptd.

R.No. 9553(z)

Foll. 1.

अन्नपूर्णेश्वर्यष्टकम्

ANNAPŪRṆEŚWARAYAṢṬAKAM

Complete.

Begins on 73(a).

Ptd.

R.No. 9553(a-1)

Foll. 1.

मणिकर्णिकाष्टकम्

MAṆIKARṆIKĀṢṬAKAM

Complete.

Begins on 74a.

R.No. 9553(a-2)

Foll.2.

त्रिवेणीदशकम्

TRIVEṆĪDAŚAKAM.

10 stanzas invocating the sacred Triveni Sangam by Sri Śankaracarya.

Complete. Same as D 9379.

Begins on 75a.

Ptd.

R.No. 9553(a-3)

Foll.9; 200 granthas.

पञ्चक्रोशमाहात्म्यम्
PAÑCAKROŚAMĀHĀTMYAM
Otherwise known as Gaya Mahatmyam.
It also deals with the method of worshipping in Kāśī etc.

R.No. 9553(a-4)

Fol.1.
शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः
ŚIVĀSTOTTARA ŚATANĀMĀVALIH
Complete.
Begins on 85a.
Complete.
Ptd.

R.No. 9553(a-5)

Foll. 1.
ब्रह्मयज्ञप्रयोगः
BRAHMAYAJÑA PRAYOGAḤ
Complete.
Begins on 86a.

R.No. 9553(a-6)

Foll. 3; extent 50 granthas.
गयाषोडशमन्त्रः
GAYĀṢOḌAŚAMANTRAḤ
Complete.
Begins on 87a.

R.No. 9553(a-7)

Foll. 15; extent 200 granthas.

गीतगोविन्दम्

GITAGOVINDAM

Complete.

Begins on 90a.

R.No. 9553(a-8)

Foll. 35; extent 450 granthas.

भगवद्गीता

BHAGAVADGĪTĀ

Incomplete.

Begins on 105a.

R.No. 9553(a-9)

Foll. 15; extent 200 granthas.

उत्तरगीता

UTTARAGĪTĀ

Incomplete.

Contains 4 chapters only. Begins on 145a.

R.No. 9554

(This bundle contains 7 works)

(R9554 - R9554(f))

Palm leaf 42x4cms; foll. 14; lines 9 on a folio; grantha; old; extent 450 granthas.

सामोपाकर्मप्रयोगः

SĀMOPĀKARMAPRAYOGAḤ

Complete.

Ptd.

R.No.9554(a)

Foll. 4; extent 100 granthas.

इतिहासोपनिषत्

ITIHĀSOPANIṢAT
Complete.
Ptd.

R.No. 9554(b)

Foll.32; extent 2500 granthas.

प्रयोग:
PRAYOGAḤ
Contains both Pūrva and Aparaprayogas. Begins on 18a.
Complete.

R.No. 9554(c)

Foll.2.

नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलि:
NṚSIMHĀṢTOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ
Complete. Begins on 83a.
Ptd.

R.No. 9554(d)

Foll. 4; extent 30 granthas.

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि:
LAKṢMYAṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ
Complete.
Begins on 85a.

R.No. 9554(e)

Fol. 1.

श्रीसूक्तम्
ŚRĪSŪKTAM
Complete.

Begins on 88a.

Ptd.

R.No. 9554(f)

Fol.2.

भूसूक्तम्

BHŪSŪKTAM

Complete.

Begins on 89(b)

R.No. 9555

Palm leaf; foll. 120; lines 9 on a folio; Grantha; old injured, worm eaten; extent 3400 granthas.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Incomplete.

From Ayodhyakānda to Āranyakānda.

Wants the beginning of Ayodhyakānda.

R.No. 9556

(R 9566 - R 9556e and R 9557 - R 9557 h one bundle)

Palm leaf 32x2cms; foll. 12; lines 10 on a folio; old; extent 225 granthas.

विष्णुसहस्रनामावलिः

VIṢṆUSAHASRANĀMĀVALIḤ

Complete.

R.No. 9556 (a)

Foll. 4; lines 6 on a folio; extent 45 granthas.

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः

LAKṢMYṢṬTTARAŚATANĀMĀVALIḤ
Complete.
Begins on 12a.

R.No. 9556(b)

Foll. 4; extent 40 granthas.

नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः

NṚSIMHĀṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALI
Complete.
Begins on 16a.

R.No. 9556(c)

Foll. 4; extent 45 granthas.

कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः

KṚṢṆAṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ
Complete.
Begins on 18b.

R.No. 9556(d)

Foll. 4; extent 45 granthas.

विनायकाष्टोत्तरशनामावलिः

VINĀYAKĀṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ
Complete.
Begins on 21a.
Ptd.

R.No. 9556(e)

Foll. 4; extent 50 granthas.

सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः

SARASWATYAṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ

Complete.
Begins on 23a.
Ptd.

R.No. 9557

Foll. 3; lines 7 on a folio; extent 45 granthas.

सन्तानगोपालपूजाविधि:

SANTĀNAGOPĀLAPŪJĀVIDHI

Complete.
Begins on 26a.

R.No. 9557(a)

Foll. 3; extent 45 granthas.

विनायकव्रतकल्प:

VINĀYAKAVRATAKALPAḤ

Complete.
Begins on 29(b)

R.No. 9557(b)

Foll. 3; extent 40 granthas.

सरस्वतीकल्प:

SARASWATĪ KALPAḤ

Begins on 32(b).

R.No. 9557(c)

Foll. 3; extent 45 granthas.

शिवरात्रीव्रतकल्प:

ŚIVARĀTRI VRATAKALPAḤ

Complete.
Begins on 35(c).

R.No. 9557(d)

Foll. 4; extent 50 granthas.

वरलक्ष्मीव्रतकल्पः

VARALAKṢMĪ VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 38a.

Ptd.

R.No. 9557(e)

Foll. 3; extent 45 granthas.

अश्वत्थव्रतकल्पः

AŚWATHA VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 42(a).

Ptd.

R.No. 9557(f)

Foll. 6; extent 80 granthas.

अनन्तव्रतकल्पः

ANANTAVRATAKALPAḤ

A Vṛta observed in praise of Lord Viṣṇu in the form of Ananta.
Incomplete; contains only Yamunapuja which is performed in many Vṛatas.
Begins on 45(a).

R.No. 9557(g)

Foll. extent 85 granthas.

ऋषिपञ्चमीव्रतकल्पः

ṚṢIPAÑCAMĪ VRATAKALPAḤ

Complete.

Begins on 51(a).

Ptd.

R.No. 9557(h)

Foll. 11; extent 140 granthas.

अमासोमवारव्रतोद्यापनम्

AMĀSOMAVĀRAVRATODYĀPANAM

Incomplete.

Begins on 57(a).

Ptd.

R.No. 9558

Palm leaf 31x2.8cms; foll. 8; lines 7 on a folio; Grantha; extent 140 granthas.

भारद्वाजपितृमेधसूत्रम्

BHĀRADWĀJA PITṚMEDHASŪTRAM

Incomplete.

R.No. 9559 - R 9559(b) one bundle.

R.No. 9559

Foll.2; extent 20 granthas.

सिंहानुवाकः

SIMHĀNUVĀKAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9559(a)

Foll. 2; extent 25 granthas.

नवग्रहाराधनविधिः

NAVAGRAHĀRĀDHANAVIDHIḤ

Incomplete.

R.No. 9559(b)

Foll. 5; extent 50 granthas.

पुत्रस्वीकारविधिः

PUTRASVĪKĀRAVIDHI

Complete.

Begins on 12a.

Ptd.

(R.No. 9560 to R 9565)

(Presented by Sri. W.G. Krishnamurthy, Head Constable; Pudupet, Madras)

R.No. 9560

Palm leaf(Sritala) 38.5x6cms; foll. 310; lines 18 on a folio; Grantha script; very old & broken; extent 2100 granthas.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Complete - upto Yuddhakāṇḍa

R.No. 9561

Palm leaf 29x2.8cms; foll 115; lines 8 on a folio; Telugu; old; extent; 3000 granthas.

रामायणम्

RĀMĀYAṆAM

Incomplete. Contains Sundarakāṇḍa only.

R.No. 9562

Palm leaf 41.5x4cms; foll. 161; lines 10 on a folio; grantha; very old; extent 7100 granthas.

काञ्चीमाहात्म्यम्

KAÑCĪMĀHĀTMYAM

Incomplete.
Ptd.

(R9563-R9565 one bundle)
R.No. 9563

Palm leaf; 26.5x3.5cms; foll. 28; lines 7 on a folio; Grantha; good; extent 370 granthas.

ललितासहस्रनामस्तोत्रम्

LALITĀSAHASRANĀMASTOTRAM

Complete.
Ptd.

R.No. 9564

Palm leaf foll. 10; extent 100 granthas.

ललितात्रिशतीनामस्तोत्रम्

LALITĀTRĪŚATĪ NĀMASTOTRAM

Complete. Begins on 28a.
Ptd.

R.No. 9565

Palm leaf; foll. 13; lines 6 on a folio; extent 200 granthas.

ललितास्तवरत्नम्

LALITĀSTAVARATNAM

Incomplete.
Begins on 27a.
Ptd.

R.No. 9566

(R.No. 9566 - R9637 - presented by Sri. Challa Lakshminarasimha Sastry, Aryamanda press, Batehuptet, Masulipatnam)

Palm leaf 36x3.8cms; foll. 81; lines 8 on a folio; Telugu; extent 1800 granthas.

ग्रहलाघवम् - सख्याख्यम्

GRAHALĀGHAVAM - WITH COMMENTARY

A treatise on astronomy by ganesa and commentary by Visvanatha.

Same as the work described under R 913(a).

R.No. 9567

Palm leaf 44x3.4cms; foll. 44; lines 6 on a folio; Telugu; extent 700 granthas.

गृह्यपरिशिष्टम्

GṚHYAPARIŚIṢṬAM

A work on Grhyasutra.

Incomplete. Same as R4267.

R.No. 9567(a).

Foll. 4; extent 50 granthas.

पुष्यार्कविधिः

PUṢYĀRKAVIDHI

Incomplete.

R.No. 9567(b)

Foll. 14; extent 400 granthas.

सर्वप्रायश्चित्तम्

SARVAPRĀYASCITTAM

Incomplete.

Same as D 3508.

R.No. 9568

Palm leaf 43x3.5cms; foll. 11; lines 6 on a folio; Telugu; old; worm eaten; extent 250 granthas.

श्राद्धप्रयोगः

ŚRĀDDHAPRAYOGAḤ

Complete.

R.No. 9568(a)

Foll. 10; extent 130 grantha.

ज्ञानवासिष्ठम् - सव्याख्यानम्

JÑĀNAVĀSIṢṬAM - WITH COMMENTARY

Incomplete.

Begins on 11a.

R.No. 9568(b)

Foll. 3.

लिङ्ग.धारणविषय:

LINGADHĀRAṆAVIṢAYAḤ

Complete.

Begins on 21a.

R.No. 9568(c)

Foll. 9; lines 5 on a folio; extent 150 granthas.

पातञ्जलयोगसूत्रम् - विवृतिसहितम्

PĀTAÑJALAYOGASŪTRAM WITH VIVṚTI

Incomplete.

Begins on 24a.

R.No. 9569

Palm leaf 37.5x4cms; foll. 50; lines 8 on a folio; Telugu; worm eaten; extent 1500 granthas.

श्रौतप्रयोग:

ŚRAUTAPRAYOGAH

Incomplete.

R.No. 9570

Palm leaf 38x3.4cms; foll. 68; lines 5 on a folio; Telugu; extent 1000 granthas.

देवीकल्याणमहोत्सवविधिः

DEVĪKALYĀṆAMAHOTSAVAVIDHI

A part of Devīpūjavidhānam.

Incomplete.

R.No. 9571

Palm leaf 35.5x3.2cms; foll. 46; lines 6 on a folio; Telugu; old & worm eaten; extent 700 granthas.

ज्योतिषफलरत्नमाला - सव्याख्या

JYOUTIṢAPHALARATNAMĀLĀ - WITH COMMENTARY

A work on Astrology.

Incomplete.

Similar to the work described under DNo. 13423.

R.No. 9571(a)

Foll. 7; extent 100 granthas.

जातकजीवनम्

JĀTAKAJĪVANAM

Incomplete.

Same as D 13688.

R.No. 9571(b)

Foll. 5; extent 75 granthas.

उपदेशसूत्रम्

UPADEŚASŪTRAM

Incomplete.

R.No. 9572

Palm leaf 41x3cms; foll. 63; lines 6 on a folio; broken & worm eaten; extent 2000 granthas.

धर्मशास्त्रम्

DHARMAŚĀSTRAM

Incomplete.

Many folios are found missing.

R.No. 9573

Palm leaf 43x3.5cms; foll. 33+16 (blank folios) lines 6 on a folio; Telugu; extent 750 granthas.

श्रौतसूत्रम्

ŚRAUTASŪTRAM

Incomplete.

Wants the beginning.

R.No. 9574

Palm leaf 37x3cms; foll. 18; lines 6 on a folio; Telugu; appearance-old; extent 100 granthas.

श्रौतप्रयोग:

ŚRAUTAPRAYOGA

Incomplete. 4 folios left blank.

Ptd.

R.No. 9575

(This bundle contains 8 works)

Palm leaf 44x3.5cms; foll. 3; lines 8 on a folio; Telugu; extent 50 granthas;

कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलि:

KRṢṆĀṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9575(a)

Folio 2; extent 50 granthas.

रामाष्टोत्तरशतनामावलिः

RĀMĀṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ

Begins on 2(a).

R.No. 9575(b)

only two folios; extent 50 granthas.

शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः

ŚIVĀṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ

Complete.

Begins on 3b.

Ptd.

R.No. 9575(c)

Foll. 3; extent 125 granthas.

त्रिपुरसुन्दरीनामावलिः

TRIPURASUNDARĪ NĀMĀVALIḤ

Hymns on Tripurasundarī a form of Goddess Shakthi.

Complete.

Begins on 4b.

Ptd.

R.No. 9575(d)

Foll. 7; lines 9 on a folio; ;extent 200 granthas.

विष्णुसहस्रनामावलिः

VIṢṆUSAHASRANĀMĀVALIḤ

Complete.

Begins on 7(a).

R.No. 9575(e)

Foll. 7; extent 200 granthas.

शिवसहस्रनामावलि:

ŚIVASAHASRANĀMĀVALIḤ

Complete.

Begins on 14(a).

R.No. 9575(f)

Foll. 10; extent 250 granthas.

रामसहस्रनामावलि:

RĀMĀSAHASRANĀMĀVALIḤ

Complete.

Begins on 28a.
Ptd.

R.No. 9575(g)

Foll. 10; extent 200 granthas.

शिवसहस्रनामावलि:

ŚIVASAHASRANĀMĀVALIḤ

Incomplete; Begins on 37a.

R.No. 9576

Palm leaf; 45x3.5cms; foll. 105; lines 6 on a folio; Telugu; old and worm eaten; extent 2600 granthas.

अपरप्रयोग:

APARAPRAYOGAḤ

Incomplete. Wants the beginning and end.
Ptd.

R.No. 9577

Palm leaf; 45x3cms; foll. 48; lines 6 on a folio; Telugu; ;injured; extent 1200 granthas.

मैत्रावरुणप्रयोग:

MAITRĀVARUṆA PRAYOGAḤ

This work contains directions intended for the Maitrāvaruṇa in Agniṣṭoma sacrifice. Contains Uttaravihara.

Beginning:

ममास्मिज्योतिष्टोमे अग्निष्टोमे स्तोमे प्रशास्तारं त्वामहं वृण इति वृतो करिष्यामि। अथ मधुपर्क:। विष्ठर इति त्रिरुक्ते । अहं वर्ष्मसुजातानां विद्वतामिव सूर्य:। इदं तमधितिष्ठामि यो मूकश्चाभिदासति। उदगग्रे विष्टर उपविशेत् । पाद्यमिति तिरुक्ते तस्मिंम्राष्ट्रे श्रियमुवेश्य ।

End:

ये यजामह इन्द्रा वरुणामधुमत्तमस्य ।

वृष्णस्सोमस्य वृषणा वृषेधां इदं वामंध:

परिषिक्तमस्मे असध्वास्मि स्वर्हिषिमादयेधांवे ।

सोमस्वा इव

उत्तरविहार: समाप्त:

Scribe:

दक्षवेङ्क.टशेषाचलं सर्वतोमुखमैत्रावरुणं सम्पूर्णम् । ....

.... विरोधिनामसंवत्सर श्रावण .....

R.No. 9578

Palm leaf 34x3cms; foll. 12; lines 5 on a folio; Telugu; much injured; worm eaten; extent 150 granthas.

विदशासूक्ष्मदशाफलानि (आन्ध्रटीकासहितानि)

VIDAŚASŪKṢMA DAŚĀPHALĀNI (With Telugu Meaning)

A treatise on astrology. Author not known.

Fol. 12a to 20 contain Telugu work.

(R.No. 9579, 9580 one bundle)

R.No. 9579

Palm leaf 45x3.2cms; foll. 172; lines 7 on a folio; Telugu; slightly injured; extent 4500 granthas.

अध्यात्मरामायाणम्

ADHYĀTMA RĀMĀYAṆAM

Complete.

R.No. 9580

Foll. 30; extent 600 granthas.

श्रीमद्भागवतम्

ŚRĪMADBHĀGAVATHAM

Incomplete.

R.No. 9581

Palm leaf; 45.5x3cms; foll. 177; lines 7 on a folio; Telugu; old; worm eaten; extent 5100 granthas.

हायनरत्नम्

HĀYANARATNAM

A rare treatise on astrology by Balabhadra son of Damodara. This work is based on famous work Śripatipaddhati.

Complete:

Beginning:

श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः।

गणाधिपं रामगुरोः पदाम्बुजं

दामोदराख्यं पितरं....... ।

प्राचीनपद्यै .... बलभद्रनामा ।

करोति सि हायनरत्नसंज्ञम् ।।

भगीरथीतीरविराजमाने

श्रीकान्यकुब्जे नगरे च रम्ये ।
अभूद्भरद्वाजमहर्षिवंशे
श्रीलालनामा ..... कोशधामा ।।
तस्यात्मजा: पञ्च बभूवुरेषां
श्रीदेविदास: प्रथमं बभूवु: ।
....क्ते च य श्रीपतिपद्धतौ च
टीकां .... स्यामि गणेशतुष्टयै ।।
तल्लघु भेदविचारदक्ष:
प्रख्यातकीर्तिर्विजितारिपक्ष:।
श्रीक्षेम... तत:कनिष्ठो
नारायणो व्याकरणे पटिष्ठ:।।

End:

इति श्रीदैवज्ञवर्यपण्डितदामोदरात्मज बल भद्र विरचिते हाययनरत्ने मानप्रवेशादिविचाराध्यायोऽष्टम:। समाप्तोऽयं ग्रन्थ:।

The scribe adds that this work was copied form a printed copy, in Devanāgari script which was found in Varanāsi.

वराणसीमुद्रितनागरीलिपिं
दृष्ट्वालिखत्तलपुटीदलेषु
श्रीवोरुगंण्याान्वय भू ...
नाथाह्वयो हायनसारमेनम्।।

R.No. 9582

Foll. 30; extent 1000 granthas.

रामलामृतम्

RĀMĀLAMṚTAM

This is` astrological work with diagrams, pertaining to architecture.

Incomplete

R.No. 9583

Palm leaf 45x3.5cms; foll. 150; lines 8 on a folio; Telugu; good; extent 1800 granthas.

केनोपनिषद्भाष्यटिपणम्

KENOPANIṢADBHĀṢYAṬIPPAṆAM

Incomplete.

(R.No. 9584, R.No. 9585 one bundle)

R.No. 9584

Palm leaf 45x3.5cms; foll. 7; lines 5 on a folio; Telugu; old; extent 250 granthas.

कारिकावली

KĀRIKĀVALĪ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9585

Foll. 65; lines 6 on a folio; extent 1500 granthas.

कारिकावलिव्याख्या - मुक्तावली

KĀRIKĀVALIVYĀKHYĀ - MUKTĀVALĪ

Incomplete, Ptd.

R.No. 9586

Palm leaf 38x3.5cms; foll. 16; lines 8 on a folio; Telugu; old; extent 400 granthas.

महान्यास:

MAHĀNYĀSA

Complete.

Ptd.

R.No. 9587

Palm leaf 43x3cms; foll. 50; lines 5 on a folio; Telugu; injured; extent 1000 granthas.

आरुणम्

ĀRUṆAM

This is the Āruṇa portion of KRSNAYAJURVEDA

Incomplete. Aruna is generally known as Āvaṇyaka.

R.No. 9588

Palm leaf 37.5x3cms; foll 52; lines 5 on a folio; 200 granthas.

सोमहौत्रम्

SOMAHAUTRAM

The prayoga adopted by the Hota (performer) one who performs a Somayaga.

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9589

Palm leaf; 38.5x 3.2cms; foll 103; lines 6 on a folio; ;Telugu; old; worm eaten; extent 2600 granthas.

आपस्तम्बप्रयोगप्रदीपिका

ĀPASTAMBAPRAYOGAPRADĪPIKĀ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9590

Palm leaf; 46x2.8cms; foll 54; lines 5 on a folio; Telugu; worm eaten; extent 1300 granthas.

ज्ञानप्रदीपिका

JÑĀNAPRADIPIKA

An astrological treatise.

Same as D13933.
Incomplete.

(R.No. 9591, R.No., 9592 one bundle)

R.No. 9591

Palm leaf; 38.5x4cms; foll. 17; lines 7 on a folio; Telugu; old worm eaten; 375 granthas.

श्रौतप्रयोगम्

SRAUTAPRAYOGAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9592

Foll. 7; extent 125 granthas.

सर्वप्रायश्चित्तम्

SARVAPRĀYASCITTAM

Begins on 19a.

After foll 19b, 14 folios are left blank.

Incomplete.

R.No. 9593

Palm leaf 38x3.5cms; foll 30; lines 7 on a folio; Telugu script; very old; extent 800 granthas.

कृष्णयजुर्वेदारुणम्

KṚṢṆAYAJURVEDĀRUṆAM

A portion of Kṛṣṇa Yajurvedaruṇa.

Incomplete.

R.No. 9594

Palm leaf 37x3cms; foll. 14; lines 9 on a folio; Telugu; worm eaten; extent 325 granthas.

शिवसहस्रनामावलिः

ŚIVASAHASRANĀMĀVALIḤ
Complete.
Ptd.

R.No. 9594 (a)

Foll. 3 lines 9 on a folio; Telugu; 100 granthas.

रुद्रत्रिशतीनामावलि:

RUDRATRIŚATĪ NĀMĀVALIḤ
Complete. Begins on 11a.
Ptd.

R.No. 9594(b)

Foll. 5; lines on a folio; extent 125 granthas.

नवरात्रपूजाविधि:

NAVARĀTRA PŪJAVIDHIḤ
Complete. Begins on 14(a).
Ptd.

R.No. 9594(c)

Foll. 13; lines 9 on a folio; extent 400 granthas.

ललितात्रिशतीनामावलि:

LALITĀTRIŚATĪ NĀMĀVALIḤ
Complete.
Begins on 19(a).
Ptd.

R.No. 9595

Palm leaf 44x4cms; foll. 55; lines 7 on a folio; Telugu; good; extent 1400 granthas.

कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्

KṚṢṆAYAJURVEDABRĀHMAṆAM
Complete.
Ptd.

R.No. 9595(a)

Foll. 1.
इन्द्राक्षीस्तोत्रम्
INDRĀKṢĪSTOTRAM
Complete. Begins on 56b.
Ptd.

R.No. 9595(b)

Foll.2.
इन्द्राक्षीकवचम्
INDRĀKṢĪ KAVACAM
Complete.
Begins on 58(a)
Ptd.

R.No. 9595(c)

Foll.2.
गरुडब्रह्मविद्यामन्त्रः
GARUḌA BRAHMAVIDYĀMANTRAḤ
A mantra invocating God Viṣṇu who is in the form of Garuḍa.
Begins on 58(a).
Beginning:
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
विश्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यं ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ।।

अस्यश्रीगरुडब्रह्मविद्यामन्त्रस्य काश्यपब्रह्म ऋषि:। अनुष्टुप् छन्द:।गरुडात्मा श्रीमहाविष्णुर्देवता ।

R.No. 9595(d)

Foll. 16; lines 5 on a folio; extent 275 granthas.

उत्तरगीता

UTTARAGĪTĀ

Complete.

Begins on 60a.

Ptd.

R.No. 9596 - R.No. 9598 one bundle.

R.No. 9596

Palm leaf 24x3cms; foll. 7; lines 7 on a folio; Telugu script; old and worm eaten; extent 250 granthas.

द्वादशभावफलनिरूपणम्

DVĀDAŚABHĀVAPHALANIRŪPAṆAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9596(a)

Foll. 14; extent 200 granthas.

जातककलानिधि:

JĀJAKAKALANIDHIḤ

Begins on 6a.

Incomplete.

R.No. 9597

Foll. 20; extent 500 granthas.

वाञ्छानाथीयम्

VAÑCĀ NĀDTHĪYAM

A commentary for Dvādaśabhavaphalanirūpaṇam by Vāñchānātha.

Incomplete.

Begins on 20 a.

R.No. 9598

Foll. 35; extent 800 granthas.

योगिनीजातकम्

YOGINĪJĀTAKAM

Complete.

Begins on 40a.

R.No. 9599

Palm leaf 40x3cms; foll. 25; lines 7 on a folio; Telugu; old; extent 600 granthas.

जातकराजीयम्

JĀTAKARĀJĪYAM

An astrological work. The portion herein seen is the movement of nine planets beginning with Ravi (Sun).

R.No. 9600

Palm leaf 35x3cms; foll. 37; lines 7 on a folio; Telugu; old injured; extent 700 granthas.

कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्

KṚṢṆAYAJURVEDA BRĀHMAṆAM

Incomplete. Many leaves are left blank and many are found missing also.

R.No. 9601

Palm leaf 44x3.5cms; foll. 21; lines 6 on a folio; Telugu; very much injured; extent 210 granthas.

श्रौतप्रयोग:

ŚRAUTAPRAYOGAḤ

Incomplete.

8 folios are blank.

Ptd.

R.No. 9602

Palm leaf 30x3cms; foll. 35; lines 6 on a folio; Telugu; injured; extent 350 granthas.

पैतृमेधिकविधि:

PAITṚMEDHIKAVIDHIḤ

This is a prayoga work which deals with Urdhvakriya or Aparakriya.

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9603

Palm leaf 29x3.5cms; foll. 92; lines 6 on a folio; Telugu; old; extent 1600 granthas.

आपस्तम्बपूर्वप्रयोग:

ĀPASTAMBAPŪRVAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9604

Palm leaf 32x3cms; foll. 61; lines 6 on a folio; Telugu; worm eaten; extent 1000 granthas.

ज्योतिषविषय:

JYOTIṢAVIṢAYAḤ

R.No. 9605

Palm leaf 40x4cms; foll. 74; lines 7 on a folio; Telugu; very old; extent 1000 granthas.

श्रौतप्रयोग:

ŚRAUTAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Many folios are found missing. Ptd.

R.No. 9606 & R 9607 one bundle.

R.No. 9606

Palm leaf 40x4cms; foll. 22; lines 6 on a folio; Telugu; good; extent 105 granthas.

ऐतरेयोपनिषद्भाष्यम्

AITAREYOPANIṢADBHĀṢYAM

Commentary by Sankaracharya on Aitareyopaniṣad.

Complete.

R.No. 9607

Foll. 4; extent 30 granthas.

ऐतरेयोपनिषद्

AITAREYOPANIṢAD

Complete.

Begins on 22a.

R.No. 9608

Palm leaf 48x3cms; foll. 14; lines 6 on folio; Telugu; appearance old; extent 350 granthas.

फलगौरीव्रतकल्पः

PHALAGOWRI VRATAKALPAḤ

Incomplete.

Wants the beginning.

Contains Gouryastottarasatanamāvali also.

R.No. 9609

Palm leaf 48x3cms; foll. 21; lines 6 on a folio; Telugu; extent 500 granthas.

श्रौतप्रयोगः

ŚRAUTAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9610 contains 3 works.

R.No. 9610

Palm leaf 42x3cms; foll. 19; lines 7 on a folio; Telugu; old; extent 550 granthas.

महान्यासः

MAHĀNYĀSAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9610(a)

Foll. 10; extent 450 granthas.

शिवकवचः

ŚIVAKAVACAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9610(b)

Foll. 9; extent 310 granthas.

नमश्शिवायपञ्चकम्

NAMAŚŚIVĀYA PAÑCAKAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9611

Palm leaf 30x2.5cms; foll. 64; lines 6 on folio; Telugu; old and worm eaten; extent 1100 granthas.

भगवत्प्रतिष्ठाविधिः

BHAGAVAT PRATIṢṬHĀVIDHIḤ

A Vaiṣṇava Āgama work on the consecration or installation of divine images for worshipping.

Incomplete.

Wants the beginning.

Similar to the work described under R 1343.

R.No. 9612

Palm leaf 41x4cms; foll. 91; lines 8 on a folio; Telugu; old; extent 1500 granthas.

कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्(काठकम्)

KṚṢṆYAYAJURVEDA BRĀHMAṆAM [KĀTHKAM]

Complete.

Ptd.

R.No. 9613

Palm leaf 45x3.5cms; foll. 43; lines 5 on a folio; Telugu; very old; extent 675 granthas.

श्रौतप्रयोगः

ŚRAUTAPRAYOGAḤ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9614

Palm leaf 45x3.5cms; foll. 45; lines 6 on a folio; Telugu; worm eaten; extent 1050 granthas.

ज्यौतिषरत्नमाला

JYOTIṢRATNAMĀLĀ

R.No. 9615

Palm leaf 45x3.5cms; 40 foll.; lines 8 on a folio; Telugu; old; extent 1400 granthas.

कृष्णयजुर्वेदब्राह्मणम्

KṚṢṆAYAJURVEDĀ BRĀḤMAṆAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9616

Palm leaf 40 x 3.5cms; foll. 77; lines 6 on a folio; Telugu script; old; extent 1620 granthas.

कालामृतम् - सव्याख्यानम्

KĀLĀMṚTAM - WITH COMMENTARY

Complete.

Ptd.

R.No. 9617

Palm leaf 40x3.5cms; foll. 40; lines 7 on a folio; Telugu; old broken; extent 750 granthas.

तैत्तिरीयोपनिषत्

TAITTIRĪYOPANIṢAT

Complete.

R.No. 9618

Foll. 5; extent 100 granthas.

तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्

TAITTIRĪYOPANIṢAD BHĀṢYAM

Commentary of the above Ms.

Incomplete.

R.No. 9619

Palm leaf 40x3.3cms; foll. 45; lines 6 on a folio; Telugu; very old; extent 1000 granthas.

वेदान्तपरिभाषा

VEDĀNTAPARIBHĀṢĀ

An Advaita philosophy work composed by Dharmārajā dhvarīndra.

Complete.

Ptd.

R.No. 9620 - 9622(a) one bundle.

R.No. 9620

Palm leaf 37x3.5cms; foll 7; lines 6 on a folio; Telugu; old; extent 200 granthas.

तर्कसङ्ग.हः

TARKASAṄGRAHAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9621

Palm leaf Foll 17 (37x3.5cms and 34x3cms.) lines 6 on a folio; Telugu; extent 450 granthas.

तर्कङ्ग्रहव्याख्या - न्यायबोधिनी

TARKASAṄGRAHAVYĀKHYĀ - NYĀYABODHINĪ

Incomplete.
Ptd.

R.No. 9622

Foll. 16; extent 350 granthas.

तर्कसङ्ग्रहदीपिका

TARKASAṄGRAHADĪPIKĀ

Complete.

Ptd.

R.No. 9622(a)

Foll. 23; exten 500 granthas.

तर्कसङ्ग्रहवाक्यनिरुक्तिः

TARKASAṄGRAHANIRUKTI

Incomplete.

Same work as described under D4184.

By Paṭṭabhirāma.

R.No. 9623

Palm leaf 34x3cms; foll. 9; lines 7 on a folio; Telugu; extent 250 granthas.

शिवपूजाविधानम्

ŚIVAPŪJĀVIDHĀNAM

On the performance of Sivapuja.

Complete.

Ptd.

R.No. 9624

Palm leaf 39.5x3cms; foll. 30; lines 7 on a folio; Telugu; old; extent 1000 granthas.

सर्वसिद्धान्तसारसङ्ग्रहः

SARVASIDDĀNTA SĀRASANGRAHAḤ

This is a work on Astronomy by Subramanyayajwan.

Beginning:

श्रीमत्सकलवेदान्तप्रतिपादितमच्युतम् ।

जगत्कर्तारमखिलं भास्करं तं नमाम्यहम् ।।

श्रीवत्सगोत्रविख्यात श्रीमन्नागकुलोद्भवः ।

नारसिंहार्यजो यज्वा सुब्रह्मण्यस्सुधी

... सिद्धान्ततत्तुल्यगणकानां.............

यल्लयार्याख्यव्याख्यात्य... अपि स्वयम्

चक्रतुल्यं सुलभं सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमम्

वक्ष्येमां सर्वसिद्धान्तसारसङ्ग्रहनामकम् ।।

End:

Colophon:

इति श्रीमन्नगार्ययोद्भवनसिंहार्यपुत्रसुब्रह्मण्ययज्वविरचिते सर्वसिद्धान्तसारसङ्ग्रहे उपकरणाध्यायस्तृतीयः

A chart of Lagnas is given.

R.No. 9625

Palm leaf 38x3.2cms; foll. 42; lines 7 on a folio; Telugu; old; extent 1200 granthas.

भार्गवनाडिका

BHĀRGAVANĀṬIKA

A treatise of astrology contains Grahabhukliphalaḥ.

Complete. (upto Budhabhukti)

R.No. 9626

Palm leaf 44x3.4cms; foll. 39; lines 8 on a folio; Telugu; very old; extent 1560 granthas.

रामायणम् (उत्तरकाण्डम्)

RĀMĀYAṆAM - UTTARAKĀṆḌAM

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9627

Palm leaf 40x3.2cms; foll. 34; lines 5 on a folio; Telugu; old; extent 425 granthas.

ग्रहलाघवम्

GRAHALĀGHAVAM

Complete.

Same as R 2605.

R.No. 9628

Palm leaf 34x3.4cms; 14 folios; lines 5 on a folio; Telugu; old; worm eaten; extent 100 granthas.

अनन्तव्रतकल्पः

ANANTAVRATAKALPAḤ

Complete.

R.No. 9628(a)

Foll. 10; lines 5; extent 80 granthas.

सूर्यनमस्कारविधिः

SURYANAMASKARAVIDHI

Complete

R.No. 9629

Palm leaf 42x3cms; foll. 51; lines 6 on a folio; Telugu; old; extent 1400 granthas.

बृहदारण्यकोपनिषद्व्याख्या -(मिताक्षरा)

BṚHADĀRAṆYAKOPANIṢADVYĀKHYĀ - MITAKṢARA

Complete.

Same as R 647

R.No. 9630

Palm leaf 32x3.5cms; foll. 20; lines 5 on a folio; Telugu; very old and injured; extent 250 granthas.

चातुर्मास्यप्रयोग:

CĀTURMĀSYA PRAYOGAḤ

Incomplete.

R.No. 9631

Palm leaf 42x3.2cms; foll. 7; lines 7 on a folio; Telugu; injured; extent 200 granthas.

अवधूतगीता

AVADHŪTAGĪTĀ

An exposition of the Principles of Advaita philosophy in the form of dialogue between Dattatreya and Gōraksa.

Same as D 4543.

Incomplete.

The remaining leaves contain some Telugu works.

R.No. 9632

Palm leaf 42x3.5cms; foll. 43; lines 6 on a folio; Telugu; old; worm eaten; extent 1200 granthas.

अग्न्याधानप्रयोग:

AGNYĀDHĀNAPRAYOGAḤ

Complete.
Ptd.

R.No. 9633

Palm leaf 33x3cms; foll. 30; lines 5 on a folio; Telugu; much injured; extent 400 granthas.

पूर्वप्रयोगकारिका

PŪRVAPRAYOGAKĀRIKĀ

Incomplete.

R.No. 9634

Palm leaf 42x3.5cms; foll. 12; lines 5 on a folio; Telugu; old; extent 300 granthas.

श्रौतप्रयोग:

ŚRAUTAPRAYOGAḤ

Incomplete.

R.No. 9634(a)

Foll. 6; extent 150 granthas.

प्रायश्चित्तकारिका

PRĀYASCITTAKĀRIKĀ

Incomplete.

R.No. 9634(b)

प्रायश्चित्तकारिका

PRĀYASCITTAKĀRIKĀ

Incomplete. Same as R 9634(a)

R.No. 9635

Palm leaf 16x3.4cms; foll. 3; lines 6 on a folio; Telugu.

रामकवच:

RĀMAKAVACAḤ

Complete.

R.No. 9635(a)

Foll. 5.

हनुमन्मन्त्रः

HANUMANMANTRAḤ

Begins on folio 4.

R.No. 9635(b)

Foll. 4.

रामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

RĀMAṢṬOTTARA ŚATANĀMASTOTRAM

Complete.

Begins on 5a of R 9635.

R.No. 9635(c)

Foll. 4.

रामाष्टोत्तरशतनामावलिः

RĀMAṢṬOTTARAŚATANĀMĀVALIḤ

Complete.

Begins on 9a of R 9635

R.No. 9635(d)

Foll. 7.

राममन्त्राः

RĀMAMANTRAḤ

Complete.

Ptd.

R.No. 9635(e)

Foll. 6;

रामस्तवः

RĀMASTAVAḤ

Complete. Begins on 25a of R 9635.

Ptd.

R.No. 9635(f)

Foll. 4.

शिवषडक्षरीमन्त्रः

ŚIVAṢAḌAKṢARĪ MANTRAḤ

Complete.
Begins on 31a of R 9635.

R.No. 9636

Palm leaf 28x3cms; foll. 4; lines 6 on a folio; Telugu; old; extent 60 granthas.

शनैश्चरस्तोत्रम्

SANAIŚCARASTOTRAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9637

Palm leaf 41x3.5cms; foll. 80; lines 6 on a folio; Telugu; slightly injured; extent 2250 granthas.

श्रौतप्रयोगः

ŚRAUTAPRAYOGAḤ

Almost complete.

Ptd.

R.No. 9638-9711

(Purchased from Sri Jagadish Mittal, C/o K.C. Agrawala, Asst. Engineer, P.W.D., Bulandasashar, U.P.)

R.No. 9638

Paper

काशीखण्डटीका

KĀŚĪKHAṆḌAṬĪKĀ

R.No. 9639

Paper 30x18cms; foll. 27; lines 20 on a folio; Devanagari; good; extent 7000 granthas.

वाजसनेयसंहिता (वेदभाष्यम्)

VĀJASANEYASAMHITĀ

A commentary on Śuklayajurveda by Mahīdhara with text.

R.No. 9640

Paper 30x16cms; foll. 262; lines 18 on a folio; Devanagari; good; good; extent 12100 granthas.

यजुर्वेदमन्त्रभाष्यम्

YAJURVEDAMANTRABHĀṢYAM

Commentary on Śuklayajurveda by Mahīdhara.

Complete in 20 chapters.

R.No. 9641

Paper 29x14cms; foll. 90; lines 12 on a folio; Devanagari; good; extent 3100 granthas.

विद्योपास्तिमहानिधिः

VIDYOPĀSTIMAHĀNIDHIḤ

A treatise on Tāntric science by Sivarāma in nine chapters.

Beginning:

श्रीनृसिंह: यत्पूर्णं भजतं पूर्णं तूर्णत्वकारणं ।
हरार्णमपि तर्कार्णालयांर्णत्वमुपास्महे ।।

वेधत्रयं तु विश्वात्मा विग्रहे ... तद्भिदा ।
पूर्णाभिषेकत्रिविधो निधाचस्मिन्ननुक्रमात् ।।

अथैवं निधिसप्तकानिरूपितलक्षणं दीक्षाविधाप्राप्तिसाधन- नित्यनैमित्तिकाचारभक्तिमदाधिकारिकपूर्णाभिषेकं निरूपयितुमादौ तदुपयोत .... धत्रयं निरूप्यते .....

Colophon.

इति श्रीमदशेषागमपरिकर्मितान्त:करणशुभगाानन्द नाथशिष्यगोदापरिसरसमीरपुनीतपुण्यस्तम्भनिवासि टुल्लूपनामक तद्गोपालतनुजशिवरामप्रकाशीये विद्योपस्तिमहानिधौ नित्योपसनादिप्रकाशनपर: प्रकीर्णनिर्धिर्नवम:

End:

तेषां द्वितीयान्तत्वं पूजयामि इत्येतच्चक्रे विलिख्य तत्तवोपदिष्टत्वात् भूम्यादिनामचतुष्ठयलेखने द्विनीयान्तत्वविधानाच्च मायागर्भे हल्लेखोदरे तत्र चक्रे तान् देवतान् क्वापि अनुपहदेशे तत्र स्थापितदेशे त्रिंशस्त्रिवारं खर्वाटिकादिष्वित्यत्रादिश .... यत्नादिविषय: विदध्यात्....

(R.No. 9642, 9643 one bundle)

R.No. 9642

Paper 29x14cms; foll. 4; lines 13 on a folio; Devanāgari; good; extent 2600 letters.

ज्योतिर्निबन्धसङ्ग्रह:

JYOTIRNIBANDHASAṄGRAHAḤ

A work on Astronomy.

Incomplete. Begins on fol. 1a

Beginning:

ज्योतिर्निबन्धसङ्ग्रहो लिख्यते ।

गारुडे धूतवादे च ज्योतिषे वैद्यके तथा ।

कारणं प्रत्ययं यत्र ननु शब्दविचारणा।।

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुडे विषभक्षणम् ।

शैवे घटवती दीक्षा कौत्तिके ग्रहनिग्रहो ।।

End:

सदौषधैर्यान्ति गदा विनाशं

यथा यथा दुष्टमयानि मन्त्रैः।

तथोदितस्नानविधानतोपि

ग्रहा शुभं नाशमुपैति वश्यम् ।।

बादरायणः । अनपत्या ....

R.No. 9643

Foll. 270; lines 12 on a folio; extent 16200 letters.

मदनश्त्नप्रदीपः

MADANARATNAPRDĪPAḤ

A treatise on Vratakalpa by Madanasimhadeva. The index of the chapters is found in the beginning.

Incomplete.

Begins on foll. 5a of R 9642, wants the beginning.

Beginning:

...दपाराद्वरधरणिभुजां भूभुजामग्रलेख्यः

यम्दानं नापमानं क्वचिदपि लभते यस्य रुद्धावरुद्धां ।

शुद्धान्तानैवकांतामपि परिचलितां वैरिणा स्मारयन्ती ...

Colophon:

इति श्रीकोदण्डपरशुरामेत्यादि श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजमदनसिंहदेवविरचिते मदनरत्नप्रदीपे समयनिर्णयोद्योत्रे क्षयाहश्राद्धनिर्णयः ।

End:

तथा चाश्वलायनगृह्ये प्रादु:करणहोमकालौ व्याख्याताविति व्याव्यातावग्निहोत्रकरणैयर्थः कथञ्चिन्मुख्यकाल....

R.No. 9644

Paper 29x14cms; foll. 118; lines 12 on a folio; Devanagari; good; extent 360 letters in a page.

न्यासामृतम्

NYĀSĀMṚTAM

A treatise on Yogatantra by Vimarśānandanātha.

Complete in 11 Virāmāś.

Beginning:

श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीचरणकमलेभ्यो नमः। श्रीसद्गुरु चरणारविन्दाभ्यां नमः। यत्कृपालेशमात्रेण पुरुषार्थचतुष्टयं । प्राप्यते तामहं वन्दे त्रिपुरां शिवनायिकाम्। अम्ब त्वं चरणारविन्दयुगलं नत्वा तथा श्रीगुरोः। पादाब्जं हृदि संन्निधाय रचयेन्यासामृतं त्रैपुरम्। न्यासान् सम्यगनुष्टितं गुरुकृपामात्रात्रविद्योह्यहं । धीमन्तस्त्वनुसूययात्र विशदाकुर्वन्तु वाचो मम ।।

Colophon:

इति श्रीमत्सत्यानन्दपूज्यपादशिष्य श्रीविमर्शानन्दनाथविरचिते न्यासामृते एकादशो विरामः। समाप्तं चेदं न्यासामृतं नाम काण्डं गुरुकृपात्त-धियेति शुभम् ।

R.No. 9645

Paper 28x14cms; foll. 15; lines 16 on a folio; Devanāgari; good; extent 720 letters on a folio.

सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्तिः

SIDDHĀNTACANDRIKĀVṚTTIḤ

A work on grammar, same as R 3178.

Incomplete.

R.No. 9646

Paper 29x16cms; foll. 31; lines 13 on a folio; Devanāgari; good; extent 520 letters on a page.

निर्णयसङ्ग्रहः

NIRṆAYASAṄGRAHAḤ

A work on Dharmaśāstra.

Incomplete, wants the beginning and end.

Beginning found in this ms.

....क्वचिन्न व्रजतः स्वाधीना...र्धवृष्टयः।
एवं तैर्मोदते लोकः प्रजापतिशरद्यतः।।
अतिथिश्च जनैः सार्द्धमन्नं वो भुज्यते मधुः।
पेपीयते कामिनीभिरंगिराब्दे निरन्तरम् ।।

....

अथाक्षरारम्भविधिः।

उद्गते भास्वति पञ्चमेऽब्दे प्राप्तेऽक्षरस्वीकरणं शिशूनां सरस्वतीं विघ्नविनायकं च गुडोदनाद्यैरभिपूज्य कुर्यात् ।

R.No. 9647

Paper 31x17cms; foll. 111; lines 14 on a folio; Devanagari; good; extent 560 letters on a page.

अध्यात्मरामायणम्

ADHYĀTMARĀMĀYAṆAM

Contains Kiṣkindhakāṇḍa, Sundarakāṇḍa, Yuddhakāṇḍa and Uttarakāṇḍa.

R.No. 9648

Paper 30x17cms; foll. 117; lines 6 on a folio; Devanagari; good; extent 90 letters on a folio.

नैषधम् (सव्याख्यम्)

NAIṢADHAM (with commentary)

Wants beginning.

Incomplete.

(R.No. 9649, 9650 one bundle)

R.No. 9649

Paper 24.5x11cms; foll.6; lines 7 on a page; Devanagari; good; extent 210 letters on a page.

एकादशन्यासविधिः (मन्त्रमहोदधिः)

EKĀDAŚANYĀSAVIDHI

A portion of Mantramahodadhi.

Complete.

R.No. 9650

Foll. 30; lines 7 on a page; extent 210 letters in a page.

रसराजलक्ष्मीः

RASARĀJALAKṢMĪ

A treatise on the preparation of medicines by Viṣṇu son of Mahādeva.

Complete.

Beginning:

यस्येच्छां कुरु वल्लरी सुफलितानानाकलाकौतुके
चातुर्यैकविलोलपल्लववती कीर्तिप्रसूनप्रसूः।

सन्निवारयति ज्वरत्रयमहो छायाकलापैर्नृणां
सोऽयं पातु विचारमूर्तिरखिलं कालावलीढं जगत्।।

....

जयति दुरितसर्पस्तन्त्रमन्त्रौघदर्पः
प्रबलगदविनाशः सेवक....नाशः।
शिव इव निजमन्त्रः संहितायोगतन्त्र-
स्त्रिपुरहरतनूजस्तेजसः स्फारपुञ्जः।।

Colophon:

इति श्रीपण्डितमहादेवतनयपण्डितश्रीविष्णुविरचितायां रसराजलक्ष्म्यामुल्लासस्तृतीयः समाप्तः।

R.No. 9651

Paper 25.5x12cms; foll. 16; lines 12 in a page; Devanāgari; good; extent 480 letters in a page.

देवीरहस्यम्

DEVĪRAHASYAM

A portion of Rudrayāmala, a Śaivāgama.

R.No. 9652

Paper 30x13.5cms; foll. 23; lines 7 on a page; Devanagari; good; extent 245 letters in a page.

गोसहस्रदानपद्धतिः

GOSAHASRADĀNAPADDHATIḤ

Complete.

R.No. 9652(a)

क्षयश्राद्धम्

KṢAYAŚRĀDDHAM

Foll. 25; lines 7 in a page; extent 275 letters in a page.
Begins on 24a of Ms. R 9652.

R.No. 9653

Paper 30x15.5cms; foll. 18; lines 11 on a page; Devanagari; good; extent 440 letters in a page.

योगसारस्तोत्रव्याख्या

YOGASĀRASTOTRAVYĀKHYĀ

By Devadyuti. Complete.

Colophon:

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे देवद्युतिप्रणीतं योगसारं स्तोत्रम्।

End:

योगसारमिदं स्तोत्रं परमपावनम्।
यः पठेत्सततं भक्त्या विष्णुलोकं स गच्छति।

R.No. 9654

Paper 30x12.5cms; foll. 44; lines 12 in a page; Devanagari; good; extent 600 letters in a page.

प्रायश्चित्तमनोरमा

PRĀYAŚCITTAMANORAMĀ

Incomplete.

R.No. 9655

Paper 30x13cms; foll. 44; lines 9 in a page; Devanāgari; good; extent 360 letters in a page.

शान्तिविवेकोद्योत:

ŚĀNTIVIVEKODYOTAḤ

Incomplete. Wants beginning and end.

R.No. 9656

Paper 30x13cms; foll. 70; lines 7 in a page; Devanāgari; good; extent 245 letters in a page.

ताराकल्पम्

TĀRAKALPAM

Contains

शरणागतरक्षणस्तोत्रम्, गन्धर्वतन्त्रकवचम्, ताराकवचम्, उग्रताराकवचम्

R.No. 9657

Paper 30x13cms; foll. 88; lines 10 in a page; Devanāgari; good; extent 450 letters in a page.

दानसङ्क्षेपचन्द्रिका

DĀNASANKṢEPACANDRIKĀ

Deals with many types of Danas.

Beginning:

प्रणम्य मातरं गङ्गापभैरवं वनशङ्करीं
महादेवाख्यपितरं श्रौतस्मार्तविशारदम्।
दिवाकरेण सुधिया सारमुद्धृत्य शास्त्रत: ।
शिष्टानां तन्यते ....दानसंक्षेपचन्द्रिका ।।
तत्र परसत्वोत्पत्यन्त: द्रव्यत्यागो दानम् । देवल:
अर्थानामुदिते पात्रे श्रद्धया प्रतिपादनं।

Colophon:

इति श्रीमत्कालोपनामभट्टरामेश्वरात्मजभट्टमहादेवद्विजवर्यसूनु, भट्टदिवाकरविरचितदानसंक्षेपचन्द्रिकायां सदसत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तानि।

R.No. 9658

Paper 31x13cms; foll. 28; lines 8 in a page; Devanāgari; good; extent 300 letters in a page.

निर्णयतत्वम्

NIRṆAYATTATTVAM

A treatise on different Vratas, taken from निर्णयसिन्धु: the famous Prayogagrantha.

R.No. 9659

Paper 30x12.5cms; foll. 54; lines 9 in a page; Devanāgari; good; extent 360 letters in a page.

प्रायश्चित्तोद्योत:

PRĀYASCITTODYOTAH

Ptd.

R.No. 9660

Paper 31x 12.5cms; foll. 122; lines 10 in a page; Devanāgari; good; extent 450 letters in a page.

कालनिर्णयदीपिका

KĀLANIRṆAYADĪPIKĀ

Complete.

A work on Astrology by Nṛsmihācārya.

Beginning:

श्रीरामचन्द्रगुरुमेकमनेकशास्त्रं
पारीणकोविदधुरीणमहं नमामि।

Colophen:

इति श्रीमत्सर्वशास्त्रज्ञसकलसदागमाचार्य परमहंस परिव्राजकश्रीगोपालगुरुपूज्य- दि - प्रियशिष्यश्रीरामचन्द्राचार्य- सुतश्रीनृसिंहाचार्यकृतं कालनिर्णयदीपिकाविवरणं सम्पूर्णम्।

Scribe adds:

श्रीशके *2946* संवत् *2643* फाल्गुनशुक्ल चतुर्दश्यां शुक्रे लिखितमिदं पुस्तकम् ।

R.No. 9661

Paper 26x12.5cms; foll. 103; lines 9 in a page; Devanāgari; good; extent 225 letters in a page.

सिद्धान्तचन्द्रिका

SIDDHĀNTACANDRIKA

A commentary on the grammatical Sūtras of Saraswathi referred to under no. R 3178. Contains क्रियाप्रकरणम् from भ्वादिगण-

R.No. 9662

Paper 24.5x12cms; foll. 28; lines 11 in a page; Devanāgari; good; extent 330 letters in a page.

नैमिशारण्यमाहत्म्यम्

NAIMIŚĀRAṆYAMĀHĀTMYAM

A portion from Skandapurāṇa.

Ptd.

R.No. 9663

Paper 23x12cms; foll. 78; lines 9 in a Devanāgari; good; extent 270 letters in a page.

जैमिनिसूत्रम् - सुबोधिनीव्याख्यासहितम्

JAIMINISŪTRAM With Comm., SUBODHINI

A work on Gṛhyasūtra. Similar to D 1170.

R.No. 9664

Paper 26x13cms; foll. 24; lines 11 in a page; Devanagari; good; extent 440 letters in a page.

स्वरूपनिरूपणम्

SVARŪPANIRŪPAṆAM

A work on Advaita Vedanta by Sadananda.

Incomplete.

Beginning:

यस्मिन् बुद्बुदवद्विश्वं भिन्नाभिन्नमिव स्थितं ।
तं वन्दे परमानन्दं तुरीयं साक्षिणं सदा ।।
इह खलु सकललोकहितैषी भगवान् वेदव्यासो मुमूक्षूनानात्मभ्यो विवेकेन नित्यशुद्धमुक्तस्वभावमात्मानं बोधयन्तं सूत्राणि प्रणिनाय तेषु च श्रीशङ्करसुरेश्वराचार्या भाष्यवार्तिकादिरूपान् निबन्धान्..
..

Colophon:

इति श्रीसदानन्दविरचिते स्वरूपनिर्णये सकलदर्शनिरूपणं नाम प्रथमः परिच्छेदः।

End:

आनन्दबोधाचार्यस्तु आत्मातिरिक्त एव ..... स च न सत्यः अद्वैतश्रुतिविरोधात् अत्राप्यलीकः ज्ञानसाध्यत्वायोगात् नापि सदसदात्मकः विरोधात् .... ।

(R.No. 9665, R 9666 one bundle)

R.No. 9665

Paper 26x12cms; foll. 6; lines 18 in a page; Devanāgari; good.

सारतरनिबन्धः

SARATARANIBANDHAḤ

A treatise on Jain Philosophy.

Beginning:

प्रणमति स गणनाथो सिद्धिबुद्धिप्रदोऽसौ
विघ्नानां च विनाशो स्तुतिस्मृतिपटुः, ज्ञानबोधाय तत्वं देवानां च वन्दे सकलश्रुतकरं पातकैर्व्याधि ना......

End:

एषु सर्व तदर्थ स्यात्, तदर्थं रूपपातके दद्यापापेषु कष्टेषु कल्पं

व्याधि बलाबलं....

R.No. 9666

Foll. 22; lines 7 in a page; Devanāgari; good; extent 210 letters in a page.

वारुणिमण्डलपूजा

VĀRUṆIMAṆḌALAPŪJĀ

Complete.

(R.No. 9667, 9668 one bundle)

R.No. 9667

Paper 28x12cms; foll. 15; lines 8 in a page; Devanāgari; good; extent 280 letters in a page.

चण्डीटीका

CAṆḌĪṬĪKĀ

Incomplete.

Ptd.

R.No. 9668

Foll. 20; lines 8 in a page; Devanāgari; good; extent 280 letters in a page.

सिद्धान्तचन्द्रिका

SIDDHĀNTACANDRIKĀ

Begins on 16a of R9667

Incomplete.

R.No. 9669

Paper 29x12cms; foll. 26; lines 8 in a page; Devanagari; good; extent 320 letters in a page.

कात्यायनसूत्रस्नानविधिः

KĀTYĀYANASŪTRASNĀNAVIDHIḤ

A work on Suklayajurveda Prayoga by Harihara.
Complete.
Ptd.

(R 9670 to R 9673 one bundle)

R.No. 9670

Paper 20x13cms; foll. 4; lines 10; Devanāgari; good; 400 letters.

सदाचारदर्पणम्

SADĀCĀRADARPAṆAM
Incomplete.
Ptd.

R.No. 9671

Foll. 2; lines 11; Devanāgari; 440 letters.

वसन्तोत्सवम्

VASANTOTSAVAM

A portion from Viṣṇudharmottara which describes the splendour of spring festival.

Begins on 5b of R 9670.

R.No. 9672

Foll. 10; lines 8; Devanagari; good; extent 240 letters.

वकुलोपाख्यानम्

VAKULOPĀKHYĀNAM

The story of Vakula a cow, who attained salvation, narrated by Janamejaya, retold from Bhavisyapurana.

Begins on 7b of R 9670.

Beginning:

मधुरास्त्रिपुरी रम्या सिद्धगन्धर्वसेविता ।
यमुनापुलिने रम्ये सर्वरत्नोपशोभिता ।।

तत्र स्थितो महाराज जनमेजय इति श्रुत:।
दुष्ट: पुष्टश्च सर्वज्ञ: पप्रच्छ मुनिसत्तमम् ।।
जनमेजय उवाच ।
सम्पूर्ण भारतं चैव कथितं तु ममाग्रत:।
वकुला नाम या धेनु: कथं स्वर्गमगाच्च सा ।।
End:
इति श्रीभविष्यपुराणे इतिहाससमुच्चये भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे वकुलोपाख्यानं समाप्तम्।

R.No. 9673

Foll. 26; lines 9; extent 270 letters.

दर्शशान्ति:

DARŚAŚĀNTIḤ

Complete.

Begins on 17a of R 9670.

R.No. 9674

Paper 30x13cms; foll. 14; lines 10; Devanāgari; good; 350 letters.

सद्वैद्यजीवनटिप्पणम् - लोलम्बकृतम्

SADVAIDYAJĪVANAṬIPPAṆAM

Incomplete.

Similar to the work described under R 2221

R.No. 9675

Paper 30x13cms; foll. 9; lines 8; Devanāgari; good; extent 450 letters.

नृसिंहचम्पूः

NṚSIMHACAMPŪḤ

A Campūkavya on the glory of Lord Nṛsimha by Bhaṭṭakeśava.
Ptd.

R.No. 9676, 9677 one bundle

R.No. 9676

Paper 30x13cms; foll. 4; lines 10; good; 500 letters.

सन्ध्याभाष्यम्

SANDHYĀBHĀṢYAM

Complete.

Ptd.

R.No. 9677

Foll. 11; lines 13; 520 letters.

जातिविवेकसङ्ग्रहः - विश्वनाथपण्डितः

JĀTIVIVEKASAṄGRAHAḤ - BY VIŚVANĀTHAPAṆḌITA

Begins on 5a of Ms. No. R 9676

Complete.

R.No. 9678 - R 9711 source

Purchased from Sri Jagadish Mittal C/o K.C. Agarwala, Assistant Engineer, P.W.D. Bulandasahar, U.P.

R.No. 9678

Paper 33.5x13cms; folio. 100; 20 lines; 42 letters; 450 granthas; Devanāgari; Fair; Incomplete.

धर्मसिन्धुसारः

DHARMASINDHUSĀRAḤ

The text begins with third Paricheda of Uttarardha. Contains index of the whole text in the beginning 5 folios.

Beginning:

ओं श्रीगणेशाय नमः। श्रीगुरुचरणाभ्यां नमः।
"श्रीरुक्मिणीपाण्डुरंगं प्रणम्य पितरौ गुरून् तृतीयछेदोत्तरार्धं तनोमि श्रीशतुष्टये ।

श्रीनाथः करुणासिंधुरिन्दिराशङ्करः सती
विघ्नेशो भास्करेन्द्राद्या विघ्नान् सदैव मे ।
तत्र तावच्छ्राद्धादि निर्णयं वक्तुमाधिकारि निर्णयाय
जीवत् पितृकाधिकारो विविच्यते पादुकेचोत्तरीयं
च तर्जन्यं रुप्यधारणम् । न जीवन्पितृकः कुर्यात् ज्येष्टभ्रातरि जीवति।

End:

इति कलौ कार्याकार्यनिर्णयः। अथ स्वप्नविचारः। स्वप्नो द्विविधः। इष्टफलोऽनिष्टफलश्चेति। तत्र सामान्यत इष्टफले यथा।

"नदीसमुद्रतरणमाकाशगमनं तथा गृहनक्षत्रमार्तं चन्द्रमण्डलदर्शनम्।
हर्म्यस्यारोहणं चैव प्रासादशिरसोऽपि वा ।
स्वप्ने च मदिरापानं वसामांसस्य भक्षणम्।

R.No. 9679

Paper 34x11.5cms; pages 112; lines 3 ina page; Devanagari; good; 2250 granthas. Incomplete.

कविकल्पलताटीका

KAVIKALPAATHATIKA BY MAHADEVABHATTA

Kavikalpalata is a work on the art of poetical compoisition composed by Deveswarakavi, son of Vāgbhata, the Prime Minister of the king Malva.

The commentary is written by Mahadeva Batta Pattavardhana Contains 4 Shabakas, wants beginning and end, breaks off in 4th sthabaka.

Beginning:

कारंको हस्तिपञ्जरः, कुट्टः-पक्षिभेदः, परिणाहो-विशालता .. ..हादेवगापप्पनः मंजीरो....परं मार कामः कवसोग्रासः जार उपपत्तिः.....

... .

अभिषिषेच-अभिषेकं कृतवान्। षिच् क्षरणे अभिपूर्वाल्लिटि रूपं। भावद्दशो भवत्सद्दशानां, दारुणं-घोरं, दुरितं-पापं....

... ...

Colophon:

इति कविकल्पलतायां चतुर्थस्तबके समस्यापूरणाख्यं षष्टकुसु(म) प्रञ्चाख्ये... वर्धमानमहादेव विशदीकृतेति।

End:

किं विधा संध्या अपि रामाणि वायसां-पक्षिणो धामानिगृहाणि. ..पङ्क्ते अभिरामं-सुन्दरं-पद्मपत्राहरतस्य धाम-गृह, अथवा,वयसः धामयस्मिन्-अजहल्लिङ्ग.त्वेन विशेषणविधः।

R.No. 9680

Paper 30x12cms; 10 lines on a page; 96 pages; 1200 granthas; Devanāgari script; good.

सारसमुच्चयः

SĀRASAMUCCAYAḤ

This is work on veterinary medicine (Aswaivaidya) composed by Kilhana. son of Bilhana.

The first chapter contains a su mmary of the text in verse form. The chapters mainly deal with the treatment of various diseases of horses. Wants beginning and end.

Beginning:

न घोषहेषं सन्नाहिकास्वं धुरि पूजनीयम्।
सर्वैः शुभैर्लक्ष्मभिरेव युक्तं त्रंस्यंति शब्देन।

हि यस्य वाहा: सकृच्च मूत्रं विसृजंतीतिस्पंदेवाश्वमेवं विधिमेव पूज्यम्।

एणाक्षमेणीसमवेगमश्वमेणाजिनं हेमनिभं मनोज्ञम्

वायौ प्रचण्डंगमनात्सुकं च तं राज्यवाह्यं समरे च वश्यम्।

Colophon:

इति बिल्हणसुतकिल्हणकृत सारसमुच्चये व्यानचिकित्सा।

End:

इति नेत्ररोगाचिकित्सा। दोषै: सरक्तै: कुपितैस्तुके केचिद्व्रणास्तुचागंतु।

R.No. 9681

Paper 30x12cms; 9 pages; lines 12 in a page; Devanagari; good; 1200 granthas.

राधाविनोदकाव्यम् - सटीकम्

RADHAVINODAKAVYAM With Commentary By RAMACHANDRA

This is a work which deals with the story of Bhāgavata. This is a yamakakavya composed by Ramachandra. Commentary is provided by Narayana. Ramachandra is the son of Janardana and grandson of Purusottama.

Complete in 20 slokas.

Beginning:

श्रीगणेशाय नम:। अद्य राधविनोदकाव्यं लिख्यते।

पितृवचनमवश्यमेवपाल्यं जगति जनैरिति शासितुं वनांतम्।

गतमिव कारुणरसाद्र। चित्रं

रघुमपि।कंचिदुपास्महे शशीतनम्।

रंगनाथं जगन्नाथंनारायणमनीषिणा

राधाविनोदकाव्यस्य व्याख्या यपिस्यते (भिशस्यते?)

राधाविनोदकाव्यच्चिकीर्षु: विघ्नध्वंसकामो रामचन्द्रकवि:

परमेश्वरकर्तृकस्वसंरक्षणार्थं रासवरूपमङ्ग.लं आचरति।

वनमालावनमालीं आर्यदलं विनिमाला...जगदीश्वरः।

मालिनो वनमाली मालिनो वनमाली

मालिनो वनमालीमालिनोऽवतु शाली।।

नो-अस्मान्, श्रोतृत्वात्, अवतु-रक्षतु। कीदृशः। मा लक्ष्मीः

Colophon:

रामचन्द्रकविना कविनादः पुरुषोत्तमसुतेन सुतेन।

राधिकाहृदयशोकदमासीत् राधिकाहृदयशोकदमासीत् ।।

End:

राधिकाहृदयशोकं द्यति-खण्डयति, तत्तादृशमदः।

काव्यं कविना पंडितेन रामचन्द्रेण असीतेनात्पादिनत्मित्यर्थः

... ...

इति रामचन्द्रकाविनाथविरचितं राधाविनोदकाव्यं सटीकं संपूर्णम्।

R.No. 9682

Paper 33x12cms; 18 pages; 13 lines; No. of granthas 3500; Devanāgari; Fair; Incomplete.

छन्दःकौस्तुभः-भाष्यसहितः

CHHANDAḤKAUSTUBHAḤ With Commentary

Contains 1-4 Prabha, and beginning portion of 5th Prabha. Same work as described under R 4509. Published library bulletin (Vol. XI) author - Radhadamodara, Commentary by Vidyabhuṣana.

R.No. 9683

30x15cms paper; 20 pages; 14 lines in a page; 5400 granthas; Devanāgari; good.

ज्योतिर्निबन्धसर्वस्वः

JYOTIRNIBANDHA SARVASVAḤ

A work an astrology. Author is Sivadasa.

Incomplete. Wants beginning and ending.

Beginning:

विजौषधामिषेकादिध्रुवकर्म प्रदर्श्यते।
चरेतु गजगोऽश्वादि दमनं सेतुबन्धनम्।।
प्रयाणारामकर्म्मं च चरकर्मरताहवम् ।।28।।
क्रूरक्षैर्विषनद्यादि कुर्यादुग्रं च सिद्धये
मिश्रर्क्षयो: प्रकुर्वीत यत्क्रूरैर्दारुणै: स्मृतम् ।।29।।

Colophon:

इति श्रीशिवदासनिर्मिते ज्योतिर्निबन्धसर्वस्वे यात्रा प्रकरणं स्फुटम्।

End:

इति तिथिप्रशस्ते संस्थाने कर्मणि वासरश्च कर्त्तु दिनेशस्य फलं सदैवग्रामधिपं ग्रामवलं विचार्टर्य हस्तत्रये च ...

R.No. 9684

Paper 28x16cms; 130 pages; 2300 granthas; Devanāgari; good.

षोडशनित्यातन्त्र:

SODAŚANITYĀTANTRAḤ

This is a Tāntric work in 18 chapters called Patalas, 18th Patala abruptly ends.

Incomplete.

Beginning:

ओं नमो महागणपतये अनादिशक्तयै नम:।
अनाद्यंतोपराधीन: स्वाधीनभुवनत्रय: जयत्यविरतो व्याप्तविश्व: कालो विनायक: ।1। भगवन् सर्वतन्त्राणि भवतोक्तानिमे... नित्यानां त्रैपुराणां च नवतंत्राणि कृत्स्नश: ।2।

....

Colophon:

इति षोडशनित्यातन्त्रे कादिमते प्रथम: पटल:

......

Ending:

चक्रैर्मूर्तौ तथाशिष्ये प्रतिष्ठाः त्रिविधोव्यत् इति वचनात् 1, प्रतिष्टानिधिपत्राणि 2 नाथपूजानिधिपत्राणि। 3, विषनित्यक्रमनिधि 4, संक्षेपपूजानिधि 5, लघुपूजानिधि पत्राणि।6 महाचक्रमध्यश्रीचक्रार्चानिधिपत्राणि।7

R.No. 9685

Paper 26x14cms; 14 pages; 200 granthas; Devanāgari; good.

शुकाष्टकव्याख्यानम्

ŚUKĀṢTAKAVYĀKHYĀṆAM BY GANGADHARENDRA SARASWATI

This work deals with Advaita Vedanta by Gangadharendra Saraswathi, the desciple of Ramachandra Saraswathi.

Complete.

Beginning:

श्रीगणेशाय नमः।

आनन्दसिन्धुमजमक्षरमद्वितीय-
मात्मानमच्युतशिवं स्वगुरुं प्रणम्य।
कुर्वे समस्तजननिर्वृतिसौख्यसिद्ध्यै
श्रीमच्छुकाष्टसरोजविबोधभानुम्।।

Colophon:

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीरामचन्द्रसरस्वती पूज्यपादशिष्य गङ्ग.ाधरेन्द्रसरस्वत्याख्या भिक्षुणा कृतं शुकाष्टकव्याख्यानं सम्पूर्णम्।

End:

सं 1676 आढप्रविष्ट 23 गुरुवासरे महाआषाड शुक्लषट्ययां तिथौ लिखितमिदं पुस्तकं पुरोहित शिवशङ्क.रेण शुभम् लवपुरे।

R.No. 9686

Paper 26x14cms; 1 page; 80 granthas; Devanagari; good; complete.

षड्पदीस्तोत्रम्

ṢAḌPADĪSTOTRAM

Six stanzas invocating Lord Govinda. Starts on folio 8b of R 3837.

Beginning:

श्रीगणेशाय नमः।

अविनयमपनयविक्षोदमयमना समयविषयरस तृष्णाम्।।

भूतदयाविस्मारय तारय संसारसागरतः।

Colophon:

इति षड्पदीस्तोत्रम्

End:

ओं नमो नारायणाय। आरतिमंत्रः। रूपं देहीति मन्त्रेण नेत्रद्वयोःस्पर्शः।। रामः ।।

R.No. 9687

Paper 25x14cms; 14 pages; 300 granthas; Devanāgari; good; extent 9a-24a.

कर्पूरधेनुदानपद्धतिः

KARPŪRADHENU DĀNAPADDHATI

Begins on 9a of R 3837. This is a Prayoga work which describes the Karpuradhenu Dānapaddhati of Prāyaśchittas.

Complete.

Beginning:

ओ। श्रीगणेशायनमः। अथ कर्पूरकस्तूर्यादिधेनुदानविधिः। तीर्थेनदीतेरे विष्णवालये तडागसमीपे आरामे कूपसमीपे गृहे वा यज्ञार्थं शुचिं देशं परिकल्प्य, तत्र यागमंडपवेदीतोरणादिकं तुलापुरुषदानोक्तरीत्या रचयेत्।

End:

ततो यजमानस्तान्विप्रान् भोजयित्वा स्वयं पायसान्नं भुंजीयादिति शिवम्। इति कर्पूरधेनुदानपद्धतिः। एवं लवणधेनुकार्पसधेनुदाना-विधिः।

Page No: 24b, 25a, 25b are left blank.

R.No. 9688

Paper 26x14cms; 200 granthas; Devanāgari; good; Complete.

सुवर्णधेनुदानपद्धति

SUVARṆA DHENUDĀNAPADDHATI

Begins on 25b of R 3837.
Incomplete.
Beginning: Folios 25b - 34b.

अथ पादप्रस्वेदघ्नसुवर्णधेनुदानप्रयोगः। वायुपुराणे प्रस्विन्न-पाधिपादस्यो ... हरेत रसादिकम्। वक्ष्यामि तत् प्रतीकारं दानहोमादिकर्मण।।

End:

ततो यजमानो ब्रह्मणे पूर्णपात्रादिदक्षिणां दत्वा होतृभ्यो जापकेभ्यो पाठकेभ्यश्च आचार्याय तंत्र धारकाय गोभूसुवर्णानि दक्षिणां दत्वा अन्येभ्यो भूयांसि शय्यादानानि च दत्वा...ब्राह्मणभोजनं कारयित्वातोषयेत्। तत आचार्यः पूजितदेवगणान् विसर्जयेत्।

R.No. 9689

Paper 26x14cms; folio 14; lines 10 in a page; Devanāgari; good; 150 granthas.

सुवर्णधेनुरेकादशी

SUVARṆADHENU REKADAŚĪ

Complete. Folio (1b- 14b).
Beginning:

ओं श्री गणेशाय नमः। अथ सुवर्णधेनुदानविधिः। तत्र **प्रथमं** कालविचारः। अयने विषवे पुण्ये व्यतीपाते दिनक्षये।

End:

ततो यजमानस्तान् विप्रान् भोजयित्वा स्वयं पायसान्नं भुंजीयादिति शिवम्। इति सुवर्णधेनु दानविधिः।

R.No. 9690

Paper 24x16cms; fols. 30; lines 20 in a page; Devanagari; good; 300 granthas.

प्रमेहघ्नसुवर्णधेनुद्वादशी

PRAMEHAGHNASUVARṆADHENUDVĀDASĪ

Complete; begins on 14b of R. 9689.

This is a portion of Prāyaścittapaddhathi, which describes the Danaviddhi of Suvarṇadhenu to cure diabetics with reference to Vahṇipuraṇa.

Beginning:

ओं श्रीगणेशाय नमः। अथ प्रमेहघ्नसुवर्णधेनु दानविधिः।

... ...

अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं अपाहूं रेताहूं सिजिन्वति।

The concluding stanza also describes about Arśoghnisuvarṇadhenudāna and Vandhyatvahara suvarṇadhenudāna.

R.No. 9691

Paper 26x14cms; foll. 3; lines 10 in a page; Devanagari; good; 60 granthas.

क्षीरधेनुदानपद्धतिः

KSHĪRADHENUDĀNAPADDHATI

Complete.

R.No. 9692

दानपद्धति
DĀNAPADDHATI

R.No. 9693

छायादानविधि:
CHĀYĀDĀNAVIDHI

R.No. 9694

Paper 29x11cms; 48 folios; lines 8 in a page; Devanāgari; good; 500 granthas.

कार्तिकमासदानादिमहिमा:
KARTIKAMASADĀNĀDIMAHIMA

Beginning:

श्रीगणेशाय नमः। गुरवे नमः। अथ कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां दीपदानम्, तत्र गङ्ग.ावाहनादिकं कृत्वा गणेशपूजनं कृत्वा, दीपं प्रज्वाल्य एतन्नेदेवेति प्रतिष्टां कृत्वा शुभमवत्त्विति मन्त्रेण संप्रार्थ्य....

End:

तिलास्वर्णसमायुक्ता दुश्तिक्षयकारका: विष्णुप्रीतिकरा नित्यं अत: शान्तिं प्रयच्छ मे। स्पर्शात्तम् इति तिलसुवर्णदानम्।

R.No. 9695

Paper 29x11cms; 6 folios; 7 lines in a page; Devanāgari; good; 40 granthas.

भूमिदानरहस्य:
BHŪMIDĀNARAHASYA

Incomplete.

Describes about the significance of giving land as alm; wants the beginning.

Beginning:

..माणिरत्नं व वासव। सर्वमेतद्भवेदत्र वसुधां यः प्रयच्छति।

End:

दीपालोकप्रदानेन आयुष्मांस्तु भवेन्नरः।

प्रेक्षणीयप्रदानेन स्मृतिं मेधां ....

R.No. 9696

Paper 32x13cms; lines 10 on a page; Devanāgari; good; No. of granthas 98 folios; 1500 granthas.

तत्वचिन्तामणिदीधिति - महिमा

TATTVACINTĀMAṆI DĪDHITI - MAHIMA

A treatise on Nyāya.

Incomplete.

The beginning folio is broken.

Beginning:

....प्रणतिनिवह....। प्रायेयेतः।

कलुषितमिदं दोषमूलैः कुतर्कैर्भक्तिं दत्वा...

...तीनां लीलारसेन महिमानमिमां तनोति।

End:

समवायस्य इत्यन्वयत्व इत्यत्वाभवाधिकरणीयत्वोभयस्य सत्वात्।

एक एव हि इत्यत्वगुणत्वयो सम.....

R.No. 9697

Paper 29x15cms; 14 lines in a page; 82 pages; Devanagari; good; No.of granthas 1300.

सारस्वतव्याकरणम्

SĀRASWATA VYĀKARAṆA WITH COMMENTARY

An old system of Samskrta grammar. This is one among the nine systems of Sanskrit grammar.

Begins with Dhatvadhikara. The name of the commentator is not given.

Beginning:

ओं श्रीगणेशाय नमः। अथ धात्वधिकारः।

पदसञ्ज्ञायां स्यादिस्त्यादिश्चेति द्विधा विभक्तिरुक्ता। तत्र स्यादिं निरुप्याधुना वादिं निरूपयितुकाम आह। अथेऽति

End:

भावे कर्मणि चेऽति सेरपवाद इति तद्विषय एवारभ्यमाणत्वात् लोपः। तनोति सप्तम्यंतमपि पूर्वसूत्रादनुवर्तमानमादेशापेक्षया... ते स्यादित्याह। तनो लोप इति।

R.No. 9698 - 9700 one bundle.

R.No. 9698

Paper 30x14cms; 23 pages; lines 11 in a page; Devanāgari; good; 300 granthas.

लिङ्ग.दुर्गभेदनाटकम्

LINGADURGABHEDANĀṬAKAM

An allegorical drama in five acts by Paramananda or Dadambhaṭṭa

Incomplete.

Wants the beginning of IInd Anka.

Beginning:

इतः प्रबोधं प्रतिबोधोहमपि रामं योजयामीति निष्क्रान्तः।
प्रबोधः - (परमानन्दहस्तेन चालयति)....

Colophon:

इतिलिंगदुर्गभेदे...परमानन्दविरचिते विष्णुभक्तिसङ्गमो नाम तृतीयोऽङ्क.ः।

ततःप्रविशति वस्तुविचारः। आदिष्टोऽस्मि भगवत्या विष्णुभक्ताय यथायं परमानन्दः।

End:

भरतवाक्यम्।

विनक्षेत्राणि नित्यप्रमुखकृतिभाराः कर्षणै शोधयंतु श्रीरामोपास्तिकांडं रचयतु समतांसवतस्तेषु नित्यमृतन्मोहावग्रह त्रीप्रभमुपनिषन्मेघ-लोख्योक्तिवर्षैः सिंचंती तत्र विद्याङ्कर फलजननी स्यान्मुदेसज्जनः।

तां मनोविनोदनायैव मनोराज्यं मया कृतम्

तनोतु जानकीजानिस्तनोर्जनिस प्रापणम्।।

इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।

इति श्रीपरमानन्दापरनाम्ना दादंभट्टेन विरचिते लिङ्ग.दुर्गभेदाह्वये नाटके सोहंवृत्ति लाभोनाम पञ्चमोऽङ्क.:। शुभमस्तु

R.No. 9699

12 pages; lines 12 in a page; Devanāgari; good; 180 granthas.

नारीशौचकौमुदी - महानन्दः

NĀRĪŚAUCAKAUMUDĪ BY MAHANANDA

This is a portion of Dharmaśastra. Complete.

The author Mohananda is the son of Jayadevapandita.

Beginning:

श्रीगणेशाय नमः।

नत्वा देव यथाध्वगान्मुनिगणान्मन्वादि कानन्वहम्।

आख्याध्तनपि सम्प्रदायरसिकास्तद्धर्ममार्गस्थिता

निर्णेतु जननाद्यशौचमखिलं तस्य प्रसङ्गादहम्

नारीणामृतुजन्मनिर्णयमथ प्रस्तौमि..कांक्षिणाम्

End:

इति श्रीमज्जयदेवपंडितात्मज श्रीलक्ष्मीधरपंडितजन्मना महानन्देन

कृतं नारीरजोदर्शन पुत्रजननाद्याशौच कौशलं नाम सम्पूर्णम्।
Scribe's name:
लिखितमिदं पुस्तकम् हरिनंदनेन।

R.No. 9700

10 pages; lines 10 on a page; Devanāgari; good; 130 granthas.
कात्यायनतन्त्रप्रयोग:
KATYĀYANA TANTRA PRAYOGA
Taken from Saptaśati Stotra.
Complete. Starts on 19a.
Beginning:
ओं श्रीगणेशाय नमः। अथ प्रसङ्गात्सप्तशतीस्तोत्रान्तार्गतानां केषांचित् मन्त्राणां वक्ष्यमाणतन्त्रोक्त फलकानामनुष्टानमुच्यन्ते तत्राद्येत्यादि विशिष्ट कालमुल्लिख्य, ममातिप्रबलवैरिविनाशनार्थं एवमुक्तेन्यस्य मंत्रस्थानुष्टानं करिष्ये।
End:
एकोनपञ्चाशदिनं कार्यमिति कोडतन्त्रस्था:
कात्यायनीतंत्रस्य प्रयोग: इति संक्षेपतो प्रयोगविधि: समाप्त:।

R.No. 9701

Paper 18x12cms; foll. 34; lines 10 on a page; Devanagari; good; extent 250 granthas.
सुमुखीपूजाविधानम्
SUMUKHĪ PŪJĀVIDHĀNAM
Incomplete.
Beginning:
ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः। श्री देव्यै नमः। अथ श्रीसुमुखीदेवी साधनापञ्चाङ्गपूजा लिख्यते। श्री भैरव उवाच।

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
सुमुखीनित्यपूजाया: सारात्सारोत्तमोत्तमम्।।

End:

ऐं क्रीं ह्रीं पं परमेष्टिगुरुभ्यो नमः। इतिरेखाकोणं सम्पूज्य। अथ षोडशदलं पूजयेत्। ऐं क्रीं ह्रीं मातङ्गी. ...

R.No. 9702

Paper 18x10cms; foll. 17; lines 10 on a page; Devanāgari; slightly injured; extent 150 granthas.

शान्तिध्यानम्

ŚĀNTI DHYĀNAM

Incomplete.

Beginning:

श्रीगणेशाय नमः। नन्दिकेश्वर उवाच।

अतः परमिदं गुह्यं रुद्रोद्गरतं महोदयम्।

महाविघ्नप्रशमनं महाशन्तिकरं शुभम्।।

End:

सद्भक्तिरताः सर्वे शन्तिं कुर्वन्तु मे सदा क्षीरोदः श्रीरोदश्चैव दह्योदघृतोदकः। .....

R.No. 9703

Paper, 21x10cms; foll. 28; lines 12 on a page; Devanāgari; good; extent 700 granthas.

मिश्रितमाहात्म्यम्

MIŚRITA MĀHĀTMYAM

This is taken from Skandapurāṇa. Wants the beginning; otherwise Complete.

Beginning:

....शोचन्त्यशमास्थिताः, विदित्वैवं भवान् तस्मात्र क्षेत्रं सक्तुमर्हसि।

End:

अनूपम मनोहारि सर्वेषां मुक्तिदं नृणाम्

पठेदापाठभेदापि सर्वपापै प्रमुच्यते।

इति श्रीस्कन्दपुराणे उमामहेश्वर संवादे मिश्रितमाहात्म्ये

द्वादशोऽध्यायः। समाप्तः।

शुभं भूयात्।

संवत् 1893 फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्यां भृगुवासरे

(R.No. 9704, 9705 one bundle)

R.No. 9704

Paper 20x11cms; foll. 12; lines 9 on a page; Devanāgari; good; extent 110 granthas.

मङ्गलपूजाविधिः

MANGALAPŪJĀVIDHI

Complete.

Beginning:

ओं श्रीगणेशाय नमः। अथ मङ्गलपूजाविधिः। पूजास्थाने पीठोपरि एकविंशतिकोष्टात्मकं यन्त्रं संस्थाप्याचम्य प्राणानाचम्य।

End:

इति मङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम्। मन्त्रः, ऊँ नमो मङ्गलाय। ओं क्रीं मंगलाय ऋणमोचनं कुरु कुरु सर्वमनोरथान् साधय साधय स्वाहा। इति भौम मन्त्रौ।

The last folio of the work illustrates the diagram of the Bhoumamantra.

R.No. 9705

Foll. 34; lines 8 on a page; Devanāgiri; good; extent 200 granthas.

शतचण्डीविधानम्

ŚATACANDĪ VIDHĀNAM

Details connected with the worship of Devī.

Beginning:

Begins on 7a.

ओं श्रीगणेशाय नमः। अथ शतचण्डीविधिः।

शङ्करस्य भवान्या वा प्रासादनिकटे शुभम्

मण्डपाद्वारवेदाढ्यं कुर्यात्स ध्वजतोरणाम्।।

End:

प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषि:। महाकाली देवता। गायत्री छन्द:, नन्दा शक्ति:,रक्तदन्तिका बीजम्। अग्निस्तत्वं ऋग्वेदस्वरूपम् श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थं प्रथमचरित्रजपे विनियोग:। खड्ग.चक्रगदेषु चापपरिघान् शूलंभुशुण्डीशिर: शङ्ख संदधतीं करै स्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् नीशाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकाम् यामस्तौ त्स्वपित्रे हरौ कमलजो हन्तु मधुकैटभम्। श्रीरस्तु भूयात् शुभम्। कल्याणमस्तु भूयात्।

R.No. 9706

Paper 15x11cms; foll. 79; lines 8 on a page; Devanāgari; slightly injured; extent 300 granthas.

वटुकभैरवकल्प:

VATUKABHAIRAVAKALPA

Complete.

Beginning:

ओं स्वस्तिश्रीगणेशाय नम:। अथ वटुकपञ्चाङ्गं. लिख्यते। ओं ब्राह्मे महूर्ते शयतलादुत्थाय करचरणौ प्रक्षाल्य स्वशिरसि सहस्रदलकमलकर्जिकां ....

End:

इति श्रीक्षेत्रपालस्तोत्रं सम्पूर्णम्। समाप्त:।

Scribe adds:

श्रीसंवते 87 आषाढ अ 4 लिखितं ओं पूरनानंदो (पूर्णानन्दो)

R.No. 9707

Paper 15.5x13cms; foll. 36; lines 9 on a page; Devanāgari; slightly injured; extent 175 granthas.

कन्यादानपद्धति:

KANYĀDĀNA PADDHATI

Complete. In the concluding part. Vadhīvaramangalāṣṭaka is found which is incomplete.

Beginning:

ओं श्रीगणेशाय नमः। अश्या । विवाहपद्धति लिखितम्। तत्रादौ कन्याहस्तेन षोडशहस्तमंडपं कृत्वा तदक्षिणा दिशि।

End:

इति विवाहलग्नं सम्पूर्णम् । शुभम्

R.No. 9708

Paper 21x13cms; 14 foll.; lines 20 on a page; Devanāgari; good; extent 120 granthas.

नक्षत्रनामानि

NAKṢATRANĀMĀNI

Beginning: Fol. 5 is left blank.

श्री गणेशायनमः

श्रीः दिनमणिं चन्दकुजगुरुभृगुशनि सैंहिकेय। केतूं च नत्वा संतनुतेत्र मृहूर्तनिधिनामकं स्वल्पम्।

Ends with a chart of Karaṇacakra.

Printed by : Saidapet Women Artisans Leather Footwear, Rexine, Stationery & Printing, Educational, Tyre & Allied Products Industrial Co-operative Society ltd.

Chennai- 600 033